सम्पादकीय निवेदन

'वेदः शिवः शिवो वेदः' वेद शिव हैं और शिव वेद हैं अर्थात् शिव वेदस्वरूप हैं। यह भी कहा है कि वेद नारायणका साक्षात् स्वरूप है—'वेदो नारायणः साक्षात् स्वयम्भूरिति शुश्रुम'। इसके साथ ही वेदको परमात्मप्रभुका निःश्वास कहा गया है। इसीलिये भारतीय संस्कृतिमें वेदकी अनुपम महिमा है। जैसे ईश्वर अनादि-अपौरुषेय हैं, उसी प्रकार वेद भी सनातन जगत्में अनादि-अपौरुषेय माने जाते हैं। इसीलिये वेद-मन्त्रोंके द्वारा शिवजीका पूजन, अभिषेक, यज्ञ और जप आदि किया जाता है।

'शिव' और 'रुद्र' ब्रह्मके ही पर्यायवाची शब्द हैं। शिवको रुद्र इसलिये कहा जाता है—ये 'रुत्' अर्थात् दुःखको विनष्ट कर देते हैं—'रुतम्—दुःखम्, द्रावयति—नाशयतीति रुद्रः।'

रुद्र भगवान्की श्रेष्ठताके विषयमें रुद्रहृदयोपनिषद्में इस प्रकार लिखा है—

सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवाः शिवात्मकाः।
रुद्रात्प्रवर्तते बीजं बीजयोनिर्जनार्दनः। यो रुद्रः स स्वयं ब्रह्मा यो ब्रह्मा स हुताशनः॥
ब्रह्मविष्णुमयो रुद्र अग्नीषोमात्मकं जगत्॥

—इस प्रमाणके अनुसार यह सिद्ध होता है कि रुद्र ही मूलप्रकृति-पुरुषमय आदिदेव साकार ब्रह्म हैं। वेदविहित यज्ञपुरुष स्वयम्भू रुद्र हैं।

इसीसे भगवान् रुद्र (साम्ब सदाशिव)-की उपासनाके निमित्त 'रुद्राष्टाध्यायी' ग्रन्थ वेदका ही सारभूत संग्रह है। जिस प्रकार दूधसे मक्खन निकाल लिया जाता है, उसी प्रकार जनकल्याणार्थ शुक्लयजुर्वेदसे रुद्राष्टाध्यायीका भी संग्रह हुआ है। इस ग्रन्थमें गृहस्थधर्म, राजधर्म, ज्ञान-वैराग्य, शान्ति, ईश्वरस्तुति आदि अनेक सर्वोत्तम विषयोंका वर्णन है।

मनुष्यका मन विषयलोलुप होकर अधोगतिको प्राप्त न हो और व्यक्ति अपनी चित्तवृत्तियोंको स्वच्छ रख सके—इसके निमित्त रुद्रका अनुष्ठान करना मुख्य और उत्कृष्ट साधन है। यह रुद्रानुष्ठान प्रवृत्ति-मार्गसे निवृत्ति-मार्गको प्राप्त करानेमें समर्थ है।

इस ग्रन्थमें ब्रह्मके निर्गुण एवं सगुण—दोनों रूपोंका वर्णन हुआ है। जहाँ लोकमें इसके जप, पाठ तथा अभिषेक आदि साधनोंसे भगवद्भक्ति, शान्ति, पुत्र-पौत्रादिकी वृद्धि, धन-धान्यकी सम्पन्नता तथा सुन्दर स्वास्थ्यकी प्राप्ति होती है; वहीं परलोकमें सद्गति एवं परमपद (मोक्ष) भी प्राप्त होता है।

वेदके ब्राह्मण-ग्रन्थोंमें, उपनिषदोंमें, स्मृतियों और पुराणोंमें शिवार्चनके साथ 'रुद्राष्टाध्यायी' के पाठ, जप, रुद्राभिषेक आदिकी विशेष महिमाका वर्णन प्राप्त होता है।

Ganesh ji
Ganpati bappa moraya

वायुपुराणमें लिखा है—

यश्च सागरपर्यन्तां सशैलवनकाननाम्। सर्वान्नात्मगुणोपेतां सुवृक्षजलशोभिताम्॥
दद्यात् काञ्चनसंयुक्तां भूमिं चौषधिसंयुताम्। तस्मादप्यधिकं तस्य सकृद्रुद्रजपाद्भवेत्॥
यश्च रुद्रांञ्जपेन्नित्यं ध्यायमानो महेश्वरम्। स तेनैव च देहेन रुद्रः सञ्जायते ध्रुवम्॥

अर्थात् जो व्यक्ति समुद्रपर्यन्त वन, पर्वत, जल एवं वृक्षोंसे युक्त तथा श्रेष्ठ गुणोंसे युक्त ऐसी पृथ्वीका दान करता है, जो धन-धान्य, सुवर्ण और औषधियोंसे युक्त है, उससे भी अधिक पुण्य एक बारके 'रुद्रीजप' एवं 'रुद्राभिषेक'-का है। इसलिये जो भगवान् रुद्रका ध्यान करके रुद्रीका पाठ करता है अथवा रुद्राभिषेक यज्ञ करता है, वह उसी देहसे निश्चित ही रुद्ररूप हो जाता है, इसमें संदेह नहीं है।

इस प्रकार साधन-पूजनकी दृष्टिसे 'रुद्राष्टाध्यायी' का विशेष महत्त्व है। बहुत दिनोंसे यह चर्चा चल रही थी कि गीताप्रेसद्वारा किसी वेदके ग्रन्थका समुचित प्रकाशन अभीतक नहीं हो सका है। इस बार निर्णय लिया गया कि वेदका सारभूत ग्रन्थ 'रुद्राष्टाध्यायी' जो शिवपूजकों एवं द्विजमात्रके लिये अत्यन्त कल्याणकारी है, उसका सर्वप्रथम प्रकाशन किया जाय। अतः गीताप्रेसके द्वारा वेदके प्रकाशनका यह प्रथम प्रयास है।

प्रायः कुछ लोगोंमें यह धारणा है कि मूलरूपसे वेदमन्त्र पुण्यप्रदायक हैं, अतः इन मन्त्रोंका केवल पाठ और श्रवणमात्र

ही आवश्यक है। वेदार्थ एवं वेदके गम्भीर तत्त्वोंसे वे विद्वान् प्रायः अनभिज्ञ रहते हैं। वास्तवमें उनकी यह धारणा उचित नहीं है। वैदिक विद्वानोंको वेदके अर्थ एवं उनके तत्त्वोंसे पूर्णतः परिचित होना चाहिये। प्राचीन ग्रन्थोंमें भी वेदार्थ एवं वेद-तत्त्वार्थकी बड़ी महिमा गायी गयी है। निरुक्तकार कहते हैं कि जो वेद पढ़कर उसका अर्थ नहीं जानता, वह भारवाही पशुके समान है अथवा निर्जन वनके सुमधुर उस रसाल वृक्षके समान है, जो न स्वयं उस अमृतरसका आस्वादन करता है और न किसी अन्यको ही देता है। अतः वेदमन्त्रोंके अर्थका ज्ञाता पूर्णरूपसे कल्याणका भागी होता है—

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूदधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम्।
योऽर्थज्ञ इत् सकलं भद्रमश्नुते नाकमेति ज्ञानविधूतपाप्मा॥ (निरुक्त)

इन सब दृष्टियोंसे 'रुद्राष्टाध्यायी' का अर्थसहित प्रकाशन किया गया है। सर्वसाधारणके समझनेकी दृष्टिसे मन्त्रोंका सरल भावार्थ देनेका प्रयास किया गया है। सविधि पाठ एवं अनुष्ठान करनेकी दृष्टिसे प्रारम्भमें मन्त्रोंके विनियोग तथा अङ्गन्यास भी दिये गये हैं तथा अभिषेक और पाठके पूर्व शिवार्चनकी विधि और उसके प्रकारका भी यथासाध्य निरूपण करनेका प्रयास किया गया है। आशा है सुधीगण इससे लाभान्वित होंगे।

—राधेश्याम खेमका
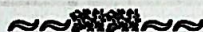
Dinesh mishra class Prathma I years

शुक्लयजुर्वेद-संहितामें रुद्राष्टाध्यायी एवं रुद्रमाहात्म्यका अवलोकन

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'—श्रीमनु महाराजके कथनानुसार भगवान् वेद सर्वधर्मोंके मूल हैं या सर्वधर्ममय हैं। वेदों एवं उनकी विभिन्न संहिताओंमें प्रकृतिके अनेक तत्त्वों—आकाश, जल, वायु, उषा, संध्या इत्यादिके तथा इन्द्र, सूर्य, सोम, रुद्र, विष्णु आदि देवोंके वर्णन और स्तुति-सूक्त प्राप्त होते हैं। इनमें कुछ ऋचाएँ निवृत्तिप्रधान एवं कुछ प्रवृत्तिप्रधान हैं। शुक्लयजुर्वेद-संहिताके अन्तर्गत 'रुद्राष्टाध्यायी'के रूपमें भगवान् रुद्रका विशद वर्णन निहित है। भक्तगण इस रुद्राष्टाध्यायीके मन्त्रपाठके साथ जल, दुग्ध, पञ्चामृत, आम्ररस, इक्षुरस, नारिकेलरस, गङ्गाजल आदिसे शिवलिङ्गका अभिषेक करते हैं।

शिवपुराणमें सनकादि ऋषियोंके प्रश्नपर स्वयं शिवजीने रुद्राष्टाध्यायीके मन्त्रोंद्वारा अभिषेकका माहात्म्य बतलाया है, भूरि-भूरि प्रशंसा की है और बड़ा फल बताया है। धर्मशास्त्रके विद्वानोंने रुद्राष्टाध्यायीके छः अङ्ग निश्चित किये हैं, तदनुसार रुद्राष्टाध्यायीके प्रथमाध्यायका शिवसङ्कल्पसूक्त हृदय है। द्वितीयाध्यायका पुरुषसूक्त सिर एवं उत्तरनारायणसूक्त शिखा है। तृतीयाध्यायका अप्रतिरथसूक्त कवच है, चतुर्थाध्यायका मैत्रसूक्त नेत्र है एवं पञ्चमाध्यायका शतरुद्रियसूक्त अस्त्र कहलाता है। जिस प्रकार एक योद्धा युद्धमें अपने अङ्गों एवं आयुधोंको सुसज्ज-सावधान करता है, उसी प्रकार अध्यात्ममार्गी साधक रुद्राष्टाध्यायीके पाठ एवं अभिषेकके लिये सुसज्ज होता है। अतः हृदय, सिर, शिखा, कवच, नेत्र, अस्त्र इत्यादि नामाभिधान दृष्टिगोचर होते हैं। रुद्राष्टाध्यायीके प्रत्येक अध्यायका किंचित् अवगाहन यहाँ प्रस्तुत है—

प्रथमाध्यायका प्रथम मन्त्र—**'गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे'** बहुत ही प्रसिद्ध है। कर्मकाण्डके विद्वान् इस मन्त्रका विनियोग श्रीगणेशजीके ध्यान-पूजनमें करते हैं। यह मन्त्र बृहस्पतिके लिये भी प्रयुक्त होता है। शुक्लयजुर्वेद-संहिताके

भाष्यकार श्रीउव्वटाचार्य एवं महीधराचार्यने इस मन्त्रका एक अर्थ अश्वमेधयज्ञके अश्वकी स्तुतिके रूपमें भी किया है।

द्वितीय एवं तृतीय मन्त्रमें गायत्री आदि वैदिक छन्दों तथा छन्दोंमें प्रयुक्त चरणोंका उल्लेख है। पाँचवें मन्त्र **'यज्जाग्रतो'**-से दशम मन्त्र **'सुषारथि'** पर्यन्तका मन्त्रसमूह 'शिवसङ्कल्पसूक्त' कहलाता है। इन मन्त्रोंका देवता 'मन' है। इन मन्त्रोंमें मनकी विशेषताएँ वर्णित हैं। प्रत्येक मन्त्रके अन्तमें **'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु'** पद आनेसे इसे 'शिवसङ्कल्पसूक्त' कहा गया है। साधकका मन शुभ विचारवाला हो, इसमें ऐसी प्रार्थना की गयी है। परम्परानुसार यह अध्याय श्रीगणेशजीका माना जाता है।

द्वितीयाध्यायमें **'सहस्रशीर्षा पुरुषः'** से **'यज्ञेन यज्ञम्'** पर्यन्त १६ मन्त्र पुरुषसूक्तके रूपमें हैं। इन मन्त्रोंके नारायण ऋषि हैं एवं विराट् पुरुष देवता हैं।

विविध देवपूजामें आवाहनसे मन्त्र-पुष्पाञ्जलितकका षोडशोपचार-पूजन प्रायः इन्हीं मन्त्रोंसे सम्पन्न होता है। विष्णुयागादि वैष्णवयज्ञोंमें भी पुरुषसूक्तके मन्त्रोंसे यज्ञ होता है।

पुरुषसूक्तके प्रथम मन्त्रमें विराट् पुरुषका अति भव्य-दिव्य वर्णन प्राप्त होता है। अनेक सिरोंवाले, अनेक आँखोंवाले, अनेक चरणोंवाले वे विराट् पुरुष समग्र ब्रह्माण्डमें व्याप्त होकर दस अंगुल ऊपर स्थित हैं।

द्वितीयाध्यायके १७वें मन्त्र **'अद्भ्यः सम्भृतः'** से **'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च'** अन्तिम मन्त्रपर्यन्त—ये ६ मन्त्र उत्तरनारायण सूक्तके रूपमें प्रसिद्ध हैं। **'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च'** यह मन्त्र श्रीलक्ष्मीदेवीके पूजनमें प्रयुक्त होता है। द्वितीयाध्याय भगवान् विष्णुका माना जाता है।

तृतीयाध्याय अप्रतिरथसूक्तके रूपमें ख्यात है। कतिपय मनीषी **'आशुः शिशानः'** से आरम्भ करके **'अमीषाञ्चित्तम्'** पर्यन्त द्वादश मन्त्रोंको स्वीकारते हैं। कुछ विद्वान् इन मन्त्रोंके उपरान्त **'अवसृष्टा'** से **'मर्माणि ते'** पर्यन्त ५ मन्त्रोंका भी समावेश करते हैं।

तृतीयाध्यायके देवता देवराज, इन्द्र हैं। इस अध्यायको अप्रतिरथसूक्त माननेका कारण कदाचित् यह है कि इन मन्त्रोंके

नत्रादौ

ऋषि अप्रतिरथ हैं। भावात्मक दृष्टिसे विचार करें तो अवगत होता है कि इन मन्त्रोंद्वारा इन्द्रकी उपासना करनेसे शत्रुओं-स्पर्धकोंका नाश होता है, अतः यह '**अप्रतिरथ**' नाम सार्थक प्रतीत होता है। उदाहरणके रूपमें प्रथम मन्त्रका अवलोकन करें—

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳसेना अजयत् साकमिन्द्रः॥

अर्थात् 'त्वरासे गति करके शत्रुओंका नाश करनेवाला, भयंकर वृषभकी तरह, सामना करनेवाले प्राणियोंको क्षुब्ध करके नाश करनेवाला, मेघकी तरह गर्जना करनेवाला, शत्रुओंका आवाहन करनेवाला, अति सावधान, अद्वितीय वीर, एकाकी पराक्रमी देवराज इन्द्र शतशः सेनाओंपर विजय प्राप्त करता है।'

चतुर्थाध्यायमें सप्तदश मन्त्र हैं। जो मैत्रसूक्तके रूपमें ज्ञात हैं। इन मन्त्रोंमें भगवान् मित्र—सूर्यकी स्तुति है। मैत्रसूक्तमें भगवान् भुवनभास्करका मनोरम वर्णन प्राप्त होता है—

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

अर्थात् रात्रिके समयमें अन्धकारमय तथा अन्तरिक्ष लोकमेंसे पुनः-पुनः उदीयमान, देवोंको तथा मनुष्योंको स्व-स्व कार्योंमें नियोजित करनेवाले, सबके प्रेरक, प्रकाशमान् भगवान् सूर्य सुवर्णरंगी रथमें बैठ करके सर्वभुवनोंके लोगोंकी पाप-पुण्यमयी प्रवृत्तियोंका निरीक्षण करते हैं।

रुद्राष्टाध्यायीके पाँचवें अध्यायमें ६६ मन्त्र हैं। यह अध्याय प्रधान है। विद्वान् इसको 'शतरुद्रिय' कहते हैं। '**शतसंख्याता रुद्रदेवता अस्येति शतरुद्रियम्।**' इन मन्त्रोंमें भगवान् रुद्रके शतशः रूप वर्णित हैं।

कई ग्रन्थोंमें शतरुद्रियके पाठका महत्त्व वर्णित है। कैवल्योपनिषद्में कहा गया है कि शतरुद्रियके अध्ययनसे मनुष्य अनेक पातकोंसे मुक्त होता है एवं पवित्र बनता है। जाबालोपनिषद्में ब्रह्मचारियों और श्रीयाज्ञवल्क्यजीके संवादमें ब्रह्मचारियोंने तत्त्वनिष्ठ

ऋषिसे पूछा कि किसके जपसे अमृतत्व प्राप्त होता है? तब ऋषिका प्रत्युत्तर था कि 'शतरुद्रियके जपसे'—'शतरुद्रियेणेति।'

विद्वानोंकी परम्पराके अनुसार पञ्चमाध्यायके एकादश आवर्तन और शेष अध्यायोंके एक आवर्तनके साथ अभिषेकसे एक 'रुद्र' या 'रुद्री' होती है। इसे 'एकादशिनी' भी कहते हैं। एकादश रुद्रीसे लघुरुद्र, एकादश लघुरुद्रसे महारुद्र एवं एकादश महारुद्रसे अतिरुद्रका अनुष्ठान होता है। इन सबका अभिषेकात्मक, पाठात्मक एवं होमात्मक त्रिविध विधान मिलता है। मन्त्रोंके क्रमसे रुद्राभिषेकके नमक-चमक आदि प्रकार हैं। प्रदेशभेदसे भी कुछ विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

शतरुद्रियको 'रुद्रसूक्त' भी कहते हैं। इसमें भगवान् रुद्रका भव्यातिभव्य वर्णन हुआ है। प्रथम मन्त्रका आस्वाद लें—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

'हे रुद्रदेव! आपके क्रोधको हमारा नमस्कार है। आपके बाणोंको हमारा नमस्कार है एवं आपकी बाहुओंको हमारा नमस्कार है।' भगवान् शिवका रुद्रस्वरूप दुष्टनिग्रहणार्थ है, अतः इस मन्त्रमें रुद्रदेवके क्रोधको, बाणोंको एवं उनको चलानेवाली बाहुओंको नमस्कार समर्पण किया गया है।

'रुद्र' शब्दकी निरुक्तिके अनुसार भगवान् रुद्र दुःखनाशक, पापनाशक एवं ज्ञानदाता हैं। रुद्रसूक्तमें भगवान् रुद्रके विविध स्वरूप वर्णित हैं, यथा—गिरीश, अधिवक्ता, सुमङ्गल, नीलग्रीव, सहस्राक्ष, कपर्दी, मीढुष्टम, हिरण्यबाहु, सेनानी, हरिकेश, अन्नपति, जगत्पति, क्षेत्रपति, वनपति, वृक्षपति, औषधीपति, सत्त्वपति, स्तेनपति, गिरिचर, सभापति, श्वपति, गणपति, व्रातपति, विरूप, विश्वरूप, भव, शर्व, शितिकण्ठ, शतधन्वा, ह्रस्व, वामन, बृहत्, वृद्ध, ज्येष्ठ, कनिष्ठ, श्लोक्य, आशुषेण, आशुरथ, कवची, श्रुतसेन, सुधन्वा, सोम, उग्र, भीम, शम्भु, शंकर, शिव, तीर्थ्य, व्रज्य, नीललोहित, पिनाकधारी, सहस्रबाहु तथा ईशान इत्यादि।

—इन विविध स्वरूपोंद्वारा भगवान् रुद्रकी अनेकविधता एवं अनेक लीलाओंका दर्शन होता है। रुद्रदेवताको स्थावर-

जंगम सर्वपदार्थरूप, सर्ववर्ण, सर्वजाति, मनुष्य-देव-पशु-वनस्पतिरूप मान करके सर्वात्मभाव, सर्वान्तर्यामित्वभाव सिद्ध किया गया है। इस भावसे ज्ञात होकर साधक अद्वैतनिष्ठ जीवन्मुक्त बनता है।

षष्ठाध्यायको 'महच्छिर' के रूपमें जाना जाता है। प्रथम मन्त्रमें सोमदेवताका वर्णन है। सुप्रसिद्ध महामृत्युञ्जय-मन्त्र इसी अध्यायमें संनिविष्ट है—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥

प्रस्तुत मन्त्रमें भगवान् त्र्यम्बक शिवजीसे प्रार्थना है कि जिस प्रकार ककड़ीका परिपक्व फल वृन्तसे मुक्त हो जाता है, उसी प्रकार हमें आप जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्त करें, हम आपका यजन करते हैं।

सप्तमाध्यायको 'जटा' कहा जाता है। 'उग्रश्चभीमश्च' मन्त्रमें मरुत् देवताका वर्णन है। इस अध्यायके 'लोमभ्यः स्वाहा' से 'यमाय स्वाहा' तकके मन्त्र कई विद्वान् अभिषेकमें ग्रहण करते हैं और कई विद्वान् इनको अस्वीकार करते हैं; क्योंकि अन्त्येष्टि-संस्कारमें चिताहोममें इन मन्त्रोंसे आहुतियाँ दी जाती हैं।

अष्टमाध्यायको 'चमकाध्याय' कहा जाता है, इसमें कुल २९ मन्त्र हैं। प्रत्येक मन्त्रमें 'च' कार एवं 'मे' का बाहुल्य होनेसे कदाचित् चमकाध्याय अभिधान रखा गया है।

चमकाध्यायके ऋषि 'देव' स्वयं हैं। देवता अग्नि हैं, अतः यह अध्याय अग्निदैवत्य या यज्ञदैवत्य माना जाता है। प्रत्येक मन्त्रके अन्तमें 'यज्ञेन कल्पन्ताम्' यह पद आता है। यज्ञ एवं यज्ञके साधनरूप जिन-जिन वस्तुओंकी आवश्यकता हो, वे सभी यज्ञके फलसे प्राप्त होती हैं। ये वस्तुएँ यज्ञार्थ, जनसेवार्थ एवं परोपकारार्थ उपयुक्त हों, ऐसी शुभभावना यहाँ निहित है।

रुद्राष्टाध्यायीके उपसंहारमें 'ऋचं वाचं प्र पद्ये' इत्यादि २४ मन्त्र शान्त्यध्यायके रूपमें एवं 'स्वस्ति न इन्द्रो' इत्यादि १२ मन्त्र

स्वस्ति-प्रार्थनाके रूपमें ख्यात हैं। शान्त्याध्यायमें विविध देवोंसे अनेकशः शान्तिकी प्रार्थना की गयी है। मित्रताभरी दृष्टिसे देखनेकी बात बड़ी उदात्त एवं भव्य है—

ॐ दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥

साधक प्रभुप्रीत्यर्थ एवं सेवार्थ अपनेको स्वस्थ बनाना चाहता है। स्वकीय दीर्घजीवन आनन्द एवं शान्तिपूर्ण व्यतीत हो, ऐसी आकाङ्क्षा रखता है—'पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतम्''''॥'

स्वस्ति-प्रार्थनाके निम्न मन्त्रमें देवोंका सामञ्जस्य सुचारुरूपमें वर्णित है। 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति', यह उपनिषद्-वाक्य यहाँ चरितार्थ होता है—

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥

इस प्रकार शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायीमें भगवान् रुद्रका माहात्म्य विविधता-विशदतासे सम्पूर्णतया आच्छादित है। कविकुलगुरु कालिदासने 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नाटकके मङ्गलश्लोक 'या सृष्टिः स्रष्टुराद्या' द्वारा शिवजीकी जिन अष्टविभूतियोंका वर्णन किया है, वे रुद्राष्टाध्यायीके आठ अध्यायोंमें भी विलसित हैं।

अन्तमें शिवजीकी वन्दना वैदिक मन्त्रद्वारा की जा रही है—

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥

'ॐ तत्सत्'।
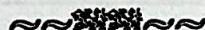
जाननेयोग्य आवश्यक बातें

रुद्रपाठकी महिमा

आशुतोष भगवान् सदाशिवकी उपासनामें रुद्राष्टाध्यायीका विशेष माहात्म्य है। शिवपुराणमें सनकादि ऋषियोंके प्रश्न करनेपर स्वयं शिवजीने रुद्राष्टाध्यायीके मन्त्रोंद्वारा अभिषेकका माहात्म्य बतलाते हुए कहा है कि मन, कर्म तथा वाणीसे परम पवित्र तथा सभी प्रकारकी आसक्तियोंसे रहित होकर भगवान् शूलपाणिकी प्रसन्नताके लिये रुद्राभिषेक करना चाहिये। इससे वह भगवान् शिवकी कृपासे सभी कामनाओंको प्राप्त करता है और अन्तमें परम गतिको प्राप्त होता है। रुद्राष्टाध्यायीद्वारा रुद्राभिषेकसे मनुष्योंकी कुलपरम्पराको भी आनन्दकी प्राप्ति होती है—

मनसा कर्मणा वाचा शुचिः संगविवर्जितः। कुर्याद् रुद्राभिषेकं च प्रीतये शूलपाणिनः॥
सर्वान् कामानवाप्नोति लभते परमां गतिम्। नन्दते च कुलं पुंसां श्रीमच्छम्भुप्रसादतः॥

वायुपुराणमें आया है कि रुद्राष्टाध्यायीके नमक (पञ्चम अध्याय) और चमक (अष्टम अध्याय) तथा पुरुषसूक्तका प्रतिदिन तीन बार जप (पाठ) करनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। जो नमक, चमक, होतृमन्त्रों और पुरुषसूक्तका सर्वदा जप करता है, वह उसी प्रकार महादेवजीमें प्रवेश करता है, जिस प्रकार घरका स्वामी अपने घरमें प्रवेश करता है। जो मनुष्य अपने शरीरमें भस्म लगाकर, भस्ममें शयनकर और जितेन्द्रिय होकर निरन्तर रुद्राध्यायका पाठ करता है, वह परा मुक्तिको प्राप्त करता है। जो रोगी और पापी जितेन्द्रिय होकर रुद्राध्यायका पाठ करता है, वह रोग और पापसे मुक्त होकर अद्वितीय सुख प्राप्त करता है—

नमकं चमकं चैव पौरुषं सूक्तमेव च। नित्यं त्रयं प्रयुञ्जानो ब्रह्मलोके महीयते॥

नमकं चमकं होतॄन् पुरुषसूक्तं जपेत् सदा। प्रविशेत् स महादेवं गृहं गृहपतिर्यथा॥
भस्मदिग्धशरीरस्तु भस्मशायी जितेन्द्रियः। सततं रुद्रजाप्योऽसौ परां मुक्तिमवाप्स्यति॥
रोगवान् पापवांश्चैव रुद्रं जप्त्वा जितेन्द्रियः। रोगात् पापाद्विनिर्मुक्तो ह्यतुलं सुखमश्नुते॥

शतरुद्रियपाठ*

शतरुद्रिय रुद्राष्टाध्यायीका मुख्य भाग है। शतरुद्रियका माहात्म्य रुद्राष्टाध्यायीका ही माहात्म्य है। मुख्यरूपसे रुद्राष्टाध्यायीका पञ्चम अध्याय शतरुद्रिय कहलाता है। इसमें भगवान् रुद्रके शताधिक नामोंद्वारा उन्हें नमस्कार किया गया है। 'शतं रुद्रा देवता अस्येति शतरुद्रीयमुच्यते' (भट्टभास्करका उपोद्घात भाष्य)। शतरुद्रियका पाठ अथवा जप समस्त वेदोंके पारायणके तुल्य माना गया है। शतरुद्रियको रुद्राध्याय भी कहा गया है। भगवान् वेदव्यासजीने अर्जुनको इसकी महिमा बताते हुए कहा है—

धन्यं यशस्यमायुष्यं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम्।
सर्वार्थसाधनं पुण्यं सर्वकिल्बिषनाशनम्। सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखभयापहम्।
पठन् वै शतरुद्रीयं शृण्वंश्च सततोत्थितः॥
भक्तो विश्वेश्वरं देवं मानुषेषु च यः सदा। वरान् कामान् स लभते प्रसन्ने त्र्यम्बके नरः॥

(महा०, द्रोणपर्व २०२। १४८-१४९, १५१-१५२)

पार्थ! वेदसम्मित यह शतरुद्रिय परम पवित्र तथा धन, यश और आयुकी वृद्धि करनेवाला है। इसके पाठसे सम्पूर्ण मनोरथोंकी

* कुछ लोग समयाभावके कारण कम समयमें अभिषेक करना चाहते हैं, उनके लिये शास्त्रोंमें शतरुद्रियपाठका भी विधान बतलाया गया है।

सिद्धि होती है। यह पवित्र, सम्पूर्ण किल्बिषोंका नाशक, सब पापोंका निवारक तथा सब प्रकारके दुःख और भयको दूर करनेवाला है। जो सदा उद्यत रहकर शतरुद्रियको पढ़ता और सुनता है तथा मनुष्योंमें जो कोई भी निरन्तर भगवान् विश्वेश्वरका भक्तिभावसे भजन करता है, वह उन त्रिलोचनके प्रसन्न होनेपर समस्त उत्तम कामनाओंको प्राप्त कर लेता है।

अथर्ववेदीय जाबालोपनिषद्में महर्षि याज्ञवल्क्यजीने शतरुद्रियको अमृतत्वका साधन कहा है।* कृष्णयजुर्वेदीय कैवल्योपनिषद्में शतरुद्रियको कैवल्यपदप्राप्तिका साधन बताया गया है। पितामह भगवान् ब्रह्माजीने महर्षि आश्वलायनसे शतरुद्रियकी महिमा इस प्रकार बतायी है—

यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति स आत्मपूतो भवति स सुरापानात्पूतो भवति स ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति स सुवर्णस्तेयात्पूतो भवति स कृत्याकृत्यात्पूतो भवति तस्मादविमुक्तमाश्रितो भवत्यत्याश्रमी सर्वदा सकृद्वा जपेत्॥ अनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनम्। तस्मादेवं विदित्वैनं कैवल्यं पदमश्नुते कैवल्यं पदमश्नुत इति॥

अर्थात् जो शतरुद्रियका पाठ करता है, वह अग्निपूत होता है, वायुपूत होता है, आत्मपूत होता है, सुरापानके दोषसे छूट जाता है, ब्रह्महत्याके दोषसे मुक्त हो जाता है, स्वर्णकी चोरीके पापसे छूट जाता है, शुभाशुभ कर्मोंसे उद्धार पाता है, भगवान् सदाशिवके आश्रित हो जाता है तथा वह अविमुक्तस्वरूप हो जाता है। अतएव जो आश्रमसे अतीत हो गये हैं, उन परमहंसोंको सदा-सर्वदा अथवा कम-से-कम एक बार इसका पाठ अवश्य करना चाहिये। इससे उस ज्ञानकी प्राप्ति होती है, जो भवसागरका नाश कर देता है। इसलिये इसको इस प्रकार जानकर मनुष्य कैवल्यरूप मुक्तिको प्राप्त होता है, कैवल्यपदको प्राप्त होता है।

* अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः किं जप्येनामृतत्वं ब्रूहीति॥ स होवाच याज्ञवल्क्यः॥ शतरुद्रियेणेत्येतान्येव ह वा अमृतस्य नामानि॥ एतैर्ह वा अमृतो भवतीति एवमेवैतद्याज्ञवल्क्यः॥ (जाबालोपनिषद् ३)

शतरुद्रिय नामसे एक सौ मन्त्रोंके पाठकी परम्परा भी कहीं-कहीं है। इस संदर्भमें निम्न श्लोक प्रसिद्ध है—

षट्षष्टिर्नीलसूक्तं च पुनः षोडशमेव च। एष ते द्वे नमस्ते द्वे न तं विद्द्वयमेव च॥
मीढुष्टमेति चत्वारि वयः सोमाष्टमेव च। वेदवादिभिराख्यातमेतद्वै शतरुद्रियम्॥

अर्थात् रुद्राष्टाध्यायीके पञ्चम अध्यायके 'नमस्ते रुद्र०' इत्यादि ६६ मन्त्र, फिर उसी पञ्चम अध्यायके प्रारम्भिक १६ मन्त्र, तदनन्तर रुद्राष्टाध्यायीके छठे अध्यायके 'एष ते०' और 'अवरुद्र०' ये दो मन्त्र, फिर रुद्राष्टाध्यायीके पञ्चम अध्यायके 'नमस्ते' और 'या ते०' ये दो मन्त्र, फिर शुक्ल यजुर्वेदसंहिताके १७वें अध्यायके ३१वें तथा ३२वें मन्त्र ('न तं विद्०' तथा 'विश्वकर्मा०') तदनन्तर रुद्राष्टाध्यायीके पञ्चम अध्यायके ५१वें मन्त्रसे ५४वें मन्त्र ('मीढुष्टम शिवतम०' से 'असंख्याता सहस्त्राणि०')-तक और फिर रुद्राष्टाध्यायीके सम्पूर्ण छठे अध्यायके आठ मन्त्रोंका यथोक्त रूपसे आनुपूर्वी पाठ करनेपर सौ मन्त्र हो जाते हैं। सौ मन्त्र होनेसे इसे शतरुद्रिय कहा जाता है। [रुद्रकल्पद्रुम आदिमें इस पक्षको निर्मूल बताया गया है— 'तन्निर्मूलमिति' (रुद्रकल्पद्रुम १८१)।] इनके अनुसार पञ्चम अध्यायके ६६ मन्त्रके पाठसे ही शतरुद्रिय पूरी हो जाती है। सामान्यतः सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायीके द्वारा रुद्राभिषेकादि कार्य अधिक प्रचलित एवं प्रशस्त है।

रुद्रपाठके भेद [अभिषेक-विधि]

शास्त्रोंमें रुद्रपाठके पाँच प्रकार बताये गये हैं—१-रूपक या षडङ्गपाठ, २-रुद्री या एकादशिनी, ३-लघुरुद्र, ४-महारुद्र तथा ५-अतिरुद्र।* यहाँ संक्षेपमें इनका विवरण दिया जा रहा है—

* रुद्राः पञ्चविधाः प्रोक्ता देशिकैरुत्तरोत्तरम्। साङ्गस्त्वाद्यो रूपकाख्यः सशीर्षो रुद्र उच्यते॥
एकादशगुणैस्तद्वद् रुद्री संज्ञो द्वितीयकः। एकादशभिरेताभिस्तृतीयो लघुरुद्रकः॥

१-रूपक या षडङ्गपाठ—सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायीमें १० अध्याय हैं, प्रथम आठ अध्यायोंमें भगवान् रुद्र—शिवकी विशेष महिमा तथा उनकी कृपाशक्तिका वर्णन होनेसे ये आठ अध्याय रुद्राष्टाध्यायीके नामसे प्रसिद्ध हैं। ९वें अध्यायमें **'ऋचं वाचं प्रपद्ये०'** इत्यादि २४ मन्त्र हैं। यह अध्याय शान्त्यध्यायके नामसे जाना जाता है। अन्तिम १०वें अध्यायमें **'स्वस्ति न इन्द्रो०'** इत्यादि बारह मन्त्र हैं, जो स्वस्तिप्रार्थनाध्यायके नामसे प्रसिद्ध हैं। दस अध्याय होनेपर भी नाम रुद्राष्टाध्यायी ही है।

इस प्रकार पूरे दस अध्यायोंकी एक सामान्य आवृत्ति रूपक या षडङ्गपाठ कहलाता है। रुद्रके छः अङ्ग कहे गये हैं, इन छः अङ्गोंका यथाविधि पाठ ही षडङ्गपाठ कहा जाता है। ये छः अङ्ग इस प्रकार हैं*—

रुद्राष्टाध्यायीके प्रथम अध्यायके **'यज्जाग्रतो०'** से लेकर छः मन्त्रोंको शिवसङ्कल्पसूक्त कहा गया है। यह सूक्त रुद्रका **प्रथम हृदयरूपी अङ्ग** है। द्वितीय अध्यायके प्रारम्भसे १६ मन्त्रोंको पुरुषसूक्त कहते हैं, यह पुरुषसूक्त रुद्रका **द्वितीय सिररूपी अङ्ग** है। इसी द्वितीय अध्यायके अन्तिम छः मन्त्रोंको उत्तरनारायणसूक्त कहते हैं। यह **शिखास्थानीय** रुद्रका **तीसरा अङ्ग** है। तृतीयाध्यायके **'आशुः शिशानः०'** से लेकर द्वादश मन्त्रोंको अप्रतिरथसूक्त कहा जाता है। यह रुद्रका **कवचरूप चतुर्थ अङ्ग** है। चतुर्थाध्यायके **'बिभ्राड् बृहत्०'** मन्त्रसे लेकर पूरा चतुर्थ अध्याय मैत्रसूक्त कहलाता है। यह रुद्रका **नेत्ररूप पञ्चम अङ्ग**

लघ्वेकादशभिः प्रोक्तो महारुद्रश्चतुर्थकः। पञ्चमः स्यान्महारुद्रैरेकादशभिरन्तिमः॥
अतिरुद्रः समाख्यातः सर्वेभ्यो ह्युत्तमोत्तमः॥ (रुद्रकल्पद्रुम)

* शिवसंकल्पहृदयं सूक्तं स्यात् पौरुषं शिरः। प्राहुर्नारायणीयं च शिखा स्याच्चोत्तराभिधम्॥
आशुः शिशानः कवचं नेत्रं बिभ्राड् बृहत्स्मृतम्। शतरुद्रियमस्त्रं स्यात् षडङ्गक्रम ईरितः॥
हृच्छिरस्तु शिखा वर्म नेत्रं चास्त्रं महामते। प्राहुर्विधिज्ञा रुद्रस्य षडङ्गानि स्वशास्त्रतः॥

है। **'नमस्ते रुद्र०'** से प्रारम्भकर पूरा पञ्चम अध्याय शतरुद्रिय कहलाता है। यह रुद्रका **अस्त्ररूप षष्ठ अङ्ग** है। पञ्चम अध्यायके मन्त्रोंमें **'नमस्ते'** पदके प्राधान्यसे इसे **'नमकाध्याय'** भी कहा जाता है।

इन छः अङ्गों (पाँच अध्यायों)-का पाठ करनेके पश्चात् षष्ठाध्याय तथा सप्तम अध्यायका पाठ होता है। **'वयः सोम०'** आदि अष्ट- मन्त्रात्मक षष्ठाध्याय रुद्रके **'महच्छिर'** के नामसे जाना जाता है। **'उग्रश्च०'** इत्यादि सप्त-मन्त्रात्मक सप्तम अध्याय **'जटा'** नामसे विख्यात है। इन दो अध्यायोंके पाठके अनन्तर आठवें चमकाध्यायका पाठ करना चाहिये। इस अध्यायके मन्त्रोंमें **'च'** कार और **'मे'** का बाहुल्य होनेसे यह अध्याय **'चमकाध्याय'** कहलाता है। इस अध्यायके पाठके अनन्तर अन्तमें शान्त्यध्याय तथा स्वस्तिप्रार्थनाध्यायका पाठ करना चाहिये। इस प्रकार सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायीके दस अध्यायोंका पाठ षडङ्ग या रूपकपाठ कहलाता है। षडङ्गपाठमें विशेष बात यह है कि इसमें आठवें अध्यायके साथ पाँचवें अध्यायकी आवृत्ति नहीं होती।

२. रुद्री या एकादशिनी—षडङ्गपाठमें नमकाध्याय (पञ्चम) तथा चमकाध्याय (अष्टम)-का संयोजन कर रुद्राध्यायकी की गयी ग्यारह आवृत्तिको रुद्री या एकादशिनी कहते हैं। आठवें अध्यायके साथ पाँचवें अध्यायकी जो आवृत्ति होती है, उसके लिये शास्त्रोंका निश्चित विधान है,* तदनुसार आठवें अध्यायके क्रमशः चार-चार तथा फिर चार मन्त्रों, तीन-तीन तथा पुनः तीन मन्त्रों; तदनन्तर दो मन्त्र, फिर एक-एक मन्त्र और पुनः दो मन्त्रोंके अनन्तर पूरे पाँचवें अध्याय (नमक)-की एक-एक आवृत्ति होती है। अन्तमें शेष दो मन्त्रोंका पाठ होता है। इस प्रकार आठवें अध्यायके कुल उन्तीस मन्त्रोंको रुद्रोंकी संख्या

---

* नमक-चमकका क्रम—

वेद[४]वेदा[४]ब्धि[४]रामा[३]श्च राम[३]राम[३]द्वि[२]कै[१]क[१]कम्। द्वौ[२] द्वौ[२] पृथग्भिर्मन्त्रैस्तु नमकाश्चमकाः स्मृताः॥
वाज[१]श्च सत्य[२]मूक[३]र्चाश्मा[४] चाग्नि[५]रंशुष्[६] तथाग्निकः[७]। एका[८] चैव चतस्रश्च[९] त्र्य[१०]विर्वाजा[११] इति क्रमः॥

ग्यारह होनेके कारण ग्यारह अनुवाकोंमें विभक्त किया गया है—ऐसा रुद्रकल्पद्रुममें बताया गया है। इसके बाद नवें और दसवें अध्यायका पाठ होता है। इस प्रकार की गयी एक आवृत्तिको रुद्री या एकादशिनी कहते हैं।

३. लघुरुद्र—एकादशिनी रुद्रीकी ग्यारह आवृत्तियोंके पाठको लघुरुद्रपाठ कहा जाता है। यह लघुरुद्र-अनुष्ठान एक दिनमें ग्यारह ब्राह्मणोंका वरण करके एक साथ सम्पन्न किया जा सकता है तथा एक ब्राह्मणद्वारा अथवा स्वयं ग्यारह दिनोंतक एक एकादशिनी-पाठ नित्य करनेपर भी लघुरुद्रकी सम्पन्नता होती है।

४. महारुद्र—लघुरुद्रकी ग्यारह आवृत्ति अर्थात् एकादशिनी रुद्रीका १२१ आवृत्तिपाठ होनेपर महारुद्र-अनुष्ठान होता है। यह पाठ ११ ब्राह्मणोंद्वारा ग्यारह दिनोंतक कराया जा सकता है तथा एक दिनमें भी ब्राह्मणोंकी संख्या बढ़ाकर १२१ पाठ होनेपर महारुद्र-अनुष्ठान सम्पन्न हो जाता है।

५. अतिरुद्र—महारुद्रकी ग्यारह आवृत्ति अर्थात् एकादशिनी रुद्रीका १३३१ आवृत्तिपाठ होनेसे अतिरुद्र-अनुष्ठान सम्पन्न होता है।

ये अनुष्ठान पाठात्मक, अभिषेकात्मक तथा हवनात्मक तीनों प्रकारसे किये जा सकते हैं। शास्त्रोंमें इन अनुष्ठानोंकी अत्यधिक महिमाका वर्णन है।

रुद्राभिषेकमें प्रयुक्त होनेवाले प्रशस्त द्रव्य

अपने कल्याणके लिये भगवान् सदाशिवकी प्रसन्नताके निमित्त निष्कामभावसे यजन करना चाहिये, इसका अनन्त फल है। शास्त्रोंमें विविध कामनाओंकी पूर्तिके लिये रुद्राभिषेकके निमित्त अनेक द्रव्योंका निर्देश हुआ है। जिसे यहाँ

प्रस्तुत किया जा रहा है*—

जलसे रुद्राभिषेक करनेपर वृष्टि होती है, व्याधिकी शान्तिके लिये कुशोदकसे अभिषेक करना चाहिये। पशुप्राप्तिके लिये दही, लक्ष्मीकी प्राप्तिके लिये इक्षुरस (गन्नेका रस), धनप्राप्तिके लिये मधु तथा घृत एवं मोक्षप्राप्तिके लिये तीर्थके जलसे अभिषेक करना चाहिये। पुत्रकी इच्छा करनेवाला दूधद्वारा अभिषेक करनेपर पुत्र प्राप्त करता है। वन्ध्या, काकवन्ध्या (मात्र एक संतान उत्पन्न करनेवाली) अथवा मृतवत्सा स्त्री (जिसकी संतान उत्पन्न होते ही मर जाय या जो मृत संतान उत्पन्न करे) गोदुग्धके द्वारा अभिषेक करनेपर शीघ्र ही पुत्र प्राप्त करती है।

जलकी धारा भगवान् शिवको अति प्रिय है। अतः ज्वरके कोपको शान्त करनेके लिये जलधारासे अभिषेक करना चाहिये। एक हजार मन्त्रोंसहित घृतकी धारासे रुद्राभिषेक करनेपर वंशका विस्तार होता है, इसमें संशय नहीं है। प्रमेहरोगके विनाशके लिये

---

* (क) जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः॥
दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च। मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा॥
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसा चाभिषेचनात्। वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना॥
सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसा चाभिषेचनात्।
(ख) ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया॥
घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम्। तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः॥
प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम्। केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः॥
शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्। श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च॥
सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह। मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात्॥
पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा। जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै॥
पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेच्छिवं तथा। महालिङ्गाभिषेकेण सुप्रीतः शङ्करो मुदा॥
कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम्।

विशेषरूपसे केवल दूधकी धारासे अभिषेक करना चाहिये, इससे मनोभिलषित कामनाकी पूर्ति भी होती है। बुद्धिकी जड़ताको दूर करनेके लिये शक्कर मिले दूधसे अभिषेक करना चाहिये, ऐसा करनेपर भगवान् शंकरकी कृपासे उसकी बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है। सरसोंके तेलसे अभिषेक करनेपर शत्रुका विनाश हो जाता है तथा मधुके द्वारा अभिषेक करनेपर यक्ष्मारोग (तपेदिक) दूर हो जाता है। पापक्षयकी इच्छावालेको मधु (शहद)-से, आरोग्यकी इच्छावालेको घृतसे, दीर्घ आयुकी इच्छावालेको गोदुग्धसे, लक्ष्मीकी कामनावालेको ईख (गन्ने)-के रससे और पुत्रार्थीको शर्करा (चीनी)-मिश्रित जलसे भगवान् सदाशिवका अभिषेक करना चाहिये। उपर्युक्त द्रव्योंसे महालिङ्गका अभिषेक करनेपर भगवान् शिव अत्यन्त प्रसन्न होकर भक्तोंकी तत्तत् कामनाओंको पूर्ण करते हैं। अतः भक्तोंको यजुर्वेदविहित विधानसे रुद्रोंका अभिषेक करना चाहिये।

भट्टभास्कराचार्यकृत रुद्रनमकके भाष्यके अन्तमें रुद्रमन्त्रोंके अनेक प्रयोग निर्दिष्ट हैं। सब प्रकारकी सिद्धिके लिये वहाँ बताया गया है कि रुद्राध्यायके केवल पाठ अथवा जपसे ही समस्त कामनाओंकी पूर्ति हो जाती है—**'अस्य रुद्राध्यायस्य जपमात्रेणैव सर्वसिद्धिः।'** सूतसंहिताका कहना है कि रुद्रजापी महापातकरूपी पञ्जरसे मुक्त होकर सम्यक्-ज्ञान प्राप्त करता है और अन्तमें विशुद्ध मुक्ति प्राप्त करता है। रुद्राध्यायके समान जपनेयोग्य, स्वाध्याय करनेयोग्य वेदों और स्मृतियों आदिमें अन्य कोई मन्त्र नहीं है—

रुद्रजापी विमुच्येत महापातकपञ्जरात्। सम्यग्ज्ञानं च लभते तेन मुच्येत बन्धनात्॥
अनेन सदृशं जप्यं नास्ति सत्यं श्रुतौ स्मृतौ।

भगवान् रुद्रकी प्रसन्नताके लिये निष्कामभावसे रुद्रपाठका अनन्त फल है। वायुपुराणके अनुसार वह जीव उसी देहसे निश्चितरूपसे रुद्रस्वरूप हो जाता है अर्थात् सायुज्यमुक्तिको प्राप्त होता है—

मम भावं समुत्सृज्य यस्तु रुद्राञ्जपेत् सदा। स तेनैव च देहेन रुद्रः सञ्जायते ध्रुवम्॥

॥ श्रीहरिः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवपूजनविधि*

भगवान् शंकरकी पूजाके निमित्त पवित्र आसनपर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठ जाय। पूजन तथा अभिषेककी सामग्रियोंको अपने दाहिनी ओर रख ले। गायत्रीमन्त्रसे शिखाबन्धन कर ले। यदि शिखा बँधी हो तो स्पर्श कर ले।

पवित्रीकरण—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा पूजनादिकी सामग्रियोंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्री-धारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

---

* ब्राह्मणोंद्वारा लघुरुद्र, महारुद्र आदि अनुष्ठान करायें अथवा स्वयं करें, इस दृष्टिसे यहाँ शिवपूजनकी विधि यथासाध्य विस्तारपूर्वक लिखी जा रही है, जो लोग रुद्राभिषेक स्वयं प्रतिदिन करें, वे यथासम्भव संक्षिप्तरूपमें भी पूजन कर सकते हैं।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन—ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः—इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। 'ॐ हृषीकेशाय नमः' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायामका मन्त्र याद न हो तो गायत्रीमन्त्रसे प्राणायाम कर ले।

रक्षादीप-प्रज्वालन—अक्षतोंके ऊपर घृतदीपकको रखकर प्रज्वलित करे। हाथ धो ले तथा गन्ध-पुष्पाक्षतसे दीपककी पूजा करे।

सर्वप्रथम शिवपूजन तथा रुद्राभिषेककी अधिकारप्राप्तिके लिये प्रायश्चित्तरूपमें गोनिष्क्रयका सङ्कल्प करे।

अधिकारप्राप्त्यर्थप्रायश्चित्तसङ्कल्प *—हाथमें जल, अक्षत, पुष्प, कुश तथा द्रव्य लेकर निम्न सङ्कल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं क्रियमाणरुद्राभिषेककर्मणि अधिकारप्राप्त्यर्थं कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकचतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च गोनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे आचार्याय भवते सम्प्रददे (बादमें देना हो तो **दातुमुत्सृज्ये**) कहकर हाथका सङ्कल्पजल तथा द्रव्य ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

---

* यहाँ दिया गया प्रायश्चित्तरूपमें गोनिष्क्रयका सङ्कल्प प्रतिदिन करनेकी आवश्यकता नहीं है।

गोप्रार्थना—निम्न मन्त्रसे प्रत्यक्ष गौकी भावनाकर प्रार्थना करे—

गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिहलोके परत्र च॥

अनेन गोदानेन पापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्, न मम।

यदि गणेशाम्बिकाकी प्रतिष्ठित मूर्ति न हो तो किसी पात्रमें अक्षतोंके ऊपर कुमकुमसे अष्टदलकमल बनाकर सुपारीमें मौली लपेटकर गणेश तथा गोमयकी गौरीको अक्षतोंपर स्थापित कर दे।

स्वस्तिवाचन—हाथमें पुष्पाक्षत लेकर निम्न स्वस्तिवाचन करे—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥ (हाथके पुष्पाक्षत गणेशाम्बिकापर चढ़ा दे।)

तदनन्तर शिवपूजन तथा रुद्राभिषेकका सङ्कल्प करे—

प्रतिज्ञा-सङ्कल्प—

(क) सकाम—दाहिने हाथमें जल, अक्षत, पुष्प तथा कुश लेकर निम्न प्रतिज्ञा-सङ्कल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ""क्षेत्रे (यदि क्षेत्रका नाम मालूम न हो तो **'विष्णुप्रजापतिक्षेत्रे'** बोले) **""स्थाने**

(यदि काशी हो तो अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारे ""नाम संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ""ऋतौ ""मासे ""पक्षे ""तिथौ ""वासरे ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ममात्मनः सर्वारिष्टनिरसनपूर्वकसर्वपापक्षयार्थं मनसेप्सितफल-प्राप्तिपूर्वकश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादिवृद्ध्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थञ्च ""लिङ्गोपरि यथोपचारैः श्रीसाम्बसदाशिवपूजनपूर्वकं जलधारया* षडङ्गरुद्रेण/रुद्रैकादशिन्या/लघुरुद्रेण रुद्राभिषेकं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये। (यदि स्वयं करे तो 'ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये' के स्थानपर करिष्ये बोले)। कहकर हाथका सङ्कल्पजल आदि छोड़ दे। पुनः हाथमें जल, अक्षत, पुष्प तथा कुश लेकर बोले—तदङ्गत्वेन कार्यस्य निर्विघ्नतया सिद्ध्यर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। कहकर हाथका जल आदि छोड़ दे।

(ख) निष्काम सङ्कल्प—यदि केवल भगवान् साम्बसदाशिवकी प्रीतिके लिये रुद्राभिषेक करना हो तो निम्न सङ्कल्प करे। पूर्वकी भाँति दाहिने हाथमें जल, अक्षत, पुष्प तथा कुश लेकर बोले—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे

* जिस द्रव्यसे अभिषेक करना हो यहाँपर उसका उल्लेख करना चाहिये। जैसे जलसे अभिषेक करना हो तो 'जलधारया' कहे, दुग्धसे करना हो तो 'दुग्धधारया' कहे इत्यादि।

जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ''''क्षेत्रे (यदि क्षेत्रका नाम मालूम न हो तो 'विष्णुप्रजापतिक्षेत्रे' बोले) ''''स्थाने (यदि काशी हो तो अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारे ''''नाम संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ''''ऋतौ ''''मासे ''''पक्षे ''''तिथौ ''''वासरे ''''गोत्रः ''''शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ममात्मनः समस्तपापक्षयपूर्वकं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवपूजनं जलधारया षडङ्गरुद्रेण/रुद्रैकादशिन्या/लघुरुद्रेण श्रीरुद्राभिषेकं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये (यदि स्वयं करे तो 'ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये' के स्थानपर करिष्ये बोले)। कहकर सङ्कल्पका जल आदि छोड़ दे। पुनः हाथमें जल, अक्षत, पुष्प तथा कुश लेकर बोले—

तदङ्गत्वेन कार्यस्य निर्विघ्नतया सिद्ध्यर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। (कहकर हाथका जल आदि छोड़ दे।)

श्रीगणेशाम्बिका-पूजन

भगवान् गणेशका आवाहन—हाथमें अक्षत लेकर ध्यान करे—

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च। (हाथके अक्षत गणेशजीपर चढ़ा दे।) पुनः अक्षत लेकर गणेशजीकी दाहिनी ओर भगवती गौरीका आवाहन करे—

भगवती गौरीका आवाहन—

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

प्राण-प्रतिष्ठा— अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्—(गौरी-गणेशपर अक्षत-पुष्प छोड़े।)

आसन— विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि। (आसनके लिये अक्षत समर्पित करे।)

पाद्य—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (कहकर एक आचमनी पाद्य (जल) समर्पित करे।)

अर्घ्य—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (बोलकर गणेश-गौरीको अर्घ्य दे।)

आचमन—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (बोलकर आचमनीय जल अर्पित करे।)

स्नान— मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। (बोलकर शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

पञ्चामृतस्नान— पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (बोलकर पञ्चामृतसे स्नान कराये।)

शुद्धोदकस्नान— गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (कहकर शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

वस्त्र— शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (कहकर वस्त्र चढ़ाये और) 'वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि'। (कहकर आचमनीय जल समर्पित करे।)

यज्ञोपवीत—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (बोलकर यज्ञोपवीत समर्पित करे और) 'आचमनीयं जलं समर्पयामि'। (बोलकर आचमनके लिये जल अर्पित करे।)

उपवस्त्र—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। बोलकर उपवस्त्र चढ़ाये और 'आचमनीयं जलं समर्पयामि'। (कहकर आचमनीय जल अर्पित करे।)

चन्दन— श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (बोलकर चन्दन चढ़ाये।)

अक्षत—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (कहकर गणेश–गौरीपर अक्षत चढ़ाये।)

पुष्पमाला— माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। (बोलकर पुष्पमाला समर्पित करे।)

दूर्वाङ्कुर— दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (बोलकर गणेशजीपर दूर्वाङ्कुर चढ़ाये।)

सिन्दूर— सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। (कहकर गौरीपर सिन्दूर चढ़ाये।)

अबीर— नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (कहकर अबीर चढ़ाये।)

धूप—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि। (कहकर धूप अर्पण करे।)

दीप— साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। (दीप दिखाये और हाथ धो ले।)

नैवेद्य—नैवेद्यको सामने रखकर उसमें दूर्वा-पुष्प आदि डालकर निम्न मन्त्रसे निवेदित करे—

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (बोलकर नैवेद्य अर्पण करे और आचमनीय जल अर्पित करे।)

ऋतुफल—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलं समर्पयामि। (बोलकर ऋतुफल अर्पण करे।)

करोद्वर्तन—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि। (दोनों हाथोंकी अनामिका अँगुली और अँगूठेसे गौरी-गणेशपर चन्दन छिड़के।)

ताम्बूल— पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लौंग-सुपारीके साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा— हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (यथाशक्ति द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करे।)

आरती— कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। (कर्पूरकी आरती करे, आरतीके बाद जल गिरा दे।)

पुष्पाञ्जलि— नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा— यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करे।)

विशेषार्घ्य—ताम्रपात्रमें जल, चन्दन, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा और दक्षिणा रखकर दोनों घुटनोंको जमीनपर लगा दे और दोनों हाथसे अर्घ्यपात्रको सिरतक ले जाय तथा निम्न मन्त्रसे गणेशको अर्पित करे—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥
अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि। (विशेषार्घ्य दे।)

प्रार्थना— विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि। (साष्टाङ्ग नमस्कार करे।)

समर्पण— गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम॥

अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम। (ऐसा कहकर समस्त पूजनकर्म भगवान्‌को समर्पित कर दे तथा पुनः नमस्कार करे।)

ब्राह्मण-वरण

यदि ब्राह्मणोंद्वारा रुद्राभिषेक कराना हो तो रुद्राभिषेककर्मके लिये ब्राह्मण-वरण करे। गन्धाक्षत तथा पुष्पमाला आदिसे उनका अर्चन करे, फिर वरणसामग्री तथा जल, अक्षत, कुश एवं द्रव्य हाथमें लेकर निम्न सङ्कल्पपूर्वक उनका वरण करे—

वरणसङ्कल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा (वर्मा/गुप्तोऽहं) अस्मिन् रुद्राभिषेकाख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे (यदि अधिक ब्राह्मणोंद्वारा रुद्राभिषेक कराना हो तो ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे के स्थानपर नानागोत्रान् नानाशर्मणो ब्राह्मणान् युष्मान् वृणे बोले।)।

ब्राह्मण वचन—ब्राह्मण बोले—'वृतोऽस्मि'। (यदि अधिक ब्राह्मण करें तो 'वृताः स्मः' बोलें।)

पार्षदोंका पूजन

गणेशाम्बिका–पूजनके अनन्तर भगवान् शंकरके विशिष्ट अनुग्रहकी प्राप्तिके लिये उनके पूजनसे पूर्व उनके परिकर–परिच्छद एवं पार्षदोंका भी पूजन किया जाता है। संक्षेपमें उनकी पूजा और प्रार्थनाके मन्त्र भी यहाँ दिये जा रहे हैं। जल, गन्धाक्षत, पुष्प तथा बिल्वपत्र आदिसे निम्न मन्त्र बोलकर नन्दीश्वर आदिका पूजन करे—**'सर्वोपचारार्थे जलगन्धाक्षतपुष्पबिल्वपत्राणि समर्पयामि।'**

नन्दीश्वर-पूजन

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा॥
वृषाग्निं वृषणं भरन्नपां गर्भं समुद्रियम्।
अग्न आ याहि वीतये॥

वीरभद्र-पूजन

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः॥

कार्तिकेय-पूजन

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु॥

कुबेर-पूजन

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।

इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

कीर्तिमुख-पूजन

ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा ऽभिभुवे स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

सर्प-पूजन

निम्न मन्त्रसे जलहरीमें सर्प-पूजन करे—

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

शिव-पूजन

पार्षदोंकी पूजाके बाद हाथमें बिल्वपत्र और अक्षत लेकर भगवान् शिवका पूजन करे।

भगवान् शिवका ध्यान—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, ध्यानार्थे बिल्वपत्रं समर्पयामि। (ध्यान करके शिवलिङ्गपर बिल्वपत्र चढ़ाये।)

आवाहन— ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजां करिष्येऽहं तावत् त्वं संनिधौ भव॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (पुष्प चढ़ाये।)

आसन— ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥
अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आसनार्थे बिल्वपत्रं समर्पयामि। (आसनके लिये बिल्वपत्र चढ़ाये।)

पाद्य— ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत्॥
गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

अर्घ्य— ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना असत्॥
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण भगवन् शम्भो प्रसन्नो वरदो भव॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (चन्दन, पुष्प, अक्षतयुक्त अर्घ्य समर्पण करे।)

आचमन— ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥
कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (कर्पूरसे सुवासित शीतल जल चढ़ाये।)

स्नान— ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैनः रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाः हेड ईमहे॥
मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि (स्नानीय और आचमनीय जल चढ़ाये।)

दुग्धस्नान— ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानाय गृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पयःस्नानं समर्पयामि, पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (दूधसे स्नान कराये, पुनः शुद्ध जलसे स्नान कराये और आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

दधिस्नान— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूꣳषि तारिषत्॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दधिस्नानं समर्पयामि, दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (दहीसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल समर्पित करे।)

घृतस्नान— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, घृतस्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक-स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (घृतसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये और पुनः आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

मधुस्नान—ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मधुस्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (मधुसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल समर्पित करे।)

शर्करास्नान—ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम्। अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (शर्करासे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

पञ्चामृतस्नान— ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥
पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (पञ्चामृतसे स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान कराये तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

गन्धोदकस्नान—केसरको चन्दनसे घिसकर पीला द्रव्य बना ले और इस गन्धोदकसे स्नान कराये।

ॐ अꣳ शुना ते अꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रितम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुंकुमाक्तं नु गृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि, गन्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(गन्धोदकसे स्नान कराकर आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

शुद्धोदकस्नान— **ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः**
श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा
अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥
शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(शुद्ध जलसे स्नान कराये, तदनन्तर आचमनीय जल चढ़ाये।)

महाभिषेक-स्नान—रौद्राध्यायके 'नमस्ते०' इत्यादि निम्न षोडश मन्त्रोंसे महाभिषेक-स्नान कराये—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत्॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना असत्॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहीँश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैनꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳ हेड ईमहे॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥
अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥

आचमन— भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, महाभिषेकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

वस्त्र— ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रं धृत्वा शान्तिं प्रयच्छ मे॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ाये तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

यज्ञोपवीत— ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत समर्पित करे तथा आचमनके लिये जल चढ़ाये।)

उपवस्त्र— ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूपꣳ सं व्ययस्व विभावसो॥
उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (उपवस्त्र चढ़ाये तथा आचमनके लिये जल दे।)

चन्दन— ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दन उपलेपित करे।)

भस्म— ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सꣳ सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरा ऽसदः॥
सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिसमप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, भस्म समर्पयामि। (भस्म चढ़ाये।)

अक्षत— ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे
खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे
नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (कुंकुमयुक्त अक्षत चढ़ाये।)

पुष्पमाला— ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तितः।
मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। (पुष्प एवं पुष्पमाला चढ़ाये।)

बिल्वपत्र— ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।
शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
शालग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्।
सोमयज्ञमहापुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
दन्तिकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥

लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बिल्वपत्र समर्पित करे।)

दूर्वाङ्कुर— ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर चढ़ाये।)

सुगन्धित द्रव्य— ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। (सुगन्धित द्रव्य चढ़ाये।)

एकादश-रुद्रपूजा—एकादश रुद्रों तथा एकादश शक्तियोंके नाममन्त्रोंसे भगवान् श्रीसाम्बसदाशिवपर गन्धाक्षतपुष्प तथा बिल्वपत्र चढ़ाये—

ॐ अघोराय नमः॥ १॥ ॐ पशुपतये नमः॥ २॥ ॐ शर्वाय नमः॥ ३॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः॥ ४॥ ॐ विश्वरूपिणे नमः॥ ५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः॥ ६॥ ॐ कपर्दिने नमः॥ ७॥ ॐ भैरवाय नमः॥ ८॥ ॐ शूलपाणये नमः॥ ९॥ ॐ ईशानाय नमः॥ १०॥ ॐ महेश्वराय नमः॥ ११॥

एकादश-शक्तिपूजा—ॐ उमायै नमः॥ १॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः॥ २॥ ॐ पार्वत्यै नमः॥ ३॥ ॐ गौर्यै नमः॥ ४॥ ॐ काल्यै नमः॥ ५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः॥ ६॥ ॐ कोटर्यै नमः॥ ७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः॥ ८॥ ॐ ह्रां नमः॥ ९॥ ॐ ह्रीं नमः॥ १०॥ ॐ गङ्गादेव्यै नमः॥ ११॥

आभूषण— ॐ युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तंतमिद्धतं
वज्रेण तंतमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्।

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् ।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, रत्नाभूषणं समर्पयामि। (रत्नाभूषण समर्पित करे।)

नानापरिमलद्रव्य— ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳ सं परि पातु विश्वतः ॥
दिव्यगन्धसमायुक्तं नानापरिमलान्वितम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शोभनम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (परिमलद्रव्य चढ़ाये।)

सिन्दूर— ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। (सिन्दूर समर्पित करे।)

भगवान् सदाशिवके आगे चौकोर जलका घेरा लगाकर उसमें नैवेद्यादि वस्तुओंको रखे, इसके बाद धूप–दीप निवेदन करे।

धूप— ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप आघ्रापित करे।)

दीप— ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखलाये और हाथ धो ले।)

नैवेद्य— नैवेद्यमें बिल्वपत्र रखकर निम्नलिखित मन्त्र बोलकर भगवान्‌को भोग लगाये—

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वः सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। 'ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।' नैवेद्यान्ते ध्यानम्, ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि, मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, उत्तरापोशनं मुखप्रक्षालनार्थं हस्तप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदित करे, 'ॐ प्राणाय स्वाहा' आदि मन्त्रोंको पढ़े, तदनन्तर भगवान्‌का ध्यान करके आचमनके लिये जल चढ़ाये, पानीय जल चढ़ाये तथा उत्तरापोशन, मुखप्रक्षालन एवं हस्तप्रक्षालनके लिये पुनः जल चढ़ाये।)

करोद्वर्तन— ॐ सिञ्चति परि षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च।
सुरायै बभ्र्वै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः॥
चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दनका अनुलेपन करे।)

ऋतुफल— ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वᳬंहसः॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलानि निवेदयामि। (ऋतुफल चढ़ाये।)

ताम्बूल— ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लौंग-सुपारीके साथ पान समर्पित करे।)

द्रव्य-दक्षिणा— ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करे।)

स्तुति—हाथमें फूल लेकर निम्न स्तुति-पाठ करे—

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

(फूल भगवान्‌पर चढ़ा दे।)

[जिन्हें विस्तारपूर्वक विशेष-पूजा न करनी हो, वे इसके अनन्तर पृ०-सं० ६७ के अनुसार न्यास-ध्यानके साथ रुद्राभिषेक प्रारम्भ कर सकते हैं। तदनन्तर पृ०-सं० १९६ के अनुसार उत्तरपूजन तथा आरती आदि सम्पन्न करें।]

विशेष-पूजा

गन्ध, अक्षत और पुष्प अथवा बिल्वपत्र आदिसे भगवान् शिवकी अङ्गपूजा, गणपूजा तथा अष्टमूर्तिपूजा करे—

अङ्गपूजा—ॐ ईशानाय नमः, पादौ पूजयामि। ॐ शङ्कराय नमः, जङ्घे पूजयामि। ॐ शिवाय नमः, जानुनी पूजयामि। ॐ शूलपाणये नमः, गुल्फौ पूजयामि। ॐ शम्भवे नमः, कटी पूजयामि। ॐ स्वयम्भुवे नमः, गुह्यं पूजयामि। ॐ महादेवाय नमः, नाभिं पूजयामि। ॐ विश्वकर्त्रे नमः, उदरं पूजयामि। ॐ सर्वतोमुखाय नमः, पार्श्वे पूजयामि। ॐ स्थाणवे नमः, स्तनौ पूजयामि। ॐ नीलकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि। ॐ शिवात्मने नमः, मुखं पूजयामि। ॐ त्रिनेत्राय नमः, नेत्रे पूजयामि। ॐ नागभूषणाय नमः, शिरः पूजयामि। ॐ देवाधिदेवाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।

गणपूजा—ॐ गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ कार्तिकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥ ३ ॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥ ४ ॥ ॐ भैरवाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥ ६ ॥ ॐ ईश्वराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ दण्डपाणये नमः ॥ ८ ॥ ॐ नन्दिने नमः ॥ ९ ॥ ॐ महाकालाय नमः ॥ १० ॥

अष्टमूर्तिपूजा—ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः ॥ १ ॥ ॐ भवाय जलमूर्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॥ ४ ॥ ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॥ ५ ॥ ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये

नमः ॥ ६ ॥ ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥ ८ ॥

अष्टोत्तरशतशिवनामपूजा

अष्टोत्तरशतशिवनाम-पूजनसे पहले निम्न विनियोग करे—

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः। (एक आचमनी जल छोड़े।)

ध्यान—हाथ जोड़कर भगवान् श्रीसाम्बसदाशिवका ध्यान करे—

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ध्यानके अनन्तर भगवान् शिवके आगे लिखे १०८ नामोंसे शिवलिङ्गपर बिल्वपत्र चढ़ाये अथवा पुष्प-अक्षत आदिसे शिवपूजन करे—

१. ॐ शिवाय नमः, २. ॐ महेश्वराय नमः, ३. ॐ शम्भवे नमः, ४. ॐ पिनाकिने नमः,

५. ॐ शशिशेखराय नमः, ६. ॐ वामदेवाय नमः, ७. ॐ विरूपाक्षाय नमः, ८. ॐ कपर्दिने नमः, ९. ॐ नीललोहिताय नमः, १०. ॐ शङ्कराय नमः, ११. ॐ शूलपाणिने नमः, १२. ॐ खट्वाङ्गिने नमः, १३. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः, १४. ॐ शिपिविष्टाय नमः, १५. ॐ अम्बिकानाथाय नमः, १६. ॐ श्रीकण्ठाय नमः, १७. ॐ भक्तवत्सलाय नमः, १८. ॐ भवाय नमः, १९. ॐ शर्वाय नमः, २०. ॐ त्रिलोकेशाय नमः, २१. ॐ शितिकण्ठाय नमः, २२. ॐ शिवाप्रियाय नमः, २३. ॐ उग्राय नमः, २४. ॐ कपालिने नमः, २५. ॐ कामारये नमः, २६. ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः, २७. ॐ गङ्गाधराय नमः, २८. ॐ ललाटाक्षाय नमः, २९. ॐ कालकालाय नमः, ३०. ॐ कृपानिधये नमः, ३१. ॐ भीमाय नमः, ३२. ॐ परशुहस्ताय नमः, ३३. ॐ मृगपाणये नमः, ३४. ॐ जटाधराय नमः, ३५. ॐ कैलासवासिने नमः,३६. ॐ कवचिने नमः, ३७. ॐ कठोराय नमः, ३८. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः, ३९. ॐ वृषाङ्काय नमः, ४०. ॐ वृषभारूढाय नमः, ४१. ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः, ४२. ॐ सामप्रियाय नमः, ४३. ॐ स्वरमयाय नमः, ४४. ॐ त्रयीमूर्तये नमः, ४५. ॐ अनीश्वराय नमः, ४६. ॐ सर्वज्ञाय नमः, ४७. ॐ परमात्मने नमः, ४८. ॐ सोमलोचनाय नमः, ४९. ॐ सूर्यलोचनाय नमः, ५०. ॐ अग्निलोचनाय नमः, ५१. ॐ हविर्यज्ञमयाय नमः, ५२. ॐ सोमाय नमः, ५३. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः, ५४. ॐ सदाशिवाय नमः, ५५. ॐ विश्वेश्वराय नमः, ५६. ॐ वीरभद्राय नमः, ५७. ॐ गणनाथाय नमः, ५८. ॐ प्रजापतये नमः, ५९. ॐ हिरण्यरेतसे नमः,

६०. ॐ दुर्धर्षाय नमः, ६१. ॐ गिरीशाय नमः, ६२. ॐ गिरिशाय नमः, ६३. ॐ अनघाय नमः, ६४. ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः, ६५. ॐ भर्गाय नमः, ६६. ॐ गिरिधन्विने नमः, ६७. ॐ गिरिप्रियाय नमः, ६८. ॐ कृत्तिवाससे नमः, ६९. ॐ पुरारातये नमः, ७०. ॐ भगवते नमः, ७१. ॐ प्रमथाधिपाय नमः, ७२. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः, ७३. ॐ सूक्ष्मतनवे नमः, ७४. ॐ जगद्व्यापिने नमः, ७५. ॐ जगद्गुरवे नमः, ७६. ॐ व्योमकेशाय नमः, ७७. ॐ महासेनजनकाय नमः, ७८. ॐ चारुविक्रमाय नमः, ७९. ॐ रुद्राय नमः, ८०. ॐ भूतपतये नमः, ८१. ॐ स्थाणवे नमः, ८२. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः, ८३. ॐ दिगम्बराय नमः, ८४. ॐ अष्टमूर्तये नमः, ८५. ॐ अनेकात्मने नमः, ८६. ॐ सात्त्विकाय नमः, ८७. ॐ शुद्धविग्रहाय नमः, ८८. ॐ शाश्वताय नमः, ८९. ॐ खण्डपरशवे नमः, ९०. ॐ अजपाशविमोचकाय नमः, ९१. ॐ मृडाय नमः, ९२. ॐ पशुपतये नमः, ९३. ॐ देवाय नमः, ९४. ॐ महादेवाय नमः, ९५. ॐ अव्ययाय नमः, ९६. ॐ प्रभवे नमः, ९७. ॐ पूषदन्तभिदे नमः, ९८. ॐ अव्यग्राय नमः, ९९. ॐ दक्षाध्वरहराय नमः, १००. ॐ हराय नमः, १०१. ॐ भगनेत्रभिदे नमः, १०२. ॐ अव्यक्ताय नमः, १०३. ॐ सहस्राक्षाय नमः, १०४. ॐ सहस्रपदे नमः, १०५. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः, १०६. ॐ अनन्ताय नमः, १०७. ॐ तारकाय नमः, १०८. ॐ परमेश्वराय नमः।

विनियोग तथा षडङ्गन्यास

(१) 'ॐ मनोजूति'-रिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः, बृहती छन्दः, बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे विनियोगः। *(एक आचमनी विनियोगका जल छोड़े।)*

ॐ मनौजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं य्यज्ञꣳसमिमन्दधातु। व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ॥

ॐ हृदयाय नमः॥ *(दाहिने हाथकी पाँचों अँगुलियोंसे हृदयका स्पर्श करे।)*

(२) 'ॐ अबोद्ध्यग्नि'-रिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अग्निर्देवता, शिरोन्यासे विनियोगः। *(विनियोगका जल छोड़े।)*

ॐ अबौद्ध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्।
यह्वाऽ इवप्प्रवयामुज्जिहानाः प्प्रभानवः सिस्त्रतेनाकमच्छ॥

ॐ शिरसे स्वाहा॥ *(दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे मस्तकका स्पर्श करे।)*

(३) 'ॐ मूर्द्धानमिति' मन्त्रस्य भरद्वाजऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अग्निर्देवता, शिखान्यासे विनियोगः। *(विनियोगका जल छोड़े।)*

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्यावैश्श्वानरमृतऽआजातमग्निम्।
कविᳩ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः॥

ॐ शिखायै वषट्॥ *(दाहिने हाथके अँगूठेसे शिखाका स्पर्श करे।)*

(४) 'ॐ मर्माणि ते' इति मन्त्रस्य अप्रतिरथऋषिः, विराट्छन्दः, मर्म्माणि देवता,

कवचन्यासे विनियोगः। *(विनियोगका जल छोड़े।)*

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्।
उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ॥

ॐ कवचाय हुम्॥ *(दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे बायें कंधेका और बायें हाथकी अँगुलियोंसे दायें कंधेका एक साथ ही स्पर्श करे।)*

(५) **'ॐ व्विश्श्वतश्चक्षु'**-रिति मन्त्रस्य विश्वकर्माभौवनऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, विश्वकर्मा देवता, नेत्रन्यासे विनियोगः। *(विनियोगका जल छोड़े।)*

ॐ व्विश्श्वतश्चक्षुरुतव्विश्श्वतोमुखोव्विश्श्वतोबाहुरुतव्विश्श्वतस्पात्।
सम्बाहुब्भ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवएकः ॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्॥ *(दाहिने हाथकी अनामिका और तर्जनीसे क्रमशः वाम तथा दक्षिण नेत्र एवं मध्यमासे ललाटके मध्य भागका एक साथ ही स्पर्श करे।)*

(६) 'ॐ मानस्तोके' इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः, जगती छन्दः, एको रुद्रो देवता, अस्त्रन्यासे विनियोगः। *(विनियोगका जल छोड़े।)*

मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः ।
मानोव्वीरान्नुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे॥

ॐ अस्त्राय फट्॥ *(दायें हाथको प्रदक्षिण-क्रमसे सिरके पीछेसे घुमाकर बायें हाथकी हथेलीपर मध्यमा और तर्जनीसे ताली बजाये।)*

इस प्रकार षडङ्गन्यास करनेके अनन्तर हाथमें पुष्प लेकर आगे लिखे मन्त्रसे भगवान् सदाशिवका ध्यान करे—

ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

चाँदीके पर्वतके समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमाको आभूषणरूपसे धारण करते हैं, रत्नमय अलङ्कारोंसे जिनका शरीर उज्ज्वल है, जिनके हाथोंमें परशु, मृग, वर और अभय विद्यमान हैं, जो प्रसन्न हैं, जो पद्मके आसनपर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघकी खाल पहनते हैं, जो विश्वके आदि, जगत्की उत्पत्तिके बीज और समस्त भयोंको हरनेवाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वरका प्रतिदिन ध्यान करे।

|| श्रीहरिः ||

|| श्रीगणेशाय नमः ||

माध्याइन्दीनी
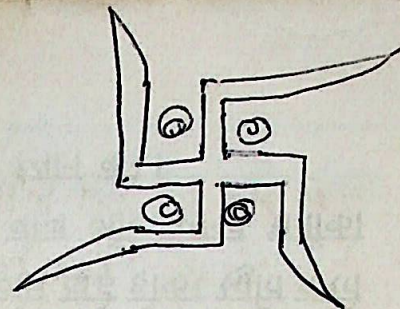
रुद्राष्टाध्यायी

प्रथमोऽध्यायः

श्रीगणेशाय नमः || हरिः ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहे प्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳहवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳहवामहेव्वसोमम। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ||१|| गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टु-प्पङ्क्त्यासह । बृहत्त्युष्णिहाककुप्प्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ||२||

पहला अध्याय

श्रीगणेशजीके लिये नमस्कार है। समस्त गणोंका पालन करनेके कारण गणपतिरूपमें प्रतिष्ठित आपको हम आवाहित करते हैं, प्रियजनोंका कल्याण करनेके कारण प्रियपतिरूपमें प्रतिष्ठित आपको हम आवाहित करते हैं और पद्म आदि निधियोंका स्वामी होनेके कारण निधिपतिरूपमें प्रतिष्ठित आपको हम आवाहित करते हैं। हे हमारे परम धनरूप ईश्वर! आप मेरी रक्षा करें। मैं गर्भसे उत्पन्न हुआ जीव हूँ और आप गर्भादिरहित स्वाधीनतासे प्रकट हुए परमेश्वर हैं। आपने ही हमें माताके गर्भसे उत्पन्न किया है॥ १॥ हे परमेश्वर! गान करनेवालेका रक्षक गायत्री छन्द, तीनों तापोंका रोधक त्रिष्टुप् छन्द, जगत्में विस्तीर्ण जगती छन्द, संसारका कष्टनिवारक अनुष्टुप् छन्द, पंक्ति छन्दसहित बृहती छन्द, प्रभातप्रियकारी उष्णिक् छन्दके साथ ककुप् छन्द—ये सभी छन्द सुन्दर उक्तियोंके द्वारा आपको शान्त करें॥ २॥

द्विपदा॒याश्च्चतुष्प्पदा॒स्त्रिपदा॒याश्च्च॒षट्प्पदाः ॥ व्विच्छन्दा॒याश्च्च॒स- च्छन्दाःसू॒चीभिः॑शम्म्यन्तुत्त्वा ॥३॥ स॒हस्तोमाःस॒हछन्दस॒ऽआ॒वृतः॑स॒- हप्प्रमा॒ऽऋषयःस॒प्प्तदैव्व्याः ॥ पूर्व्वेषा॒म्पन्थामनु॒दृश्य॒धीराऽअ॒न्वालेभि- रे॒रत्थ्यो॒नर॒श्मीन्॥४॥ यज्जाग्ग्रतो दूरमु॒दैति॒दैव॒न्तदु॒सु॒प्प्तस्य॒तथै॒वैति॥ दू॒र॒ङ्ग॒मञ्ज्योतिषा॒ञ्ज्योति॒रेक॒न्तन्मे॒मनः॑शि॒वसङ्कल्प्पमस्तु ॥५॥ येन॒कर्म्माण्य॒पसोमनी॒षिणोय॒ज्ञेकृ॒ण्वन्ति॒व्वि॒दथे॒षु॒धीराः ॥ यदपू॒र्व्वंय्य॒क्ष- म॒न्तः प्प्र॒जाना॒न्तन्मे॒मनः॑शि॒वसङ्कल्प्पमस्तु ॥६॥

हे ईश्वर! दो पादवाले, चार पादवाले, तीन पादवाले, छः पादवाले, छन्दोंके लक्षणोंसे रहित अथवा छन्दोंके लक्षणोंसे युक्त वे सभी छन्द सुन्दर उक्तियोंके द्वारा आपको शान्त करें॥ ३॥ प्रजापतिसम्बन्धी मरीचि आदि सात बुद्धिमान् ऋषियोंने स्तोम आदि साममन्त्रों, गायत्री आदि छन्दों, उत्तम कर्मों तथा श्रुतिप्रमाणोंके साथ अङ्गिरा आदि अपने पूर्वजोंके द्वारा अनुष्ठित मार्गका अनुसरण करके सृष्टियज्ञको उसी प्रकार क्रमसे सम्पन्न किया था जैसे रथी लगामकी सहायतासे अश्वको अपने अभीष्ट स्थानकी ओर ले जाता है॥ ४॥ जो मन जागते हुए मनुष्यसे बहुत दूरतक चला जाता है, वही द्युतिमान् मन सुषुप्ति अवस्थामें सोते हुए मनुष्यके समीप आकर लीन हो जाता है तथा जो दूरतक जानेवाला और जो प्रकाशमान श्रोत्र आदि इन्द्रियोंको ज्योति देनेवाला है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो॥ ५॥ कर्मानुष्ठानमें तत्पर बुद्धिसम्पन्न मेधावी पुरुष यज्ञमें जिस मनसे शुभ कर्मोंको करते हैं, प्रजाओंके शरीरमें और यज्ञीयपदार्थोंके ज्ञानमें जो मन अद्भुत पूज्यभावसे स्थित है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो॥ ६॥

यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु॥ यस्मान्नऽऋृते-किञ्चनकर्म्मक्रियतेतन्म्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥७॥ येनेदम्भूतम्भुव-नम्भविष्ष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्व्वम्॥ येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्म्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥८॥ यस्मिन्नृचः सामयजूᳬषियस्मिन्प्रतिष्ठि-तारथनाभाविवाराः॥ यस्मिँश्चित्तᳬसर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्म्मेमनः शिव-सङ्कल्प्पमस्तु॥९॥ सुषारथिरश्श्वानिवयन्मनुष्ष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिन-ऽइव॥ हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्म्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु॥१०॥

॥ इति रुद्रपाठे प्रथमोध्यायः ॥ १॥

जो मन प्रकर्ष ज्ञानस्वरूप, चित्तस्वरूप और धैर्यरूप है; जो अविनाशी मन प्राणियोंके भीतर ज्योतिरूपसे विद्यमान है और जिसकी सहायताके बिना कोई कर्म नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ ७ ॥ जिस शाश्वत मनके द्वारा भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकालकी सारी वस्तुएँ सब ओरसे ज्ञात होती हैं और जिस मनके द्वारा सात होतावाला यज्ञ विस्तारित किया जाता है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ ८ ॥ जिस मनमें ऋग्वेदकी ऋचाएँ और जिसमें सामवेद तथा यजुर्वेदके मन्त्र उसी प्रकार प्रतिष्ठित हैं, जैसे रथचक्रकी नाभिमें अरे (तीलियाँ) जुड़े रहते हैं, जिस मनमें प्रजाओंका सारा ज्ञान [पटमें तन्तुकी भाँति] ओतप्रोत रहता है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ ९ ॥ जो मन मनुष्योंको अपनी इच्छाके अनुसार उसी प्रकार घुमाता रहता है, जैसे कोई अच्छा सारथि लगामके सहारे वेगवान् घोड़ोंको अपनी इच्छाके अनुसार नियन्त्रित करता है; बाल्य, यौवन, वार्धक्य आदिसे रहित तथा अतिवेगवान् जो मन हृदयमें स्थित है, वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्पवाला हो ॥ १० ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का पहला अध्याय पूर्ण हुआ ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः

हरिः ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्वत-स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥ पुरुषऽएवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥२॥ एतावानस्य महिमातो ज्ज्याꣳश्च पूरुषः॥ पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥३॥ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः॥ ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥४॥

दूसरा अध्याय

सभी लोकोंमें व्याप्त महानारायण सर्वात्मक होनेसे अनन्त सिरवाले, अनन्त नेत्रवाले और अनन्त चरणवाले हैं। वे पाँच तत्त्वोंसे बने इस गोलकरूप समस्त व्यष्टि और समष्टि ब्रह्माण्डको सब ओरसे व्याप्त कर नाभिसे दस अंगुल परिमित देशका अतिक्रमण कर हृदयमें अन्तर्यामीरूपमें स्थित हैं ॥ १ ॥ जो यह वर्तमान जगत् है, जो अतीत जगत् है और जो भविष्यमें होनेवाला जगत् है, जो जगत्के बीज अथवा अन्नके परिणामभूत वीर्यसे नर, पशु, वृक्ष आदिके रूपमें प्रकट होता है, वह सब कुछ अमृतत्व (मोक्ष)-के स्वामी महानारायण पुरुषका ही विस्तार है ॥ २ ॥ इस महानारायण पुरुषकी इतनी सब विभूतियाँ हैं अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमानमें विद्यमान सब कुछ उसीकी महिमाका एक अंश है। वह विराट् पुरुष तो इस संसारसे अतिशय अधिक है। इसीलिये यह सारा विराट् जगत् इसका चतुर्थांश है। इस परमात्माका अवशिष्ट तीन पाद अपने अमृतमय (विनाशरहित) प्रकाशमान स्वरूपमें स्थित है ॥ ३ ॥ यह महानारायण पुरुष अपने तीन पादोंके साथ ब्रह्माण्डसे ऊपर उस दिव्य लोकमें अपने सर्वोत्कृष्ट स्वरूपमें निवास करता है और अपने एक चरण (चतुर्थांश)-से इस संसारको व्याप्त करता है। अपने इसी चरणको मायामें प्रविष्ट कराकर यह महानारायण देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी आदिके नानारूप धारण कर समस्त चराचर जगत्में व्याप्त है ॥ ४ ॥

ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्यरिच्च्यत-पश्च्चाद्भूमिमथोपुरः॥५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्चक्क्रेव्वायव्व्यानारण्ण्याग्ग्राम्म्याश्च्चये॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे॥ छन्दाᳬंसिजज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्तस्म्माद‌जायत॥७॥ तस्म्मादश्श्वाऽ अजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्ज्जाताऽअजावयः॥८॥ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्न्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्च्चये॥९॥

उस महानारायण पुरुषसे सृष्टिके प्रारम्भमें विराट्स्वरूप ब्रह्माण्डदेह तथा उस देहका अभिमानी पुरुष (हिरण्यगर्भ) प्रकट हुआ। उस विराट् पुरुषने उत्पन्न होनेके साथ ही अपनी श्रेष्ठता स्थापित की। बादमें उसने भूमिका, तदनन्तर देव, मनुष्य आदिके पुरों (शरीरों)-का निर्माण किया॥ ५॥ उस सर्वात्मा महानारायणने सर्वात्मा पुरुषका जिसमें यजन किया जाता है, ऐसे यज्ञसे पृषदाज्य (दधिसे मिश्रित घृत)-को सम्पादित किया। उस महानारायणने उन वायुदेवतावाले पशुओं तथा जो हरिण आदि वनवासी तथा अश्व आदि ग्रामवासी पशु थे उनको भी उत्पन्न किया॥ ६॥ उस सर्वहुत यज्ञपुरुषसे ऋग्वेद और सामवेद उत्पन्न हुए, उसीसे सर्वविध छन्द उत्पन्न हुए और यजुर्वेद भी उसी यज्ञपुरुषसे उत्पन्न हुआ॥ ७॥ उसी यज्ञपुरुषसे अश्व उत्पन्न हुए और वे सब प्राणी उत्पन्न हुए जिनके ऊपर-नीचे दोनोंतरफ दाँत हैं। उसी यज्ञपुरुषसे गौएँ उत्पन्न हुईं और उसीसे भेंड़-बकरियाँ पैदा हुईं॥ ८॥ सृष्टिसाधन-योग्य या देवताओं और सनक आदि ऋषियोंने मानस यागकी सम्पन्नताके लिये सृष्टिके पूर्व उत्पन्न उस यज्ञसाधनभूत विराट् पुरुषका प्रोक्षण किया और उसी विराट् पुरुषसे ही इस यज्ञको सम्पादित किया॥ ९॥

यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥१०॥ ब्ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यःकृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्द्रोऽअजायत॥११॥ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत॥१२॥ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्पयन् ॥१३॥ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्न्वत॥ व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥१४॥ सप्प्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्प्तसमिधःकृताः॥ देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥१५॥

जब यज्ञसाधनभूत इस विराट् पुरुषकी महानारायणसे प्रेरित महत्, अहंकार आदिकी प्रक्रियासे उत्पत्ति हुई, तब उसके कितने प्रकारोंकी परिकल्पना की गयी? उस विराट्के मुँह, भुजा, जंघा और चरणोंका क्या स्वरूप कहा गया है? ॥ १० ॥ ब्राह्मण उस यज्ञोत्पन्न विराट् पुरुषका मुखस्थानीय होनेके कारण उसके मुखसे उत्पन्न हुआ, क्षत्रिय उसकी भुजाओंसे उत्पन्न हुआ, वैश्य उसकी जाँघोंसे उत्पन्न हुआ तथा शूद्र उसके चरणोंसे उत्पन्न हुआ ॥ ११ ॥ विराट् पुरुषके मनसे चन्द्रमा उत्पन्न हुआ, नेत्रसे सूर्य उत्पन्न हुआ, कानसे वायु और प्राण उत्पन्न हुए तथा मुखसे अग्नि उत्पन्न हुई ॥ १२ ॥ उस विराट् पुरुषकी नाभिसे अन्तरिक्ष उत्पन्न हुआ और सिरसे स्वर्ग प्रकट हुआ। इसी तरहसे चरणोंसे भूमि और कानोंसे दिशाओंकी उत्पत्ति हुई। इसी प्रकार देवताओंने उस विराट् पुरुषके विभिन्न अवयवोंसे अन्य लोकोंकी कल्पना की ॥ १३ ॥ जब विद्वानोंने इस विराट् पुरुषके देहके अवयवोंको ही हवि बनाकर इस ज्ञानयज्ञकी रचना की, तब वसन्त ऋतु घृत, ग्रीष्म ऋतु समिधा और शरद् ऋतु हवि बनी थी ॥ १४ ॥ जब इस मानस यागका अनुष्ठान करते हुए देवताओंने इस विराट् पुरुषको ही पशुके रूपमें भावित किया; उस समय गायत्री आदि सात छन्दोंने सात परिधियोंका स्वरूप स्वीकार किया; बारह मास, पाँच ऋतु, तीन लोक और सूर्यदेवको मिलाकर इक्कीस अथवा गायत्री आदि सात, अतिजगती आदि सात और कृति आदि सात छन्दोंको मिलाकर इक्कीस समिधाएँ बनीं ॥ १५ ॥

यज्ञेनयज्ञम यजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः ॥१६॥ अद्भ्यःसम्भृतः पृथिव्यैरसाच्चविश्श्वकर्म्मणःसमवर्त्तताग्ग्रे॥ तस्यत्त्वष्टाविदधद्रूपमेतितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्ग्रे॥१७॥ वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्ण्णन्तमसःपरस्तात्॥ तमेवविदित्त्वातिमृत्युमेतिनान्न्यः पन्थाविद्यतेऽयनाय॥१८॥ प्रजापतिश्श्चरतिगर्ब्भेऽअन्तरजायमानोबहुधाविजायते॥ तस्ययोनिम्परिपश्यन्तिधीरास्तस्मिन्हतस्थुर्ब्भुवनानिविश्श्वा॥१९॥

सिद्ध संकल्पवाले देवताओंने विराट् पुरुषके अवयवोंकी हविके रूपमें कल्पना कर इस मानस-यज्ञमें यज्ञपुरुष महानारायणकी आराधना की। बादमें ये ही महानारायणकी उपासनाके मुख्य उपादान बने। जिस स्वर्गमें पुरातन साध्य देवता रहते हैं, उस दुःखसे रहित लोकको ही महानारायण यज्ञपुरुषकी उपासना करनेवाले भक्तगण प्राप्त करते हैं ॥ १६ ॥ उस महानारायणकी उपासनाके और भी प्रकार हैं—पृथिवी और जलके रससे अर्थात् पाँच महाभूतोंके रससे पुष्ट, सारे विश्वका निर्माण करनेवाले, उस विराट् स्वरूपसे भी पहले जिसकी स्थिति थी, उस रसके रूपको धारण करनेवाला वह महानारायण पुरुष पहले आदित्यके रूपमें उदित होता है। प्रथम मनुष्यरूप उस पुरुष-मेधयाजीका यह आदित्यरूपमें अवतरित ब्रह्म ही मुख्य आराध्य देवता बनता है ॥ १७ ॥ आदित्यस्वरूप, अविद्याके लवलेशसे भी रहित तथा ज्ञानस्वरूप परम पुरुष उस महानारायणको मैं जानता हूँ। कोई भी प्राणी उस आदित्यरूप महानारायण पुरुषको जान लेनेके उपरान्त ही मृत्युका अतिक्रमण कर अमृतत्वको प्राप्त करता है। परम आश्रयके निमित्त अर्थात् अमृतत्वकी प्राप्तिके लिये इससे भिन्न कोई दूसरा उपाय नहीं है ॥ १८ ॥ सर्वात्मा प्रजापति अन्तर्यामीरूपसे गर्भके मध्यमें प्रकट होता है। जन्म न लेता हुआ भी वह देवता, तिर्यक्, मनुष्य आदि योनियोंमें नाना रूपोंमें प्रकट होता है। ब्रह्मज्ञानी ब्रह्माके उत्पत्ति-स्थान उस महानारायण पुरुषको सब ओरसे देखते हैं, जिसमें सभी लोक स्थित हैं ॥ १९ ॥

योदेवेब्भ्यऽआतपतियोदेवानाम्पुरोहितः॥ पूर्व्वोयोदेवेब्भ्योजातोन-मोरुचायब्ब्राह्मये॥२०॥ रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदब्ब्रुवन्॥ यस्त्वैवं-ब्ब्राह्मणो व्विद्यात्तस्यदेवाऽअसन्वशे॥२१॥ श्रीश्श्चतेलक्ष्मीश्श्चपत्न्यावहोरात्त्रेपाश्र्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण-सर्व्वलोकम्मऽइषाण॥२२॥

॥ इति रुद्रपाठे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥
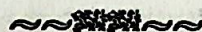
जो आदित्यस्वरूप प्रजापति सभी देवताओंको शक्ति प्रदान करनेके लिये सदा प्रकाशित रहता है, जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओंका बहुत पूर्वकालसे हिंत करता आया है, जो इन सबका पूज्य है, जो इन सब देवताओंसे पहले प्रादुर्भूत हुआ है, उस ब्रह्मज्योतिस्वरूप परम पुरुषको हम प्रणाम करते हैं ॥ २० ॥ इन्द्रियोंके अधिष्ठाता देवताओंने शोभन ब्रह्मज्योतिरूप आदित्य देवको प्रकट करते हुए सर्वप्रथम यह कहा कि हे आदित्य! जो ब्राह्मण आपके इस अजर-अमर स्वरूपको जानता है, समस्त देवगण उस उपासकके वशमें रहते हैं ॥ २१ ॥ हे महानारायण आदित्य! श्री और लक्ष्मी आपकी पत्नियाँ हैं, ब्रह्माके दिन-रात पार्श्व-स्वरूप हैं, आकाशमें स्थित नक्षत्र आपके स्वरूप हैं। द्यावापृथिवी आपके विकसित मुख हैं। प्रयत्नपूर्वक आप सदा मेरे कल्याणकी इच्छा करें। मुझे आप अपना कल्याणमय लोक प्राप्त करावें और सारे योगैश्वर्य मुझे प्रदान करें ॥ २२ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का दूसरा अध्याय पूर्ण हुआ ॥ २ ॥

तृतीयोऽध्यायः

हरिः॑ ॐ आ॒शुः॒ शिशा॑नो वृष॒भो न भी॒मो घ॑नाघ॒नः क्षोभ॑णश्चर्षणी॒नाम्॥
स॒ङ्क्रन्द॑नोऽनिमि॒ष ए॑कवी॒रः श॒तꣳ सेना॑ अजयत्सा॒कमिन्द्रः॑॥१॥ स॒ङ्क्रन्द॑नेना-
निमि॒षेण॑ जि॒ष्णुना॑ युत्का॒रेण॑ दुश्च्य॒व॒नेन॑ धृ॒ष्णुना॑॥ तदिन्द्रे॑ण जयत॒ तत्स॑हद्ध्वं॒ युधो॑
नर॒ इषु॑हस्तेन॒ वृष्णा॑॥२॥ स इषु॑हस्तैः॒ स नि॑ष॒ङ्गिभि॑र्व॒शी सꣳस्र॑ष्टा॒ स युध॒ऽ-
इन्द्रो॑ ग॒णेन॑॥ स॒ꣳसृ॒ष्ट॒जित्सो॑म॒पा बा॑हुश॒र्द्ध्यु॑ग्रध॑न्वा॒ प्रति॑हिताभि॒रस्ता॑॥३॥
बृह॑स्पते॒ परि॑दीया॒ रथे॑न रक्षो॒हामित्राँ॑२॥ अप॒बाध॑मानः॥ प्र॒भ॒ञ्जन्त्सेनाः॑ प्र॒मृ॒णो-
यु॒धा जय॑न्न॒स्माक॑मेद्ध्यवि॒ता रथा॑नाम्॥४॥

तीसरा अध्याय

शीघ्रगामी, वज्रके समान तीक्ष्ण, वर्षाके स्वभावकी उपमावाले, भयकारी, शत्रुओंके अतिशय घातक, मंनुष्योंके क्षोभके हेतु, बार–बार गर्जन करनेवाले, देवता होनेसे पलक न झपकानेवाले, अत्यन्त सावधान तथा अद्वितीय वीर इन्द्र एक साथ ही शत्रुओंकी सैकड़ों सेनाओंको जीत लेते हैं॥ १॥ हे युद्ध करनेवाले मनुष्यो! प्रगल्भ तथा भयरहित शब्द करनेवाले, अनेक युद्धोंको जीतनेवाले, युद्धरत, एकचित्त होकर हाथमें बाण धारण करनेवाले, जयशील तथा स्वयं अजेय और कामनाओंकी वर्षा करनेवाले इन्द्रके प्रभावसे उस शत्रुसेनाको जीतो और उसे अपने वशमें करके विनष्ट कर दो॥ २॥ वे जितेन्द्रिय अथवा शत्रुओंको अधीन करनेवाले, हाथमें बाण लिये हुए धनुर्धारियोंको युद्धके लिये ललकारनेवाले इन्द्र शत्रुसमूहोंको एक साथ युद्धमें जीत सकते हैं। यजमानोंके यज्ञमें सोमपान करनेवाले, बाहुबली तथा उत्कृष्ट धनुषवाले वे इन्द्र अपने धनुषसे छोड़े हुए बाणोंसे शत्रुओंका नाश कर देते हैं। वे इन्द्र हमारी रक्षा करें॥ ३॥ हे बृहस्पते! आप राक्षसोंका नाश करनेवाले होवें, रथके द्वारा सब ओर विचरण करें, शत्रुओंको पीड़ित करते हुए और उनकी सेनाओंको अतिशय हानि पहुँचाते हुए युद्धमें हिंसाकारियोंको जीतकर हमारे रथोंकी रक्षा करें॥ ४॥

बलविज्ञाय स्त्थविरः प्प्रवीरः सहस्वान्वाजीसहमानऽउग्ग्रः ॥ अभि-
वीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ॥५॥ गोत्रभिदङ्गो-
विदंव्वज्ज्रबाहुञ्जयन्तमज्ज्मप्प्रमृणन्तमोजसा ॥ इमꣳ सजाताऽअनुवीरय-
द्ध्वमिन्द्रꣳ सखायोऽअनुसꣳरभद्ध्वम् ॥६॥ अभिगोत्राणिसहसा-
गाहमानोदयोव्वीरः शतमन्न्युरिन्द्रः ॥ दुश्श्च्यवनः पृतनाषाडयुद्ध्योऽस्मा-
कꣳसेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु ॥७॥ इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽ-
एतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम् ॥८॥

हे इन्द्र! आप दूसरोंका बल जाननेवाले, अत्यन्त पुरातन, अतिशय शूर, महाबलिष्ठ, अन्नवान्, युद्धमें क्रूर, चारों तरफसे वीर योद्धाओंसे युक्त, सभी ओरसे परिचारकोंसे आवृत, बलसे ही उत्पन्न, स्तुतिको जाननेवाले तथा शत्रुओंका तिरस्कार करनेवाले हैं; आप अपने जयशील रथपर आरोहण करें॥ ५॥ हे समान जन्मवाले देवताओ! असुरकुलके नाशक, वेदवाणीके ज्ञाता, हाथमें वज्र धारण करनेवाले, संग्रामको जीतनेवाले, बलसे शत्रुओंका संहार करनेवाले इस इन्द्रको पराक्रम दिखानेके लिये उत्साह दिलाइये और इसको उत्साहित करके आपलोग स्वयं भी उत्साहसे भर जाइये॥ ६॥ शत्रुओंके प्रति दयाहीन, पराक्रमसम्पन्न, अनेक प्रकारसे क्रोधयुक्त अथवा सैकड़ों यज्ञ करनेवाले,दूसरोंसे विनष्ट न होने योग्य, शत्रुसेनाका संहार करनेवाले तथा किसीके भी द्वारा प्रहरित न हो सकनेवाले इन्द्र संग्रामोंमें असुरकुलोंका एक साथ नाश करते हुए हमारी सेनाकी रक्षा करें॥ ७॥ बृहस्पति तथा इन्द्र सभी प्रकारकी शत्रु-सेनाओंका मर्दन करनेवाली विजयशील देवसेनाओंके नायक हैं। यज्ञपुरुष विष्णु, सोम और दक्षिणा इनके आगे-आगे चलें। सभी मरुद्गण भी सेनाके आगे-आगे चलें॥ ८॥

इन्द्रस्य्वृष्ष्णोव्वरुणस्य्राज्ञऽआदित्यानाम्मरुताᳬंशर्द्धऽउग्ग्रम्॥ महा-मनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषौदेवानाञ्जयतामुदस्थात्॥९॥ उर्द्धर्षयमघवन्ना-युधान्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाᳬंसि॥ उद्वृत्रहन्वाजिनांव्वाजिनान्युद्द्र-थानाञ्जयतांय्यन्तुघोषाः॥१०॥ अस्म्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्वजेष्ष्वस्म्माकं-य्याऽइषवस्ताजयन्तु॥ अस्माकंव्वीराऽउत्तरेभवन्त्वस्म्माँ२॥ ऽउदेवाऽअवता-हवेषु॥११॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्तीगृहाणाङ्गान्यप्प्वेपरेहि॥ अभि-प्रेहिनिर्द्दहहृत्सु शोकैरन्धेनामित्त्रास्तमसासचन्ताम्॥१२॥ अवसृष्टापरापत-शरव्येब्ब्रह्मसᳬंशिते॥ गच्छामित्त्रान्प्रपद्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः॥१३॥

महानुभाव, सारे लोकोंका नाश करनेकी सामर्थ्यवाले तथा विजय पानेवाले देवताओं, बारह आदित्यों, मरुद्गणों, कामनाकी वर्षा करनेवाले इन्द्र और राजा वरुणकी सभासे जय-जयकारका शब्द उठ रहा है ॥ ९ ॥ हे इन्द्र! आप अपने शस्त्रोंको भली प्रकार सुसज्जित कीजिये, मेरे वीर सैनिकोंके मनको हर्षित कीजिये। हे वृत्रनाशक इन्द्र! अपने घोड़ोंकी गतिको तेज कीजिये, विजयशील रथोंसे जयघोषका उच्चारण हो ॥ १० ॥ शत्रुकी पताकाओंसे हमारी पताकाओंके मिलनेपर इन्द्र हमारी रक्षा करें, हमारे बाण शत्रुओंको नष्टकर उनपर विजय प्राप्त करें और हमारे वीर सैनिक शत्रुओंके सैनिकोंसे श्रेष्ठता प्राप्त करें। हे देवगण! आप लोग संग्रामोंमें हमारी रक्षा कीजिये ॥ ११ ॥ हे शत्रुओंके प्राणोंको कष्ट देनेवाली व्याधि! इन वैरियोंके चित्तको मोहित करती हुई इनके सिर आदि अङ्गोंको ग्रहण करो, तत्पश्चात् दूर चली जाओ और पुनः उनके पास जाकर उनके हृदयोंको शोकसे दग्ध कर दो। हमारे शत्रु घने अन्धकारसे आच्छन्न हो जायँ ॥ १२ ॥ वेद-मन्त्रोंसे तीक्ष्ण किये हुए हे बाणरूप ब्रह्मास्त्र! मेरे द्वारा प्रक्षिप्त किये गये तुम शत्रुसेनापर गिरो, शत्रुके पास पहुँचो और उनके शरीरोंमें प्रवेश करो। इनमेंसे किसीको भी जीवित न छोड़ो ॥ १३ ॥

प्रेता॒जय॑ता नर॒ऽइन्द्रो॑वः॒ शर्म्म॑यच्छतु ॥ उ॒ग्राव॑ःसन्तु बा॒हवो॑नाधृ॒ष्या॑-
यथास॑थ ॥ १४ ॥ अ॒सौया॑सेना॑मरुतः॒ परे॑षाम॒भ्यैति॑न॒ऽओज॑सा॒स्प्पर्द्ध॑-
माना ॥ ताँ॒ह॑त॒ तम॒साप॑व्रतेन॒यथा॒मीऽअ॒न्न्योऽअ॒न्न्यन्नजा॒नन् ॥ १५ ॥ यत्र॑-
बा॒णाः॒ स॒म्पत॑न्ति कु॒मा॒रावि॑शि॒खाऽइ॑व ॥ तन्न॒इन्द्रो॒बृह॒स्प्पति॒रदि॑तिः॒ शर्म्म॑-
यच्छतु वि॒श्श्वाहा॒शर्म्म॑यच्छतु ॥ १६ ॥ मर्म्मा॑णि ते॒वर्म्म॑णाच्छादयामि॒-
सोम॑स्त्वा॒राजा॒मृते॑ना॒नु व॑स्ताम् ॥ उ॒रोर्व्वरी॑यो॒वरु॑णस्ते कृणोतु॒ जय॑न्त॒न्त्वानु॒देवा॑-
मदन्तु ॥ १७ ॥

॥ इति रुद्रपाठे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय

हे सूर्यदेव! यजमानमें अखण्डित आयु स्थापित करते हुए आप इस अत्यन्त स्वादु सोमरूप हविका पान कीजिये। जो सूर्यदेव वायुसे प्रेरित आत्माद्वारा प्रजाका पालन और पोषण करते हैं, वे अनेक रूपोंमें आलोकित होते हैं ॥ १ ॥ सूर्यरश्मियाँ सम्पूर्ण जगत्को आलोक प्रदान करनेके लिये जातवेदस् (अग्नितेजोमय) सूर्यदेवको ऊपरकी ओर ले जाती रहती हैं ॥ २ ॥ सबको शुद्ध करनेवाले हे वरुणदेव! आप जिस अनुग्रह-दृष्टिसे उस सुपर्ण स्वरूपको देखते हैं, उसी चक्षुसे आप हम ऋत्विजोंको भी देखिये ॥ ३ ॥ हे दिव्य अश्विनीकुमारो! आप दोनों सूर्यके समान कान्तिमान् रथसे हमारे यहाँ आइये और पुरोडाश, दधि आदिसे यज्ञको सींचकर उसे बहुत हविवाला बनाइये ॥ ४ ॥ हे इन्द्र! आप जिन यज्ञक्रियाओंमें पुनः-पुनः सोमरसका पान कर वृद्धिको प्राप्त होते हैं, उन उत्कृष्ट विस्तारवान् सर्वश्रेष्ठ यज्ञोंमें कुश आसनके सेवी, स्वर्गवेत्ता, शत्रुओंको कम्पित करनेवाले तथा जेतव्य वस्तुओंको शीघ्र जीतनेवाले आप बलपूर्वक यजमानको यज्ञफल प्रदान करते हैं, जैसे पुरातन भृगु आदि ऋषियों, पूर्व पितर आदि, विश्वके सभी प्राणियों तथा वर्तमान यजमानोंने आपकी [स्तु]ति की है, उसी प्रकार हम आपकी स्तुति करते हैं ॥ ५ ॥

अयंव्वेनश्च्चोदयत्पृश्श्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्जरायूरजसोव्विमानै॥ इममपाᳬंसङ्गमेसूर्य्यस्यशिशुन्नव्विप्प्रामतिभीरिहन्ति॥६॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्यव्वरुणस्याग्ग्नेः॥ आप्प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षᳬंसूर्य्यऽआत्त्माजगतस्तस्त्थुषश्श्च॥७॥ आनऽइडाभिर्व्विदथेसुशस्तिव्विश्श्वानरᳬं सवितादेवऽएतु॥ अपियथायुवानोमत्सथानोव्विश्श्वञ्जगदभिपित्त्वेमनीषा॥८॥ यदद्यकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्य्य॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे॥९॥ तरणिर्व्विश्श्वदर्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य॥ व्विश्श्वमाभासिरोचनम्॥१०॥

विद्युत्के लक्षणोंवाली ज्योतिसे परिवृत यह कान्तिमान् चन्द्र ग्रीष्मान्तके समय जलनिर्माणके निमित्त सूर्य अथवा द्युलोकके गर्भमें स्थित रहनेवाले जलको प्रेरित करता है। बुद्धिमान् विप्रगण सूर्यसे जलकी संगतिके समय मधुर वाणियोंसे इस सोमकी उसी प्रकार स्तुति करते हैं, जैसे लोग मधुर वचनोंसे अपने शिशुको प्रसन्न करते हैं॥ ६॥ यह कैसा आश्चर्य है कि देवताओंके जीवनाधार, तेजसमूह तथा मित्र, वरुण और अग्निके नेत्रस्वरूप सूर्य उदयको प्राप्त हुए हैं! स्थावर-जंगममय जगत्के आत्मास्वरूप इन सूर्यदेवने पृथिवी, द्युलोक और अन्तरिक्षको अपने तेजसे पूर्णतः व्याप्त कर रखा है॥ ७॥ सब जीवोंके हितकारी, अन्तर्यामी सूर्यदेव हमारी सुन्दर आहुतियोंके कारण प्रशंसायोग्य यज्ञशालामें प्रकट हों। हे जरारहित देवताओ! आगमन-कालपर जिस प्रकार आप सब तृप्त होते हैं, उसी प्रकार इस सारे जगत्को भी प्रज्ञासे तृप्त करें॥ ८॥ हे अन्धकारके नाशक ऐश्वर्ययुक्त सूर्यदेव! आज जहाँ कहीं भी आप उदित होते हैं, वह सब स्थान आपके ही वशमें हो जाता है॥ ९॥ हे सूर्यदेव! आप संसार-सागरमें नौकाके समान हैं, सबके दर्शनयोग्य हैं तथा सबको तेज प्रदान करनेवाले हैं। प्रकाशित होनेवाले सारे संसारको आप ही प्रकाशित करते हैं अर्थात् अग्नि, विद्युत्, नक्षत्र, चन्द्रमा, ग्रह, तारे आदिमें आपकी ही ज्योति प्रकाशित हो रही है॥ १०॥

तत्सूर्य्यस्यदेवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्विततꣳ सञ्जभार॥ यदेद-युक्तहरितः सधस्त्थादाद्रात्रीव्वासस्तनुतेसिमस्म्मै॥११॥ तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्यो रूपङ्कृणुतेद्योरुपस्त्थे॥ अनन्तमन्न्यद्रुशदस्य-पाजः कृष्णमन्न्यद्धरितꣳ सम्भरन्ति॥१२॥ बण्णमहाँ२॥ऽअसिसूर्य्यबडा-दित्त्यमहाँ२॥ऽअसि॥ महस्तेसतोमहिमापनस्यतेद्धादेवमहाँ२॥ऽअसि॥१३॥ बट्सूर्य्य श्श्रवसामहाँ२॥ऽअसिसत्राद्देवमहाँ२॥ऽअसि॥ मह्नादेवानाम-सुर्य्यः पुरोहितोव्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम्॥१४॥

सूर्यका जो यह देवत्व है और यह जो ऐश्वर्य है वह विराट् स्वरूप देहके मध्यमें सब ओरसे विस्तारित ग्रहमण्डलको अपनी आकर्षणशक्तिसे नियमित रखता है। जब ये अपनी हरित वर्णकी किरणोंको आकाश-मण्डलमें अपनी आत्मासे युक्त करते हैं, तदनन्तर ही रात्रि अपने अन्धकाररूपी वस्त्रसे सबको आच्छादित कर देती है॥ ११॥ सूर्य स्वर्गलोकके उत्संगमें मित्रदेव और वरुणदेवका रूप धारण करते हैं तथा उससे मनुष्योंको भलीभाँति देखते हैं अर्थात् मित्रदेवके रूपमें पुण्यात्माओंको देखकर उनपर अनुग्रह करते हैं और वरुणरूपमें दुष्टजनोंको देखकर उनका निग्रह करते हैं। इन सूर्यका अन्य स्वरूप अनन्त अर्थात् देश-कालके परिच्छेदसे रहित, मायोपाधिका नाशक ब्रह्म ही है। इनके साकाररूपको इन्द्रियोंकी वृत्तियाँ अथवा किरणें धारण करती हैं अर्थात् सूर्य ही सगुण और निर्गुण ब्रह्म हैं॥ १२॥ हे जगत्के प्रेरक सत्यस्वरूप सूर्यदेव! आप ही सर्वश्रेष्ठ हैं। हे आदित्य! आप ही महान् हैं; स्तोतागण आपकी महान् और अविनश्वर महिमाका गान करते हैं। हे दीप्यमान सत्यस्वरूप! आप महान् हैं॥ १३॥ हे सत्यस्वरूप सूर्य! आप धन (अथवा यश)-से महान् हैं। हे सत्स्वरूप देव! आप महान् हैं। आप अपनी महिमाके कारण देवताओंके मध्य असुरविनाशक (अथवा समस्त प्राणियोंका कल्याण करनेवाले) हैं। आप सभी कार्योंमें अर्घ्यदानादिके रूपमें प्रथम पूज्य हैं। आपकी ज्योति सर्वव्यापी तथा अनुल्लंघनीय है॥ १४॥

श्रायन्तऽइव॒सूर्य्यँव्विश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत॥ व्वसूनिजा॒तेजनमाना॒ऽओजसा॒-
प्प्रतिभा॒गन्नदीधिम॥१५॥ अ॒द्यादेवा॒ऽउदिता॒सूर्य्यस्य॒निरꣳहसः पिपृ॒ता-
निरव॒द्यात्॥ तन्नोमि॒त्रोव्वरुणोमामहन्ता॒मदिति॒ः सिन्धु॑ःपृथि॒वीऽउ॒त-
द्यौः॥१६॥ आकृ॒ष्ष्णेन॒रजसा॒व्वर्त्तमानोनिवे॒शयन्न॒मृत॒म्मर्त्यञ्च॥ हि॒रण्ययेन-
सवि॒तारथे॒नादे॒वोयाति॒भुवनानि॒ पश्श्यन्॥१७॥

॥ इति रुद्रपाठे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥
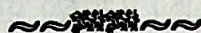
सूर्यकी उपासना करनेवाले इन्द्र आदिकी उपासनासे प्राप्त होनेवाले धन-धान्य, ऐश्वर्य आदि भोगोंको स्वतः प्राप्त कर लेते हैं, अतः हमको चाहिये कि प्रकाशकी किरणोंके साथ जब सूर्य भगवान् उदित होते हैं, तब हम उनके निमित्त यज्ञमें देवभाग अर्पित करें ॥ १५ ॥ हे सूर्यरश्मिरूप देवताओ! अब आज सूर्यका उदय होनेपर आपलोग हमें पाप और अपयशसे मुक्त करें। मित्र, वरुण, अदिति, समुद्र, पृथ्वी और स्वर्ग—ये सब हमारे वचनको अंगीकार करें ॥ १६ ॥ सबको प्रेरणा प्रदान करनेवाले सूर्यदेव सुवर्णमय रथमें आरूढ़ होकर कृष्णवर्ण रात्रि लक्षणवाले अन्तरिक्षमार्गमें पुनरावर्तन-क्रमसे भ्रमण करते हुए देवता-मनुष्यादिको अपने-अपने व्यापारोंमें व्यवस्थित करते हुए तथा सम्पूर्ण भुवनोंको देखते हुए विचरण करते हैं ॥ १७ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का चौथा अध्याय पूर्ण हुआ ॥ ४ ॥
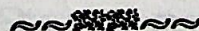
पञ्चमोऽध्यायः

हरिः ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः॥ बाहुब्भ्यामुत-
तेनमः॥१॥ यातेरुद्रशिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी॥ तयानस्तन्न्वा-
शन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्य-
स्तवे॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमा हिंᳯसीः पुरुषञ्जगत्॥३॥ शिवेनवचसा-
त्वागिरिशाच्छावदामसि॥ यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मᳯसुमनाऽ-
असत्॥४॥

पाँचवाँ अध्याय

दुःख दूर करनेवाले (अथवा ज्ञान प्रदान करनेवाले) हे रुद्र! आपके क्रोधके लिये नमस्कार है, आपके बाणोंके लिये नमस्कार है और आपकी दोनों भुजाओंके लिये नमस्कार है॥ १॥ कैलासपर रहकर संसारका कल्याण करनेवाले (अथवा वाणीमें स्थित होकर लोगोंको सुख देनेवाले या मेघमें स्थित होकर वृष्टिके द्वारा लोगोंको सुख देनेवाले) हे रुद्र! आपका जो मङ्गलदायक, सौम्य, केवल पुण्यप्रकाशक शरीर है, उस अनन्त सुखकारक शरीरसे हमारी ओर देखिये अर्थात् हमारी रक्षा कीजिये॥ २॥ कैलासपर रहकर संसारका कल्याण करनेवाले तथा मेघोंमें स्थित होकर वृष्टिके द्वारा जगत्‌की रक्षा करनेवाले हे सर्वज्ञ रुद्र! शत्रुओंका नाश करनेके लिये जिस बाणको आप अपने हाथमें धारण करते हैं वह कल्याणकारक हो और आप मेरे पुत्र-पौत्र तथा गो, अश्व आदिका नाश मत कीजिये॥ ३॥ हे कैलासपर शयन करनेवाले! आपको प्राप्त करनेके लिये हम मङ्गलमय वचनसे आपकी स्तुति करते हैं। हमारे समस्त पुत्र-पौत्र तथा पशु आदि जैसे भी नीरोग तथा निर्मल मनवाले हों, वैसा आप करें॥ ४॥

अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्रथमोदैव्व्योभिषक्॥ अहींश्शँश्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्स-
र्व्वाश्शचयातुधान्न्योऽधराचीः परासुव॥५॥ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः
सुमङ्गलः ॥ येचैनꣳरुद्द्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषाꣳहेडऽ-
ईमहे॥६॥ असौयोऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोव्विलोहितः॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्र-
न्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यःसदृष्ट्टोमृडयाति नः॥७॥ नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्त्राक्षा-
यमीढुषे॥ अथोयेऽअस्स्यसत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः॥८॥ प्रमुञ्चधन्न्वन-
स्त्वमुभयोरात्त्न्योर्ज्ज्याम्॥ याश्च्चतेहस्तऽइषवः परातभगवोव्वप॥९॥

Amit Kumar

अत्यधिक वन्दनशील, समस्त देवताओंमें मुख्य, देवगणोंके हितकारी तथा रोगोंका नाश करनेवाले रुद्र मुझसे सबसे अधिक बोलें, जिससे मैं सर्वश्रेष्ठ हो जाऊँ। हे रुद्र! समस्त सर्प, व्याघ्र आदि हिंसकोंका नाश करते हुए आप अधोगमन करानेवाली राक्षसियोंको हमसे दूर कर दें॥ ५॥ उदयके समय ताम्रवर्ण (अत्यन्त रक्त), अस्तकालमें अरुणवर्ण (रक्त), अन्य समयमें वभ्रु (पिंगल)-वर्ण तथा शुभ मङ्गलोंवाला जो यह सूर्यरूप है, वह रुद्र ही है। किरणरूपमें ये जो हजारों रुद्र इन आदित्यके सभी ओर स्थित हैं, इनके क्रोधका हम अपनी भक्तिमय उपासनासे निवारण करते हैं॥ ६॥ जिन्हें अज्ञानी गोप तथा जल भरनेवाली दासियाँ भी प्रत्यक्ष देख सकती हैं, विष धारण करनेसे जिनका कण्ठ नीलवर्णका हो गया है, तथापि विशेषतः रक्तवर्ण होकर जो सर्वदा उदय और अस्तको प्राप्त होकर गमन करते हैं, वे रविमण्डल-स्थित रुद्र हमें सुखी कर दें॥ ७॥ नीलकण्ठ, सहस्रनेत्रवाले, इन्द्रस्वरूप और वृष्टि करनेवाले रुद्रके लिये मेरा नमस्कार है। उस रुद्रके जो भृत्य हैं, उनके लिये भी मैं नमस्कार करता हूँ॥ ८॥ हे भगवन्! आप धनुषकी दोनों कोटियोंके मध्य स्थित प्रत्यञ्चाका त्याग कर दें और अपने हाथमें स्थित बाणोंको भी दूर फेंक दें॥ ९॥

विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनोव्विशल्ल्योबाणवाँ२ ॥ऽउत॥ अनैशन्नस्यषाऽ-
इषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥१०॥ यातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥
तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज॥११॥ परितेधन्न्वनोहेतिर-
स्म्मान्न्वृणक्तुव्विश्श्वतः ॥ अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम् ॥१२॥
अवतत्त्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे॥ निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः
सुमनाभव॥१३॥ नमस्तऽआयुधायानाततायधृष्ष्णवे॥ उभाब्भ्यामुततेनमो-
बाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने॥१४॥

जटाजूट धारण करनेवाले रुद्रका धनुष प्रत्यञ्चारहित रहे, तूणीरमें स्थित बाणोंके नोंकदार अग्रभाग नष्ट हो जायँ, इन रुद्रके जो बाण हैं, वे भी नष्ट हो जायँ तथा इनके खड्ग रखनेका कोश भी खड्गरहित हो जाय अर्थात् वे रुद्र हमारे प्रति सर्वथा शस्त्ररहित हो जायँ॥ १०॥ अत्यधिक वृष्टि करनेवाले हे रुद्र! आपके हाथमें जो धनुषरूप आयुध है, उस सुदृढ़ तथा अनुपद्रवकारी धनुषसे हमारी सब ओरसे रक्षा कीजिये॥ ११॥ हे रुद्र! आपका धनुषरूप आयुध सब ओरसे हमारा त्याग करे अर्थात् हमें न मारे और आपका जो बाणोंसे भरा तरकश है, उसे हमसे दूर रखिये॥ १२॥ सौ तूणीर और सहस्र नेत्र धारण करनेवाले हे रुद्र! धनुषकी प्रत्यञ्चा दूर करके और बाणोंके अग्र भागोंको तोड़कर आप हमारे प्रति शान्त और शुद्ध मनवाले हो जायँ॥ १३॥ हे रुद्र! शत्रुओंको मारनेमें प्रगल्भ और धनुषपर न चढ़ाये गये आपके बाणके लिये हमारा प्रणाम है। आपकी दोनों बाहुओं और धनुषके लिये भी हमारा प्रणाम है॥ १४॥

मानौमुहान्तमुतमानौऽअर्ब्भकम्मानुऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्॥ मानौव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तुन्न्वोरुद्द्ररीरिषः॥१५॥ मानस्तोकेतनयेमानुऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअंश्श्वेषुरीरिषः॥ मानौव्वीरान्नुद्द्रभामिनौव्वधीर्हुविष्मन्तः सदुमित्त्वाहवामहे॥१६॥ नमोहिरण्ण्यबाहवेसेनान्न्येदिशाञ्चपतयेनमोनमौव्वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतयेनमो नमः शष्प्पञ्जरायुत्त्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमो नमोहरिकेशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतयेनमोनमो बब्भ्लुशाय॥१७॥

हे रुद्र! हमारे गुरु, पितृव्य आदि वृद्धजनोंको मत मारिये, हमारे बालककी हिंसा मत कीजिये, हमारे तरुणको मत मारिये, हमारे गर्भस्थ शिशुका नाश मत कीजिये, हमारे माता-पिताको मत मारिये तथा हमारे प्रिय पुत्र-पौत्र आदिकी हिंसा मत कीजिये॥ १५॥ हे रुद्र! हमारे पुत्र-पौत्र आदिका विनाश मत कीजिये, हमारी आयुको नष्ट मत कीजिये, हमारी गौओंको मत मारिये, हमारे घोड़ोंका नाश मत कीजिये, हमारे क्रोधयुक्त वीरोंकी हिंसा मत कीजिये। हविसे युक्त होकर हम सब सदा आपका आवाहन करते हैं॥ १६॥ भुजाओंमें सुवर्ण धारण करनेवाले सेनानायक रुद्रके लिये नमस्कार है, दिशाओंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, पूर्णरूप हरे केशोंवाले वृक्षरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, जीवोंका पालन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, कान्तिमान् बालतृणके समान पीत वर्णवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, मार्गोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, नीलवर्ण-केशसे युक्त तथा मङ्गलके लिये यज्ञोपवीत धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गुणोंसे परिपूर्ण मनुष्योंके स्वामी रुद्रके लिये नमस्कार है॥ १७॥

नमौबब्भ्लुशायव्व्याधिनेऽन्नानाम्पतयेनमोनमौभुवस्यहेत्त्यैजग-
ताम्पतयेनमोनमौरुद्द्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः सूतायाहन्त्यै-
व्वनानाम्पतयेनमोनमोरोहिताय॥१८॥ नमोरोहितायस्त्थपतयेव्वृक्षाणा-
म्पतयेनमोनमौभुवन्तयैव्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतयेनमोनमौमन्त्रिणे-
व्वाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैर्ग्घोषायाक्क्रन्दयतेपत्तीना-
म्पतयेनमोनमः कृत्स्नायतया॥१९॥

कपिलं (वर्णवाले अथवा वृषभपर आरूढ़ होनेवाले) तथा शत्रुओंको बेधनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अन्नोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, संसारके आयुधरूप (अथवा जगन्निवर्तक) रुद्रके लिये नमस्कार है, जगत्का पालन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, उद्यत आयुधवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, देहोंका पालन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, न मारनेवाले सारथिरूप रुद्रके लिये नमस्कार है तथा वनोंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है॥ १८॥ लोहितवर्णवाले तथा गृह आदिके निर्माता विश्वकर्मारूप रुद्रके लिये नमस्कार है, वृक्षोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, भुवनका विस्तार करनेवाले तथा समृद्धिकारक रुद्रके लिये नमस्कार है, ओषधियोंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, आलोचनकुशल व्यापारकर्तारूप रुद्रके लिये नमस्कार है, वनके लता-वृक्ष आदिके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, युद्धमें उग्र शब्द करनेवाले तथा शत्रुओंको रुलानेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, [हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल आदि] सेनाओंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है॥ १९॥

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमो नमो वञ्चते ॥२०॥

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः ॥२१॥

कर्णपर्यन्त प्रत्यञ्चा खींचकर युद्धमें शीघ्रतापूर्वक दौड़नेवाले (अथवा सम्पूर्ण लाभकी प्राप्ति करानेवाले) रुद्रके लिये नमस्कार है, शरणागत प्राणियोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, शत्रुओंका तिरस्कार करनेवाले तथा शत्रुओंको बेधनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सब प्रकारसे प्रहार करनेवाली शूर सेनाओंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, खड्ग चलानेवाले महान् रुद्रके लिये नमस्कार है, गुप्त चोरोंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, अपहारकी बुद्धिसे निरन्तर गतिशील तथा हरणकी इच्छासे आपण (बाजार)-वाटिका आदिमें विचरण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है तथा वनोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है॥ २०॥ वञ्चना करनेवाले तथा अपने स्वामीको विश्वास दिलाकर धन हरण करके उसे ठगनेवाले रुद्ररूपके लिये नमस्कार है, गुप्त धन चुरानेवालोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, बाण तथा तूणीर धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रकटरूपमें चोरी करनेवालोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है, वज्र धारण करनेवाले तथा शत्रुओंको मारनेकी इच्छावाले रुद्रके लिये नमस्कार है, खेतोंमें धान्य आदि चुरानेवालोंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, प्राणियोंपर घात करनेके लिये खड्ग धारण कर रात्रिमें विचरण करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है तथा दूसरोंको काटकर उनका धन हरण करनेवालोंके पालक रुद्रके लिये नमस्कार है॥ २१॥

नमऽउष्णीषिणेगिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतयेनमोनमऽइषुमद्भ्योधन्वायिभ्यश्श्चवोनमोनमऽआतन्वानेभ्यःप्प्रतिदधानेभ्यश्श्चवोनमोनमऽआयच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्श्चवोनमोनमोविसृजद्भ्यः ॥२२॥ नमोविसृजद्भ्योविद्ध्यद्भ्यश्श्चवोनमोनमःस्वपद्भ्योजाग्ग्रद्भ्यश्श्चवोनमोनमःशयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्श्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्श्चवोनमोनमःसभाभ्यः ॥२३॥

सिरपर पगड़ी धारण करके पर्वतादि दुर्गम स्थानोंमें विचरनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, छलपूर्वक दूसरोंके क्षेत्र, गृह आदिका हरण करनेवालोंके पालक रुद्ररूपके लिये नमस्कार है, लोगोंको भयभीत करनेके लिये बाण धारण करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुष धारण करनेवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुषपर प्रत्यञ्चा चढ़ानेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुषपर बाणका संधान करनेवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुषको भलीभाँति खींचनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, बाणोंको सम्यक् छोड़नेवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है॥ २२॥

पापियोंके दमनके लिये बाण चलानेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, शत्रुओंको बेधनेवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, स्वप्नावस्थाका अनुभव करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, जाग्रत् अवस्थावाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सुषुप्ति अवस्थावाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, बैठे हुए आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, स्थित रहनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, वेगवान् गतिवाले आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है॥ २३॥

नमः॑ सुभाभ्यः॑ सुभापतिभ्यश्श्चवो नमो नमोऽश्श्वेभ्योऽश्श्व-
पतिभ्यश्श्चवो नमो नमऽआव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्श्च-
वो नमो नमऽउगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्श्चवो नमो नमो गुणेभ्यः॑ ॥२४॥
नमो गुणेभ्यो गुणपतिभ्यश्श्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्श्चवो-
नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्श्चवो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्श्वरूपे-
भ्यश्श्चवो नमो नमः॑ सेनाभ्यः॑ ॥२५॥ नमः॑ सेनाभ्यः॑ सेनानिभ्य-
श्श्चवो नमो नमो रथिभ्योऽअरथेभ्यश्श्चवो नमो नमः॑ क्षत्तृभ्यः॑ सङ्ग्रहीतृ-
भ्यश्श्चवो नमो नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्श्चवो नमः॑ ॥२६॥

सभारूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सभापतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, अश्वरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, अश्वपतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सब प्रकारसे बेधन करनेवाले देवसेनारूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, विशेषरूपसे बेधन करनेवाले देवसेनारूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, उत्कृष्ट भृत्यसमूहोंवाली ब्राह्मी आदि मातास्वरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है और मारनेमें समर्थ दुर्गा आदि मातास्वरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २४ ॥ देवानुचर भूतगणरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, भूतगणोंके अधिपतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, भिन्न-भिन्न जातिसमूहरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, विभिन्न जातिसमूहोंके अधिपतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, मेधावी ब्रह्मजिज्ञासुरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, मेधावी ब्रह्मजिज्ञासुओंके अधिपतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, निकृष्ट रूपवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, नानाविध रूपोंवाले विश्वरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २५ ॥ सेनारूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सेनापतिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, रथीरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, रथविहीन आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, रथोंके अधिष्ठातारूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, सारथिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, जाति तथा विद्या आदिसे उत्कृष्ट प्राणिरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, प्रमाण आदिसे अल्परूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २६ ॥

नमस्तक्षब्भ्योरथकारेब्भ्यश्श्चवोनमोनमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्य-श्श्चवोनमोनमोनिषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्श्चवोनमोनमः श्श्वनिब्भ्यो-मृगयुब्भ्यश्श्चवोनमोनमः श्श्वब्भ्यः ॥२७॥ नमः श्श्वब्भ्यः श्श्वपति-ब्भ्यश्श्चवो नमोनमोभवायचरुद्द्रायचनमः शर्व्वायचपशुपतयेचनमो-नीलग्ग्रीवायचशितिकण्ठायचनमः कपर्द्दिने॥२८॥ नमः कपर्द्दिनेचव्युप्त-केशायच नमः सहस्राक्षायचशतधन्न्वनेचनमोगिरिशयायचशिपिविष्टाय-चनमोमीढुष्ट्टमायचेषुमते च नमो ह्रस्वाय॥२९॥

शिल्पकाररूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, रथनिर्माताரूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, कुम्भकाररूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, लौहकाररूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, वन–पर्वतादिमें विचरनेवाले निषादरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, पक्षियोंको मारनेवाले पुल्कसादिरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, श्वानोंके गलेमें बँधी रस्सी धारण करनेवाले रुद्ररूपोंके लिये नमस्कार है और मृगोंकी कामना करनेवाले व्याधरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है ॥ २७ ॥ श्वानरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, श्वानोंके स्वामीरूप आप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, प्राणियोंके उत्पत्तिकर्ता रुद्रके लिये नमस्कार है, दुःखोंके विनाशक रुद्रके लिये नमस्कार है, पापोंका नाश करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, पशुओंके रक्षक रुद्रके लिये नमस्कार है, हलाहलपानके फलस्वरूप नीलवर्णके कण्ठवाले रुद्रके लिये नमस्कार है और श्वेत कण्ठवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ २८ ॥ जटाजूट धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, मुण्डित केशवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, हजारों नेत्रवाले इन्द्ररूप रुद्रके लिये नमस्कार है, सैकड़ों धनुष धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, कैलास पर्वतपर शयन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सभी प्राणियोंके अन्तर्यामी विष्णुरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, अत्यधिक सेचन करनेवाले मेघरूप रुद्रके लिये नमस्कार है और बाण धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ २९ ॥

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च नमऽआशवे॥३०॥ नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नमऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥३१॥ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च नमः सोभ्याय॥३२॥

अल्प देहवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, संकुचित अङ्गोंवाले वामनरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, बृहत्काय रुद्रके लिये नमस्कार है, अत्यन्त वृद्धावस्थावाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अधिक आयुवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, विद्याविनयादिगुणोंसे सम्पन्न विद्वानोंके साथीरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, जगत्के आदिभूत रुद्रके लिये नमस्कार है और सर्वत्र मुख्यस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ३०॥ जगद्व्यापी रुद्रके लिये नमस्कार है, गतिशील रुद्रके लिये नमस्कार है, वेगवाली वस्तुओंमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, जलप्रवाहमें विद्यमान आत्मश्लाघी रुद्रके लिये नमस्कार है, जलतरंगोंमें व्याप्त रुद्रके लिये नमस्कार है, स्थिर जलरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, नदियोंमें व्याप्त रुद्रके लिये नमस्कार है और द्वीपोंमें व्याप्त रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ३१॥ अति प्रशस्य ज्येष्ठरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, अत्यन्त युवा (अथवा कनिष्ठ)-रूप रुद्रके लिये नमस्कार है, जगत्के आदिमें हिरण्यगर्भरूपसे प्रादुर्भूत हुए रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रलयके समय कालाग्रिके सदृश रूप धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सृष्टि और प्रलयके मध्यमें देव-नर-तिर्यगादिरूपसे उत्पन्न होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अव्युत्पन्नेन्द्रिय रुद्रके लिये नमस्कार है अथवा विनीत रुद्रके लिये नमस्कार है, (गाय आदिके) जघनप्रदेशसे उत्पन्न होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है और वृक्षादिकोंके मूलमें निवास करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ३२॥

नमः सोब्भ्याय च प्रतिसर्य्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमऽउर्वर्य्याय च खल्याय च नमो वन्याय ॥३३॥ नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे ॥३५॥

गन्धर्वनगरमें होनेवाले (अथवा पुण्य और पापोंसे युक्त मनुष्यलोकमें उत्पन्न होनेवाले) रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रत्यभिचारमें रहनेवाले (अथवा विवाहके समय हस्तसूत्रमें उत्पन्न होनेवाले) रुद्रके लिये नमस्कार है, पापियोंको नरककी वेदना देनेवाले यमके अन्तर्यामी रुद्रके लिये नमस्कार है, कुशलकर्ममें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, वेदके मन्त्र (अथवा यश)-द्वारा उत्पन्न हुए रुद्रके लिये नमस्कार है, वेदान्तके तात्पर्यविषयीभूत रुद्रके लिये नमस्कार है, सर्व सस्यसम्पन्न पृथ्वीसे उत्पन्न होनेवाले धान्यरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, धान्यविवेचन-देश (खलिहान)-में उत्पन्न हुए रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ३३॥ वनोंमें वृक्ष-लतादिरूप रुद्र अथवा वरुणस्वरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, शुष्क तृण अथवा गुल्मोंमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है; प्रतिध्वनिस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, शीघ्रगामी सेनावाले रुद्रके लिये नमस्कार है, शीघ्रगामी रथवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, युद्धमें शूरता प्रदर्शित करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है तथा शत्रुओंको विदीर्ण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ३४॥ शिरस्त्राण धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, कपास-निर्मित देहरक्षक (अंगरखा) धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, लोहेका बख्तर धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गुंबदयुक्त रथवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, संसारमें प्रसिद्ध रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रसिद्ध सेनावाले रुद्रके लिये नमस्कार है, दुन्दुभी (भेरी)-में विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, भेरी आदि वाद्योंको बजानेमें प्रयुक्त होनेवाले दण्ड आदिमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ३५॥

नमौधृष्ष्णवेचप्प्रमृशायचनमौनिषङ्गिणेचेषुधिमतेचनमस्तीक्ष्णेषवेचायु-धिनेचनमः स्वायुधायचसुधन्वनेच॥३६॥ नमः स्स्रुत्यायचपत्थ्यायच नमः काट्यायचनीप्प्यायचनमः कुल्ल्यायचसरस्यायचनमोना-द्येयायचवैशन्तायचनमः कूप्प्याय॥३७॥ नमः कूप्प्यायचावट्यायचन-मोवीद्ध्र्यायचातप्प्यायचनमोमेग्घ्यायचविद्युत्यायचनमोवर्ष्यीय-चावर्ष्यायचनमोवात्याय॥३८॥

प्रगल्भ स्वभाववाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सत्-असत्का विवेकपूर्वक विचार करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, खड्ग धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, तूणीर (तरकश) धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, तीक्ष्ण बाणोंवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, नानाविध आयुधोंको धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, उत्तम त्रिशूलरूप आयुध धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है और श्रेष्ठ पिनाक धनुष धारण करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३६ ॥ क्षुद्रमार्गमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, रथ-गज-अश्व आदिके योग्य विस्तृत मार्गमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, दुर्गम मार्गोंमें स्थित रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, जहाँ झरनोंका जल गिरता है, उस भूप्रदेशमें उत्पन्न हुए अथवा पर्वतोंके अधोभागमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, नहरके मार्गमें स्थित अथवा शरीरोंमें अन्तर्यामी रूपसे विराजमान रुद्रके लिय है, सरोवरमें उत्पन्न होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सरितादिकोंमें विद्यमान जलरूप रुद्रके लिय नमस्कार है, अल्प सरोवरमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३७ ॥ कूपोंमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्का है, गर्त-स्थानोंमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, शरद्-ऋतुके बादलों अथवा चन्द्र-नक्षत्रादि-मण्डलमें विद्यमान विशुद्ध स्वभाववाले रुद्रके लिये नमस्कार है, आतप (धूप)-में उत्पन्न होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, मेघोंमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, विद्युत्में होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, वृष्टिमें विद्यमान रुद्रके [illegible] नमस्कार है तथा अ[illegible]में स्थित रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३८ ॥

रु[illegible]स्कार है और [illegible]

नमो॒व्वात्त्या॑यच॒रेष्म्म्या॑यच॒नमो॑व्वास्त॒व्व्या॒यचव्वास्तुपा॑यच॒नम॒ᳲ सोमा॑य-चरुद्द्रा॑यच॒नम॑स्ता॒म्म्रा॑यचारु॒णा॑यच॒नम॑ꣳशङ्ग॒वे॑॥३९॥ नम॑ꣳशङ्ग॒वे॑चपशु॒-पत॑येच॒नम॑ऽउ॒ग्ग्रा॑यचभी॒मा॑यच॒नमो॑ऽग्ग्रेव॒धा॑यचदू॒रेव॒धा॑यच॒नमो॑ह॒न्त्रे-च॒हनी॑यसेच॒नमो॑व्वृ॒क्षेब्भ्यो॒हरि॑केशेब्भ्यो॒नम॑स्ता॒रा॑य ॥४०॥ नम॑ꣳ शम्भ॒-वा॑यचमयो॒भ॒वा॑यच॒नम॑ꣳ शङ्क॒रा॑यचमयस्क॒रा॑यच॒नम॑ꣳशि॒वा॑यचशि॒वत॑-रा॑यच॥४१॥

वायुमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रलयकालमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गृह-भूमिमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है अथवा सर्वशरीरवासी रुद्रके लिये नमस्कार है, गृहभूमिके रक्षकरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, चन्द्रमामें स्थित अथवा ब्रह्मविद्या महाशक्ति उमासहित विराजमान सदाशिव रुद्रके लिये नमस्कार है, सर्वविध अनिष्टके विनाशक रुद्रके लिये नमस्कार है, उदित होनेवाले सूर्यके रूपमें ताम्रवर्णके रुद्रके लिये नमस्कार है और उदयके पश्चात् अरुण (कुछ-कुछ रक्त) वर्णवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ३९ ॥ भक्तोंको सुखकी प्राप्ति करानेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, जीवोंके अधिपतिस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, संहार-कालमें प्रचण्ड स्वरूपवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अपने भयानकरूपसे शत्रुओंको भयभीत करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सामने खड़े होकर वध करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, दूर स्थित रहकर संहार करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, हनन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, प्रलयकालमें सर्वहन्तारूप रुद्रके लिये नमस्कार है, हरितवर्णके पत्ररूप केशोंवाले कल्पतरुस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है और ज्ञानोपदेशके द्वारा अधिकारी जनोंको तारनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है ॥ ४० ॥ सुखके उत्पत्तिस्थानरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, भोग रुद्रके लिये [illegible] का सुख प्रदान करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, [illegible] लिये नमस्कार है, [illegible] ले रुद्रके लिये नमस्कार है, वेदान्त-रुद्रके लिये नमस्कार है और विषम गिरिगुहा आदि अथवा गम्भीर जलमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है [illegible] ॥

तथा मोक्ष होनेवाले ब्रह ... स्वरूप रुद्रके ... सुख देनवाले कल्याणरूप निष्पाप रुद्रके ... लिये ...

...त्थ्यीयचकूल्ल्यायचनमः शष्प्यायच फेन्न्यायचन ... य॥४२॥

नमः सिकत्त्यायचप्रवाह्यायचनमः किंशिलायचक्षयणायच-

नमः कपर्द्दिनेचपुलस्तयेचनमऽइरिण्ण्यायचप्रपत्थ्यायचनमोव्व्र-

ज्ज्याय॥४३॥ नमोव्व्रज्ज्यायचगोष्ठ्यायचनमस्तल्प्प्यायचगेह्यायचन-

मोहृदय्यायचनिवेष्प्यायचनमः काट्यायचगह्वरेष्ठायचनमः शु-

ष्क्याय॥४४॥

संसारसमुद्रके अपर तीरपर रहनेवाले अथवा संसारातीत जीवन्मुक्त विष्णुरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, संसारव्यापी रुद्रके लिये नमस्कार है, दुःख-पापादिसे प्रकृष्टरूपसे तारनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, उत्कृष्ट ब्रह्म-साक्षात्कार कराकर संसारसे तारनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, तीर्थस्थलोंमें प्रतिष्ठित रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गङ्गा आदि नदियोंके तटपर विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गङ्गा आदि नदियोंके तटपर उत्पन्न रहनेवाले कुशाङ्कुरादि बालतृणरूप रुद्रके लिये नमस्कार है और जलके विकारस्वरूप फेनमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ४२॥ नदियोंकी बालुकाओंमें होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, नदी आदिके प्रवाहमें होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, क्षुद्र पाषाणोंवाले प्रदेशके रूपमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, स्थिर जलसे परिपूर्ण प्रदेशरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, जटामुकुटधारी रुद्रके लिये नमस्कार है, शुभाशुभ देखनेकी इच्छासे सदा सामने खड़े रहनेवाले अथवा सर्वान्तर्यामीस्वरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, ऊसरभूमिरूप रुद्रके लिये नमस्कार है और अनेक जनोंसे संसेवित मार्गमें होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ४३॥ गोसमूहमें विद्यमान अथवा व्रजमें गोपेश्वरके रूपमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गोशालाओंमें रहनेवाले गोष्ठ्यरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, शय्यामें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, गृहमें विद्यमान रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, हृदयमें रहनेवाले जीवरूपी रुद्रके लिये नमस्कार है, जलके भँवरमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, दुर्ग-अरण्य आदि स्थानोंमें रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है और विषम गिरिगुहा आदि अथवा गम्भीर जलमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ४४॥

नमः॑ शुष्क्क्याय च हरित्त्याय च नमः॑ पाᳪं सव्याय च रजस्याय च नमो लो-
प्प्याय चोलप्प्याय च नम ऽऊर्व्व्याय च सूर्व्व्याय च नमः॑ पर्ण्णाय ॥ ४५ ॥

नमः॑ पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च नम ऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम ऽआखि-
दते च प्प्रखिदते च नम ऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरि-
केभ्यो देवानाᳪं हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो-
नम ऽआनिर्हतेभ्यः ॥ ४६ ॥

काष्ठ आदि शुष्क पदार्थोंमें भी सत्तारूपसे विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, आर्द्र काष्ठ आदिमें सत्तारूपसे विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है, धूलि आदिमें विराजमान पांसव्यरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, रजोगुण अथवा परागमें विद्यमान रजस्यरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, सम्पूर्ण इन्द्रियोंके व्यापारकी शान्ति होनेपर भी अथवा प्रलयमें भी साक्षी बनकर रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, बल्वजादि तृणविशेषोंमें होनेवाले उलप्यरूपी रुद्रके लिये नमस्कार है, बडवानलमें विराजमान रुद्रके लिये नमस्कार है और प्रलयाग्निमें विद्यमान रुद्रके लिये नमस्कार है॥ ४५ ॥ वृक्षोंके पत्ररूप रुद्रके लिये नमस्कार है, वृक्ष-पर्णोंके स्वतः शीर्ण होनेके काल—वसन्त-ऋतुरूप रुद्रके लिये नमस्कार है, पुरुषार्थपरायण रहनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सब ओर शत्रुओंका हनन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, सब ओरसे अभक्तोंको दीन-दुःखी बना देनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, अपने भक्तोंके दुःखोंसे दुःखी होनेके कारण दयासे आर्द्रहृदय होनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार है, बाणोंका निर्माण करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धनुषोंका निर्माण करनेवाले रुद्रोंके लिये नमस्कार है, वृष्टि आदिके द्वारा जगत्का पालन करनेवाले देवताओंके हृदयभूत अग्नि-वायु-आदित्यरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है, धर्मात्मा तथा पापियोंका भेद करनेवाले अग्नि आदि रुद्रोंके लिये नमस्कार है, भक्तोंके पाप-रोग-अमङ्गलको दूर करनेवाले तथा पाप-पुण्यके साक्षीस्वरूप अग्नि आदि रुद्रोंके लिये नमस्कार है और सृष्टिके आदिमें मुख्यतया इन लोकोंसे निर्गत हुए अग्नि-वायु-सूर्यरूप रुद्रोंके लिये नमस्कार है॥ ४६ ॥

द्द्रापेऽअन्धसस्प्पतेदरिद्द्रनीललोहित॥ आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्मा-
भेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत् ॥४७॥ इमारुद्द्रायतवसेकपर्द्दिनेक्षयद्द्वीरा-
यप्प्रभरामहेमतीः॥ यथाशमसद्द्विपदेचतुष्प्पदेव्विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्म्मि-
न्ननातुरम् ॥४८॥ यातेरुद्द्रशिवातनूःशिवाव्विश्श्वाहाभेषजी॥ शिवारुत-
स्यभेषजीतयानोमृडजीवसे॥४९॥ परिनोरुद्द्रस्यहेतिर्व्वृणक्तुपरित्वेष-
स्यदुर्म्मतिरघायोः॥ अवस्त्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्ष्वमीढ्वस्तोकायतन-
यायमृड॥५०॥

हे द्रापे (दुराचारियोंको कुत्सित गति प्राप्त करानेवाले)! हे अन्धसस्पते (सोमपालक)! हे दरिद्र (निष्परिग्रह)! हे नीललोहित! हमारी पुत्रादि प्रजाओं तथा गो-आदि पशुओंको भयभीत मत कीजिये, उन्हें नष्ट मत कीजिये और उन्हें किसी भी प्रकारके रोगसे ग्रसित मत कीजिये॥ ४७॥ जिस प्रकारसे मेरे पुत्रादि तथा गौ आदि पशुओंको कल्याणकी प्राप्ति हो तथा इस ग्राममें सम्पूर्ण प्राणी पुष्ट तथा उपद्रवरहित हों, इसके निमित्त हम अपनी इन बुद्धियोंको महाबली, जटाजूटधारी तथा शूरवीरोंके निवासभूत रुद्रके लिये समर्पित करते हैं॥ ४८॥ हे रुद्र! आपका जो शान्त, निरन्तर कल्याणकारक, संसारकी व्याधि निवृत्त करनेवाला तथा शारीरिक व्याधि दूर करनेका परम औषधिरूप शरीर है, उससे हमारे जीवनको सुखी कीजिये॥ ४९॥ रुद्रके आयुध हमारा परित्याग करें और क्रुद्ध हुए द्वेषी पुरुषोंकी दुर्बुद्धि हमलोगोंको वर्जित कर दे (अर्थात् उनसे हमलोगोंको किसी प्रकारकी पीड़ा न होने पावे)। अभिलषित वस्तुओंकी वृष्टि करनेवाले हे रुद्र! आप अपने धनुषको प्रत्यञ्चारहित करके यजमान-पुरुषोंके भयको दूर कीजिये और उनके पुत्र-पौत्रोंको सुखी बनाइये॥ ५०॥

मीढुष्टमशिवतमशिवोनः॑सुमनाभव॥ परमेवृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिं-
वसानऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि ॥५१॥ विकिरिद्रविलोहितनमस्तेऽ-
अस्तुभगवः ॥ यास्तेसहस्रंहेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तुताः ॥५२॥
सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयः॥ तासामीशानोभगवः पराचीना-
मुखाकृधि ॥५३॥ असङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्याम्॥
तेषाᳬसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥५४॥ अस्मिन्महत्यर्णवे-
ऽन्तरिक्षेभवाऽअधि ॥ तेषाᳬसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥५५॥

अभीष्ट फल और कल्याणोंकी अत्यधिक वृष्टि करनेवाले हे रुद्र! आप हमपर प्रसन्न रहें, अपने त्रिशूल आदि आयुधोंको कहीं दूरस्थित वृक्षोंपर रख दीजिये, गजचर्मका परिधान धारण करके तप कीजिये और केवल शोभाके लिये धनुष धारण करके आइये॥ ५१॥ विविध प्रकारके उपद्रवोंका विनाश करनेवाले तथा शुद्धस्वरूपवाले हे रुद्र! आपको हमारा प्रणाम है, आपके जो असंख्य आयुध हैं, वे हमसे अतिरिक्त दूसरोंपर जाकर गिरें॥ ५२॥ गुण तथा ऐश्वर्योंसे सम्पन्न हे जगत्पति रुद्र! आपके हाथोंमें हजारों प्रकारके जो असंख्य आयुध हैं, उनके अग्रभागों (मुखों)-को हमसे विपरीत दिशाओंकी ओर कर दीजिये (अर्थात् हमपर आयुधोंका प्रयोग मत कीजिये)॥ ५३॥ पृथ्वीपर जो असंख्य रुद्र निवास करते हैं, उनके असंख्य धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पार जो मार्ग है, उसपर ले जाकर डाल देते हैं॥ ५४॥ मेघमण्डलसे भरे हुए इस महान् अन्तरिक्षमें जो रुद्र रहते हैं, उनके असंख्य धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं॥ ५५॥

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५६॥ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५७॥ येव्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा विलोहिताः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५८॥ येभूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्द्दिनः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५९॥ येपथाम्पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्य्युधः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६०॥

जिनके कण्ठका कुछ भाग नीलवर्णका है और कुछ भाग श्वेत वर्णका है तथा जो द्युलोकमें निवास करते हैं, उन रुद्रोंके असंख्य धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ५६ ॥ कुछ भागमें नीलवर्ण और कुछ भागमें शुक्लवर्णके कण्ठवाले तथा भूमिके अधोभागमें स्थित पाताललोकमें निवास करनेवाले रुद्रोंके असंख्य धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ५७ ॥ बाल तृणके समान हरितवर्णके तथा कुछ भागमें नीलवर्ण एवं कुछ भागमें शुक्लवर्णके कण्ठवाले, जो रुधिररहित रुद्र (तेजोमय शरीर रहनेसे उन शरीरोंमें रक्त और मांस नहीं रहता) हैं, वे अश्वत्थ आदिके वृक्षोंपर रहते हैं। उन रुद्रोंके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर डाल देते हैं ॥ ५८ ॥ जिनके सिरपर केश नहीं हैं, जिन्होंने जटाजूट धारण कर रखा है और जो पिशाचोंके अधिपति हैं, उन रुद्रोंके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ५९ ॥ अन्न देकर प्राणियोंका पोषण करनेवाले, आजीवन युद्ध करनेवाले, लौकिक-वैदिक मार्गका रक्षण करनेवाले तथा अधिपति कहलानेवाले जो रुद्र हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ६० ॥

येतीर्त्थानिप्प्रचरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गिणः॥ तेषाᳪसहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्नमसि॥६१॥ येन्नेषुव्विविद्ध्यन्तिपात्रेषुपिबतोजनान्॥ तेषाᳪसहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्नमसि॥६२॥ यऽएतावन्तश्श्चभूयाᳪसश्श्चदिशोरुद्द्राव्वितस्थिरे॥ तेषाᳪसहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्नमसि॥६३॥

नमोऽस्तुरुद्द्रेब्भ्योयेदिवियेषांव्वर्षमिषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्श्चनोद्द्वेष्ट्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः॥६४॥

वज्र और खड्ग आदि आयुधोंको हाथमें धारण कर जो रुद्र तीर्थोंपर जाते हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ६१ ॥ खाये जानेवाले अन्नोंमें स्थित जो रुद्र अन्नभोक्ता प्राणियोंको पीड़ित करते हैं (अर्थात् धातुवैषम्यके द्वारा उनमें रोग उत्पन्न करते हैं) और पात्रोंमें स्थित दुग्ध आदिमें विराजमान जो रुद्र, उनका पान करनेवाले लोगोंको (व्याधि आदिके द्वारा) कष्ट देते हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ६२ ॥ दसों दिशाओंमें व्याप्त रहनेवाले जो अनेक रुद्र हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यञ्चारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥ ६३ ॥ जो रुद्र द्युलोकमें विद्यमान हैं तथा जिन रुद्रोंके बाण वृष्टिरूप हैं, उन रुद्रोंके लिये नमस्कार है। उन रुद्रोंके लिये पूर्व दिशाकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, दक्षिणकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, पश्चिमकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, उत्तरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ और ऊपरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ (अर्थात् हाथ जोड़कर सभी दिशाओंमें उन रुद्रोंके लिये प्रणाम करता हूँ)। वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनायें। वे रुद्र जिस मनुष्यसे द्वेष करते हैं, हमलोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुषको हमलोग उन रुद्रोंके भयंकर दाँतोंवाले मुखमें डालते हैं (अर्थात् वे रुद्र हमसे द्वेष करनेवाले मनुष्यका भक्षण कर जायँ) ॥ ६४ ॥

नमौऽस्तुरुद्द्रेब्भ्यो॒येऽन्तरिक्षेयेषां॒व्वात॒ऽइषवः॥ तेब्भ्यो॒दश॒प्प्राची॒र्द्दश-दक्षि॒णादशप्प्र॒तीची॒र्द्दशोदीची॒र्द्दशो॒द्ध्र्वाः॥ तेब्भ्यो॒नमौऽअस्तुतेनौऽवन्तुते-नौमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्श्चनो॒द्वेष्टि॒तमैषा॒ञ्जम्भैदद्ध्मः॥६५॥

नमौऽस्तुरुद्द्रेभ्यो॒येपृ॒थिव्यांय्येषा॒मन्न॒मिषवः॥ तेब्भ्यो॒दश॒प्प्राची॒र्द्दश-दक्षि॒णादशप्प्र॒तीची॒र्द्दशोदीची॒र्द्दशो॒द्ध्र्वाः॥ तेब्भ्यो॒नमौऽअस्तुतेनौऽवन्तुते-नौमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्च्चनो॒द्वेष्टि॒तमैषा॒ञ्जम्भैदध्मः॥६६॥

॥ इति रुद्रपाठे पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥
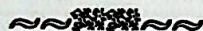
जो रुद्र अन्तरिक्षमें विद्यमान हैं तथा जिन रुद्रोंके बाण पवनरूप हैं, उन रुद्रोंके लिये नमस्कार है। उन रुद्रोंके लिये पूर्व दिशाकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, दक्षिणकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, पश्चिमकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, उत्तरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ और ऊपरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ (अर्थात् हाथ जोड़कर सभी दिशाओंमें उन रुद्रोंके लिये प्रणाम करता हूँ)। वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनायें। वे रुद्र जिस मनुष्यसे द्वेष करते हैं, हमलोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुषको हमलोग उन रुद्रोंके भयंकर दाँतोंवाले मुखमें डालते हैं (अर्थात् वे रुद्र हमसे द्वेष करनेवाले मनुष्यका भक्षण कर जायँ) ॥ ६५ ॥ जो रुद्र पृथ्वीलोकमें स्थित हैं तथा जिनके बाण अन्नरूप हैं, उन रुद्रोंके लिये नमस्कार है। उन रुद्रोंके लिये पूर्व दिशाकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, दक्षिणकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, पश्चिमकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ, उत्तरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ और ऊपरकी ओर दसों अंगुलियाँ करता हूँ (अर्थात् हाथ जोड़कर सभी दिशाओंमें उन रुद्रोंके लिये प्रणाम करता हूँ)। वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनावें। वे रुद्र जिस मनुष्यसे द्वेष करते हैं, हमलोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुषको हमलोग उन रुद्रोंके भयंकर दाँतोंवाले मुखमें डालते हैं (अर्थात् वे रुद्र हमसे द्वेष करनेवाले मनुष्यका भक्षण कर जायँ) ॥ ६६ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का पाँचवाँ अध्याय पूर्ण हुआ ॥ ५ ॥

षष्ठोऽध्यायः

हरिः ॐ व्वयꣳसौमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः ॥ प्रजावन्तꣳसचेमहि ॥ १ ॥
एषतैरुद्द्रभागःसहस्वस्राऽम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतैरुद्द्रभागऽआखुस्तैपशुः ॥ २ ॥ अवरुद्द्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथानोव्वस्यसस्करद्यथानःश्श्रेयसस्करद्यथानोव्यवसाययात् ॥ ३ ॥ भेषजमसिभेषजङ्गवेऽश्वायपुरुषायभेषजम् ॥ सुखम्मेषायमेष्ष्यै ॥ ४ ॥

छठा अध्याय

हे सोमदेव! पुत्र-पौत्रादिसे सम्पन्न हम यजमान यज्ञ और व्रतोंमें आपके स्वरूपमें चित्त लगाकर सेवनीय वस्तुओंका सेवन करें॥ १॥ हे रुद्र! हमारे द्वारा दिया हुआ यह पुरोडाश आपका भाग है; आप अपनी भगिनी अम्बिकाके साथ इसका सेवन कीजिये। यह प्रदत्त हवि सुहुत रहे। हमारे द्वारा अवकीर्ण किया गया यह पुरोडाश आपका भाग है; आपके द्वारा इसका सेवन किया जाय। हमने इस मूषकसंज्ञक पशुको आपके लिये अर्पित किया है॥ २॥ चित्तमें रुद्र और त्र्यम्बकका ध्यान करके (अथवा अन्य देवताओंसे पृथक् करके) हम रुद्रको अन्न खिलाते हैं। वे रुद्र हमें निवसनशील और ज्ञातिमें श्रेष्ठ कर दें तथा वे हमें समस्त कार्योंमें शीघ्र निर्णय लेनेकी शक्ति प्रदान करें, इसके लिये हम उनका जप करते हैं॥ ३॥ हे रुद्र! आप औषधिके तुल्य समस्त उपद्रवोंके निवारक हैं, अतः हमारे गाय, अश्व और भृत्य आदिको सर्वव्याधिनिवारक औषधि दीजिये और हमारे मेष तथा मेषीको सुख प्रदान कीजिये॥ ४॥

त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्यो-र्म्मुक्षीयमामृतात्॥ त्र्यम्बकं य्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम्॥ उर्व्वारुकमिव-बन्धनादितोमुक्षीयमामुतः॥५॥

एतत्तेरुद्द्राऽवसन्तेनपरोमूजवतोऽतीहि॥ अवततधन्न्वापिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिंꣳसन्नःशिवोऽतीहि॥६॥

दिव्य गन्धसे युक्त, मृत्युरहित, धन–धान्यवर्धक, त्रिनेत्र रुद्रकी हम पूजा करते हैं। वे रुद्र हमें अपमृत्यु और संसाररूप मृत्युसे मुक्त करें। जिस प्रकार ककड़ी (फूट)–का फल अत्यधिक पक जानेपर अपने वृन्त (डंठल)–से मुक्त हो जाता है, उसी प्रकार हम भी मृत्युसे छूट जायँ; किंतु अभ्युदय और निःश्रेयसरूप अमृतसे हमारा सम्बन्ध न छूटने पाये। [अग्रिम वाक्य कुमारिकाओंका है] पतिकी प्राप्ति करानेवाले, सुगन्धविशिष्ट त्रिनेत्र शिवकी हम पूजा करती हैं। ककड़ी (फूट)–का फल परिपक्व होनेपर जैसे अपने डंठलसे छूट जाता है, उसी प्रकार हम कुमारियाँ माता, पिता, भाई आदि बन्धुजनोंसे तथा उस कुलसे छूट जायँ, किंतु त्र्यम्बकके प्रसादसे हम अपने पतिसे न छूटें अर्थात् पिताका गोत्र तथा घर छोड़कर पतिके गोत्र तथा घरमें सर्वदा रहें ॥ ५ ॥ हे रुद्र! आपका यह 'अवस' संज्ञक हविःशेष भोज्य है ('अवस' का अर्थ है—प्रवासमें किसी सरोवरके समीप विश्राम करनेपर भक्षणयोग्य ओदनविशेष), उसके सहित आप अपने धनुषकी प्रत्यञ्चाको हटाकर मूजवान् पर्वतके उस पार जाइये। [मूजवान् पर्वतपर रुद्र निवास करते हैं] प्रवास करते समय आप अपने 'पिनाक' नामक धनुषको सब ओरसे आच्छादित कर लें, जिससे कोई भी प्राणी आपके धनुषको देखकर भयभीत न हो। हे रुद्र! आप चर्माम्बर धारण करके हिंसा न करते हुए हमारी पूजासे संतुष्ट होकर मूजवान् पर्वतको लाँघ जाइये॥ ६ ॥

त्र्यायुषञ्जमदग्ग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम्॥ यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु-त्र्यायुषम्॥७॥ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः॥ निर्वर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्यायप्प्रजननायरायस्प्पोषायसुप्प्रजास्त्वायसुवी-र्य्यीय॥८॥

॥ इति रुद्रपाठे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६॥
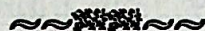
जमदग्नि ऋषिकी बाल्य-यौवन-वृद्धावस्थाके जो उत्तम चरित्र हैं, कश्यप प्रजापतिकी तीनों अवस्थाओंके जो उत्तम चरित्र हैं तथा देवगणोंमें भी उनकी तीनों अवस्थाओंके जो प्रशंसनीय चरित्र विद्यमान हैं, तीनों अवस्थाओंसे सम्बन्धित वैसा ही चरित्र हम यजमानोंका भी हो॥ ७॥ हे क्षुर! आपका नाम 'शान्त' है। वज्र आपके पिता हैं, मैं आपके लिये नमस्कार करता हूँ। आप मेरी हिंसा मत कीजिये। हे यजमान! बहुत दिनोंतक जीवित रहनेके लिये, अन्न-भक्षण करनेके लिये, संततिके लिये, द्रव्य-वृद्धिके लिये, योग्य संतान उत्पन्न होनेके लिये तथा उत्तम सामर्थ्यकी प्राप्तिके लिये मैं आपका मुण्डन करता हूँ॥ ८॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का छठा अध्याय पूर्ण हुआ॥ ६॥
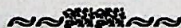
सप्तमोऽध्यायः

हरिः ॐ उग्रश्च्चभीमश्च्चद्ध्वान्तश्च्चधुनिश्च्च॥ सासह्वाँश्च्चा-भियुग्वाचव्विक्षिपःस्वाहा ॥१॥

अग्निꣳहृदयेनाशनिꣳहृदयाग्ग्रेणपशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेनभवंय्यक्ना॥ शर्व्वम्मतस्नाभ्भ्यामीशानम्मन्न्युनामहादेवमन्तःपर्शव्व्येनोग्ग्रन्देवव्वनिष्ठुना-वसिष्ठहनुःशिङ्गीनिकोश्याभ्भ्याम्॥२॥

सातवाँ अध्याय

उग्र (उत्कट क्रोध स्वभाववाले), भीम (भयानक), ध्वान्त (तीव्र ध्वनि करनेवाले), धुनि (शत्रुओंको कम्पित करनेवाले), सासह्वान् (शत्रुओंको तिरस्कृत करनेमें समर्थ), अभियुग्वा (हमारे सम्मुख योग प्राप्त करनेवाले) और विक्षिप (वृक्ष-शाखादिका क्षेपण करनेवाले) नामवाले जो सात मरुत् हैं, उन्हें मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ॥ १ ॥* मैं अग्निको हृदयके द्वारा, अशनिदेवको हृदयाग्रसे, पशुपतिको सारे हृदयसे, भवको यकृत्से, शर्वको मतस्ना नामक हृदयस्थलसे, ईशान देवताको क्रोधसे, महादेवको पसलियोंके अन्तर्भागसे, उग्र देवताको बड़ी आँतसे और शिङ्गी नामक देवताओंको हृदयकोष-स्थित पिण्डोंसे प्रसन्न करता हूँ॥ २ ॥

---

* यहाँसे आगेके कुछ मन्त्रोंका अरण्यमें पाठ होनेसे इन्हें आरण्यक श्रुति भी कहा जाता है। प्रायश्चित्त-हवन आदिमें भी इन मन्त्रोंका विनियोग होता है। इन मन्त्रोंमें शरीरके तत्तदङ्गोंके अभिमानी देवताओंके निमित्त तत्तदङ्गों तथा मज्जा आदि धातुओंकी आहुति-प्रदानकी बात आयी है। तत्त्वतः व्यष्टि-समष्टि यह समस्त विश्व भगवद्रूप ही है। समर्पित द्रव्य एवं देवता सब कुछ ब्रह्ममय है। होता भी वे ही हैं, हवनीय द्रव्य भी वे ही हैं और उसके भोक्ता भी वे ही हैं। यह त्रिविध शरीर भी भगवत्प्रदत्त ही है। अतः परमात्मप्रभुका ही है और उन्हें समर्पित कर देना इसका परम प्रयोजन है तथा इसीमें इसका साफल्य भी है। औपनिषद् श्रुतिमें आया है कि '**अहमेवमहं मां जुहोमि स्वाहा**' (त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषद् ८) अर्थात् मैं आत्मरूप ही परमात्मस्वरूप हूँ, अतः मैं अहंता (भेद-प्रतीति)-का

उग्रँल्लोहितेनमित्रꣳसौव्व्रत्त्येनरुद्द्रन्दौर्व्व्रत्त्येनेन्द्रम्प्रक्क्रीडेनमरुतोबलेन-
साद्ध्यान्प्रमुदा॥ भवस्यकण्ठ्यꣳ रुद्द्रस्यान्तःपाश्र्व्व्यम्महादेवस्ययकृच्छ-
र्व्वस्यव्वनिष्ठुः पशुपतेःपुरीतत्॥ ३॥ लोमब्भ्यःस्वाहालोमब्भ्यः स्वाहात्वचे-
स्वाहात्वचेस्वाहालोहितायस्वाहालोहितायस्वाहामेदोब्भ्यःस्वाहामेदोब्भ्यः-
स्वाहा॥ माꣳसेब्भ्यः स्वाहामाꣳसेब्भ्यःस्वाहास्नावब्भ्यःस्वाहास्नाव-
ब्भ्यःस्वाहास्त्थब्भ्यः स्वाहास्त्थब्भ्यः स्वाहामज्जब्भ्यःस्वाहामज्जब्भ्यः-
स्वाहा॥ रेतसेस्वाहापायवेस्वाहा॥४॥

उग्र देवताको रुधिरसे, मित्र देवताको शुभ कर्मोंके अनुष्ठानसे, रुद्र देवताको अशोभन कर्मोंसे, इन्द्र देवताको प्रकृष्ट क्रीडाओंसे, मरुत् देवताओंको बलसे, साध्य देवताओंको हर्षसे, भव देवताको कण्ठभागसे, रुद्र देवताको पसलियोंके अन्तर्भागसे, महादेवको यकृत्से, शर्व देवताको बड़ी आँतसे और पशुपति देवताको पुरीतत् (हृदयाच्छादक भागविशेष)-से संतुष्ट करता हूँ॥ ३॥ समष्टि लोमोंके लिये यह श्रेष्ठ आहुति देता हूँ; व्यष्टि लोमोंके लिये यह श्रेष्ठ आहुति देता हूँ; समष्टि त्वचाके लिये; व्यष्टि त्वचाके लिये, समष्टि रुधिरके लिये; व्यष्टि रुधिरके लिये, समष्टि मेदाके लिये; व्यष्टि मेदाके लिये, समष्टि मांसके लिये; व्यष्टि मांसके लिये, समष्टि नसोंके लिये; व्यष्टि नसोंके लिये, समष्टि अस्थियोंके लिये; व्यष्टि अस्थियोंके लिये, समष्टि मज्जाके लिये; व्यष्टि मज्जाके लिये, वीर्यके लिये और पायु इन्द्रियके लिये मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ॥ ४॥

हवन करता हूँ अर्थात् अपनेको (आत्मतत्त्वको) परमात्माके लिये समर्पित करता हूँ। 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये'—इस भावनासे यहाँपर विविध अङ्गोंके समर्पणमें स्थूलरूपसे नहीं, अपितु अपना सर्वस्व तथा स्वयं अपनेको भी पूर्ण समर्पित करने तथा पूर्ण आत्मशरणागतिका भाव अभिव्यक्त हुआ है।

आ॒या॒साय॒स्वाहा॑प्प्राया॒साय॒स्वाहा॑सं॒य्या॒साय॒स्वाहा॑व्विया॒साय॒स्वाहो॑-द्या॒साय॒स्वाहा॑॥ शु॒चेस्वाहा॒शोच॑ते॒स्वाहा॒शोच॑माना॒य॒स्वाहा॒शोका॑य॒-स्वाहा॑॥५॥ तप॑से॒स्वाहा॒तप्प्य॑ते॒स्वाहा॒तप्प्य॑माना॒य॒स्वाहा॑त॒प्ता॒य॒स्वाहा॑-घ॒र्म्मा॑य॒स्वाहा॑॥ निष्कृ॑त्यै॒स्वाहा॒प्प्राय॑श्चित्त्यै॒स्वाहा॑भेष॒जाय॒स्वाहा ॥६॥ य॒माय॒स्वाहाऽन्त॑काय॒स्वाहा॑मृ॒त्यवे॒स्वाहा॑॥ ब्ब्रह्म॑णे॒स्वाहा॑ब्ब्रह्मह॒त्यायै॒-स्वाहा॒व्विश्श्वे॑भ्यो दे॒वेभ्य॒ः स्वाहा॒द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒ᳪ᳭स्वाहा ॥७॥

॥ इति रुद्रपाठे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७॥

आयास देवताके लिये, प्रायास देवताके लिये, संयास देवताके लिये, वियास देवताके लिये और उद्यास देवताके लिये, शुचिके लिये, शोचत्के लिये, शोचमानके लिये और शोकके लिये मैं यह श्रेष्ठ आहुति प्रदान करता हूँ॥ ५॥ तपके लिये, तपकर्ताके लिये, तप्यमानके लिये, तप्तके लिये, घर्मके लिये, निष्कृतिके लिये, प्रायश्चित्तिके लिये और औषधके लिये मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ॥ ६॥ यमके लिये, अन्तकके लिये, मृत्युके लिये, ब्रह्माके लिये, ब्रह्महत्याके लिये, विश्वेदेवोंके लिये, द्युलोकके लिये तथा पृथ्वीलोकके लिये मैं यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित करता हूँ॥ ७॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का सातवाँ अध्याय पूर्ण हुआ॥ ७॥

अष्टमोऽध्यायः

हरिः ॐ व्वाजश्च्चमेप्प्रसवश्च्चमेप्प्रयतिश्च्चमेप्प्रसितिश्च्चमेधीति-श्च्चमेक्क्रतुश्च्चमेस्वरश्च्चमेश्श्लोकश्च्चमेश्श्रवश्च्चमेश्श्रुतिश्च्चमेज्ज्योतिश्च्चमेस्वश्च्चमेय्यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१॥ प्प्राणश्च्चमेऽपानश्च्चमेव्व्यान-श्च्चमेऽसुश्च्चमेचित्तञ्चमऽआधीतञ्चमेव्वाक्चमेमनश्च्चमेचक्षुश्च्चमे-श्श्रोत्रञ्चमेदक्षश्च्चमेबलञ्चमेय्यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२॥ ओजश्च्चमेसहश्च्च-मऽआत्माचमेतनूश्च्चमेशर्म्मचमेव्वर्म्मचमेऽङ्गानिचमेऽस्थीनिचमेपरूꣳषि-चमेशरीराणिचमऽआयुश्च्चमेजराचमेय्यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥३॥

नाम अमित कुमार द्विवेदी

दिनांक २८/११/२०१२

आठवाँ अध्याय

अन्न, अन्नदानकी अनुज्ञा, शुद्धि, अन्न-भक्षणकी उत्कण्ठा, ध्यान, श्रेष्ठ सङ्कल्प, सुन्दर शब्द, स्तुति-सामर्थ्य, वेदमन्त्र अथवा श्रवणशक्ति, ब्राह्मण, प्रकाश और स्वर्ग—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ १ ॥

प्राणवायु, अपानवायु, सारे शरीरमें विचरण करनेवाला व्यानवायु, मनुष्योंको प्रवृत्त करनेवाला वायु, मानससङ्कल्प, बाह्यविषयसम्बन्धी ज्ञान, वाणी, शुद्ध मन, पवित्र दृष्टि, सुननेकी सामर्थ्य, ज्ञानेन्द्रियोंका कौशल तथा कर्मेन्द्रियोंमें बल—ये सब मेरे द्वारा किये गये यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ २ ॥

बलका कारणभूत ओज, देहबल, आत्मज्ञान, सुन्दर शरीर, सुख, कवच, हृष्ट-पुष्ट अङ्ग, सुदृढ़ हड्डियाँ, सुदृढ़ अँगुलियाँ, नीरोग शरीर, जीवन और वृद्धावस्थापर्यन्त आयु—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ ३ ॥

ज्यैष्ठ्यञ्चमऽआधिपत्त्यञ्चमेमन्न्युश्च्चमेभामश्च्चमेऽमश्च्चमेऽम्भश्च्च-मेजेमाचमेमहिमाचमेव्वरिमाचमेप्प्रथिमाचमेव्वर्षिमाचमेद्द्राघिमाचमेव्वृद्धञ्चमे-व्वृद्धिश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥४॥ (न०)[१]॥ सत्त्यञ्चमेश्श्रद्धाचमेजग-च्चमेधनञ्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्च्चमेक्क्रीडाचमेमोदश्च्चमेजातञ्चमेजनि-ष्ष्यमाणञ्चमेसूक्क्तञ्चमेसुकृतञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥५॥ ऋतञ्चमेऽमृतञ्च-मेऽयक्ष्मञ्चमेऽनामयच्चमेजीवातुश्च्चमेदीर्घायुत्त्वञ्चमेऽनमित्त्रञ्चमेऽभयञ्च-मेसुखञ्चमेशयनञ्चमेसूषाश्च्चमेसुदिनञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥६॥

१-प्रस्तुत प्रकरणमें लिखा गया 'न०' पाँचवें अध्यायके पहले मन्त्र 'नमस्ते०' का पहला अक्षर है, यह अक्षर इस बातका बोधक है कि यहाँपर नमकाध्याय (नमस्ते रुद्र०से प्रारम्भ कर जम्भे दध्मः तक ६६ मन्त्र)-की आवृत्ति होती है। आगे भी आठवें अध्यायमें जहाँ-जहाँ 'न०' अक्षर लिखा गया है, वहाँ यही बात समझनी चाहिये।

प्रशंस्तता, प्रभुता, दोषोंपर कोप, अपराधपर क्रोध, अपरिमेयता, शीतल-मधुर जल, जीतनेकी शक्ति, प्रतिष्ठा, संतानकी वृद्धि, गृह-क्षेत्र आदिका विस्तार, दीर्घ जीवन, अविच्छिन्न वंशपरम्परा, धन-धान्यकी वृद्धि और विद्या आदि गुणोंका उत्कर्ष—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ ४॥

यथार्थ भाषण, परलोकपर विश्वास, गो आदि पशु, सुवर्ण आदि धन, स्थावर पदार्थ, कीर्ति, क्रीडा, क्रीडादर्शन-जनित आनन्द, पुत्रसे उत्पन्न संतान, होनेवाली संतान, शुभदायक ऋचाओंका समूह और ऋचाओंके पाठसे शुभ फल—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ ५॥

यज्ञ आदि कर्म और उनका स्वर्ग आदि फल, धातुक्षय आदि रोगोंका अभाव तथा सामान्य व्याधियोंका न रहना, आयु बढ़ानेवाले साधन, दीर्घायु, शत्रुओंका अभाव, निर्भयता, सुख, सुसज्जित शय्या, संध्या-वन्दनसे युक्त प्रभात और यज्ञ-दान-अध्ययन आदिसे युक्त दिन—ये सब मेरे द्वारा किये

गये [illegible] के रूपमें मु[illegible]

यन्ताचमेधर्त्ताचमेक्षेमश्च्चमेधृतिश्च्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्च्चमे-
संव्विच्चमेज्ञात्रञ्चमेसूश्च्चमेप्रसूश्च्चमेसीरञ्चमेलयश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥७॥
शञ्चमेमयश्च्चमेप्प्रियञ्चमेऽनुकामश्च्चमेकामश्च्चमेसौमनसश्च्चमेभ-
गश्च्चमेद्द्रविणञ्चमेभद्द्रञ्चमेश्श्रेयश्च्चमेव्वसीयश्च्चमेयशश्च्चमेयज्ञेन-
कल्प्पन्ताम्॥८॥ (न०)॥ ऊर्क्कच्चमेसूनृताचमेपयश्च्चमेरसश्च्चमेघृतञ्च-
मेमधुचमेसग्ग्धिश्च्चमेसपीतिश्च्चमेकृषिश्च्चमेव्वृष्टिश्च्चमे-
जैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥९॥ रयिश्च्चमेरायश्च्चमेपुष्ट-
ञ्चमेपुष्टिश्च्चमेव्विभुचमेप्प्रभुचमेपूर्ण्णञ्चमेपूर्ण्णतरञ्चमेकुयवञ्चमेऽक्षित-
ञ्चमेऽन्नञ्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१०॥

अश्व आदिका नियन्तृत्व और प्रजापालनकी क्षमता, वर्तमान धनकी रक्षणशक्ति, आपत्तिमें चित्तकी स्थिरता, सबकी अनुकूलता, पूजा-सत्कार, वेदशास्त्र आदिका ज्ञान, विज्ञान-सामर्थ्य, पुत्र आदिको प्रेरित करनेकी क्षमता, पुत्रोत्पत्ति आदिके लिये सामर्थ्य, हल आदिके द्वारा कृषिसे अन्न-उत्पादन और कृषिमें अनावृष्टि आदि विघ्नोंका विनाश—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ७ ॥ इस लोकका सुख, परलोकका सुख, प्रीति-उत्पादक वस्तु, सहज यत्नसाध्य पदार्थ, विषयभोगजनित सुख, मनको स्वस्थ करनेवाले बन्धु-बान्धव, सौभाग्य, धन, इस लोकका और परलोकका कल्याण, धनसे भरा निवासयोग्य गृह तथा यश—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ८ ॥ अन्न, सत्य और प्रिय वाणी, दूध, दूधका सार, घी, शहद, बान्धवोंके साथ खान-पान, धान्यकी सिद्धि, अन्न उत्पन्न होनेके अनुकूल वर्षा, विजयकी शक्ति तथा आम आदि वृक्षोंकी उत्पत्ति—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ ९ ॥ सुवर्ण, मौक्तिक आदि मणियाँ, धनकी प्रचुरता, शरीरकी पुष्टि, व्यापकताकी शक्ति, ऐश्वर्य, धन-पुत्र आदिकी बहुलता, हाथी-घोड़ा आदिकी अधिकता, कुत्सित धान्य, अक्षय अन्न, भात आदि सिद्धान्न तथा भोजन पचानेकी शक्ति—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १० ॥

व्वित्तञ्चमेव्वेद्यञ्चमेभूतञ्चमेभविष्यच्चमेसुगञ्चमेसुपत्थ्यञ्चमऽऋद्धञ्चमऽ ऋद्धिश्च्चमेक्लृप्तञ्चमेक्लृप्तिश्च्चमेमतिश्च्चमेसुमतिश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥११॥ व्रीहयश्च्चमेयवाश्च्चमेमाषाश्च्चमेतिलाश्च्चमेमुद्गाश्च्चमे-खल्ल्वाश्च्चमेप्रियङ्गवश्च्चमेऽणवश्च्चमेश्यामाकाश्च्चमेनीवाराश्च्चमे-गोधूमाश्च्चमेमसूराश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१२॥ (न०)॥ अश्म्माचमे-मृत्तिकाचमेगिरयश्च्चमेपर्व्वताश्च्चमेसिकताश्च्चमेव्वनस्प्पतयश्च्च-मेहिरण्ण्यञ्चमेऽयश्च्चमेश्यामञ्चमेलोहञ्चमेसीसञ्चमेत्रपुचमेयज्ञेन-कल्प्पन्ताम्॥१३॥

पूर्वप्राप्त धन, प्राप्त होनेवाला धन, पूर्वप्राप्त क्षेत्र आदि, भविष्यमें प्राप्त होनेवाले क्षेत्र आदि, सुगम्य देश, परम पथ्य पदार्थ, समृद्ध यज्ञ-फल, यज्ञ आदिकी समृद्धि, कार्यसाधक अपरिमित धन, कार्यसाधनकी शक्ति, पदार्थ-मात्रका निश्चय तथा दुर्घट कार्योंका निर्णय करनेकी बुद्धि—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ ११ ॥

उत्कृष्ट कोटिके धान, यव, उड़द, तिल, मूँग, चना, प्रियङ्गु, चीनक धान्य, सावाँ, नीवार, गेहूँ और मसूर—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ १२ ॥

सुन्दर पाषाण और श्रेष्ठ मृत्तिका, गोवर्धन आदि छोटे पर्वत, हिमालय आदि विशाल पर्वत, रेतीली भूमि, वनस्पतियाँ, सुवर्ण, लोहा, ताँबा, काँसा, सीसा तथा राँगा—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ १३ ॥

अ॒ग्निश्च्च॑मु॒ऽआप॑श्च्च मे॒व्वी॒रु॒धश्च्च म॒ऽओष॑धयश्च्च मेकृ॒ष्ट॒प॒च्च्या॒श्च्च॑मेऽकृ॒ष्ट॒प॒च्च्याश्च्च॑मेग्ग्रा॒म्म्याश्च्च॑मेप॒शव॑ऽआर॒ण्ण्याश्च्च॑मेव्वि॒त्त-ञ्च॑मे॒व्विति॒श्च्च मेभू॒तञ्च॑मे॒भूति॒श्च्च मेय॒ज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ १४॥ व्वसु॑चमेव्वस॒ति-श्च्च॑मे॒कर्म्म॑चमे॒शक्ति॒श्च्च॒मेऽर्थ॑श्च्चम॒ऽएम॑श्च्चमऽइ॒त्त्या च॑मे॒गति॒श्च्चमे-य॒ज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ १५॥ (न०)॥ अ॒ग्निश्च्च॑मु॒ऽइन्द्र॑श्च्चमे॒सोम॑श्च्चम॒ऽ-इन्द्र॑श्च्चमेसवि॒ताच॑म॒ऽइन्द्र॑श्च्चमे॒सर॑स्वतीचम॒ऽइन्द्र॑श्च्चमेपू॒षाच॑म॒ऽइन्द्र॑-श्च्चमे॒बृह॒स्पति॒श्च्चम॒ऽइन्द्र॑श्च्चमेय॒ज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ १६॥ मि॒त्रश्च्च॑म॒ऽइन्द्र॑-श्च्चमे॒व्वरु॑णश्च्चम॒ऽइन्द्र॑श्च्चमेधा॒ताच॑म॒ऽइन्द्र॑श्च्चमे॒त्त्वष्ट्टा॑चम॒ऽ इन्द्र॑श्च्चमेम॒-रुत॑श्च्च॒म॒ऽइन्द्र॑श्च्चमे॒व्विश्श्वे॑चमेदे॒वाऽइन्द्र॑श्च्चमेय॒ज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥ १७॥

पृथ्वीपर अग्निकी तथा अन्तरिक्षमें जलकी अनुकूलता, छोटे-छोटे तृण, पकते ही सूखनेवाली औषधियाँ, जोतने-बोनेसे उत्पन्न होनेवाले तथा बिना जोते-बोये स्वयं उत्पन्न होनेवाले अन्न, गाय-भैंस आदि ग्राम्य पशु तथा हाथी-सिंह आदि जंगली पशु, पूर्वलब्ध तथा भविष्यमें प्राप्त होनेवाला धन, पुत्र आदि तथा ऐश्वर्य—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ १४॥ गो आदि धन, रहनेके लिये सुन्दर घर, अग्निहोत्र आदि कर्म तथा उनके अनुष्ठानकी सामर्थ्य, इच्छित पदार्थ, प्राप्तियोग्य पदार्थ, इष्टप्राप्तिका उपाय एवं इष्टप्राप्ति—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ १५॥ अग्नि और इन्द्र, सोम तथा इन्द्र, सविता और इन्द्र, सरस्वती तथा इन्द्र, पूषा तथा इन्द्र, बृहस्पति और इन्द्र—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ १६॥ मित्रदेव एवं इन्द्र, वरुण तथा इन्द्र, धाता और इन्द्र, त्वष्टा तथा इन्द्र, मरुद्गण और इन्द्र, विश्वेदेव और इन्द्र—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ १७॥

पृथिवीचमऽइन्द्रश्च्चमेऽन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्च्चमेद्यौश्च्चमऽ इन्द्रश्च्च-मेसमाश्च्चमऽ इन्द्रश्च्चमेनक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्च्चमेदिशश्च्चमऽइन्द्रश्च्च-मेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१८॥(न०)॥ अꣳशुश्च्चमेरश्मिश्च्चमेऽ दाब्भ्य-श्च्चमेऽधिपतिश्च्चमऽउपाꣳशुश्च्चमेऽन्तर्य्यामश्च्चमऽऐन्द्रवायव-श्च्चमेमैत्रावरुणश्च्चमऽआश्विनश्च्चमेप्प्रतिप्रस्थानश्च्चमेशुक्क-श्च्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१९॥ आग्ग्रयणश्च्चमेव्वैश्श्वदेव-श्च्चमेद्ध्रुवश्च्चमेवैश्श्वानरश्च्चमऽऐन्द्राग्गनश्च्चमेमहावैश्श्वदेवश्च्च-मेमरुत्त्वतीयाश्च्चमेनिष्क्कैवल्ल्यश्च्चमेसावित्रश्च्चमेसारस्वतश्च्च-मेपात्क्नीवतश्च्चमेहारियोजनश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२०॥

पृथ्वी और इन्द्र, अन्तरिक्ष एवं इन्द्र, स्वर्ग तथा इन्द्र, वर्षकी अधिष्ठात्री देवता तथा इन्द्र, नक्षत्र और इन्द्र, दिशाएँ एवं इन्द्र—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १८ ॥

अंशु, रश्मि, अदाभ्य, निग्राह्य, उपांशु, अन्तर्याम, ऐन्द्रवायव, मैत्रावरुण, आश्विन, प्रतिप्रस्थान, शुक्र और मन्थी—ये सभी ग्रह मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ १९ ॥

आग्रयण, वैश्वदेव, ध्रुव, वैश्वानर, ऐन्द्राग्न, महावैश्वदेव, मरुत्वतीय, निष्केवल्य, सावित्र, सारस्वत, पात्नीवत एवं हारियोजन—ये यज्ञग्रह मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों ॥ २० ॥

स्त्रुचश्श्च्चमेचमुसाश्श्च्चमेव्वायुव्व्यानिचमेद्द्रोणकलुशश्श्च्चमेग्ग्रावाण-श्श्च्चमेऽधिषवणेचमेपूतभृच्चमऽआधवुनीयश्श्च्चमेव्वेदिश्श्च्चमेबुर्हिश्श्च्चमेऽवभृथश्श्च्चमेस्वगाकारश्श्च्चमेयुज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२१॥ (न०)॥ अुग्ग्नि-श्श्च्चमेघुर्म्मश्श्च्चमेऽर्क्कश्श्च्चमेसूर्य्यश्श्च्चमेप्प्राणश्श्च्चमेऽश्श्वमेधश्श्च्च-मेपृथिवीचमेऽदितिश्श्च्चमेदितिश्श्च्चमेद्द्यौश्श्च्चमेऽङ्गुलयुः शक्क्वरयो-दिशश्श्च्चमेयुज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२२॥ व्व्रतञ्च्चमऽऋृतवश्श्च्चमेतपश्श्च्चमे-संव्वत्सुरश्श्च्चमेऽहोरात्रेऽऊर्व्वष्ठीवेबृहद्रथन्तुरेचमेयुज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२३॥ (न०)॥

स्रुक्, चमस, वायव्य, द्रोणकलश, ग्रावा, काष्ठफलक, पूतभृत्, आधवनीय, वेदी, कुशा, अवभृथ और शम्युवाक—ये सब यज्ञपात्र मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ २१ ॥

अग्निष्टोम, प्रवर्ग्य, पुरोडाश, सूर्यसम्बन्धी चरु, प्राण, अश्वमेधयज्ञ, पृथ्वी, अदिति, दिति, द्युलोक, विराट् पुरुषके अवयव, सब प्रकारकी शक्तियाँ और पूर्व आदि दिशाएँ—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ २२ ॥

व्रत, वसन्त आदि ऋतुएँ, कृच्छ्र-चान्द्रायण आदि तप, प्रभव आदि संवत्सर, दिन-रात, जंघा तथा जानु—ये शरीरावयव और बृहद् तथा रथन्तर साम—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ २३ ॥

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽएकादश च मऽएकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मऽएकविꣳशतिश्च मऽएकविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मऽएकत्रिꣳशच्च मऽएकत्रिꣳशच्च मे त्रयस्त्रिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२४॥ (न०)॥

एक और तीन, तीन तथा पाँच, पाँच और सात, सात तथा नौ, नौ और ग्यारह, ग्यारह और तेरह, तेरह और पंद्रह, पंद्रह तथा सत्रह, सत्रह तथा उन्नीस, उन्नीस और इक्कीस, इक्कीस तथा तेईस, तेईस और पच्चीस, पच्चीस तथा सत्ताईस, सत्ताईस तथा उनतीस, उनतीस और इकतीस, इकतीस तथा तैंतीस—इन सब संख्याओंसे कहे जानेवाले सकल श्रेष्ठ पदार्थ मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ २४॥

चतस्त्रश्च्चमेऽष्टौचमेऽष्टौचमेद्वादशचमेद्वादशचमेषोडशचमेषोडशचमे-
विꣳशतिश्च्चमेविꣳशतिश्च्चमेचतुर्विꣳशतिश्च्चमेचतुर्विꣳशतिश्च्चमेऽष्टा-
विꣳशतिश्च्चमेऽष्टाविꣳशतिश्च्चमेद्वात्रिꣳशच्चमेद्वात्रिꣳशच्चमेषट्त्रिꣳ-
शच्चमेषट्त्रिꣳशच्चमेचत्त्वारिꣳशच्चमेचत्त्वारिꣳशच्चमेचतुश्च्चत्वारिꣳ-
शच्चमेचतुश्चत्त्वारिꣳशच्चमेऽष्टाचत्त्वारिꣳशच्चमेयज्ञेनकल्प्प-
न्ताम्॥२५॥(न०)॥ त्र्यविश्च्चमेत्र्यवीचमेदित्त्यवाट्चमेदित्त्यौहीचमे-
पञ्चाविश्च्चमेपञ्चावीचमेत्रिवत्त्सश्च्चमेत्रिवत्त्साचमेतुर्य्यवाट्चमेतुर्य्यौही-
चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२६॥

चार तथा आठ, आठ और बारह, बारह तथा सोलह, सोलह और बीस, बीस और चौबीस, चौबीस तथा अट्ठाईस, अट्ठाईस और बत्तीस, बत्तीस तथा छत्तीस, छत्तीस और चालीस, चालीस तथा चौवालीस, चौवालीस तथा अड़तालीस—इन सब संख्याओंसे कहे जानेवाले सकल श्रेष्ठ पदार्थ मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ २५॥

डेढ़ वर्षका बछड़ा, डेढ़ वर्षकी बछिया, दो वर्षका बछड़ा, दो वर्षकी ही बछिया, ढाई वर्षका बैल, ढाई वर्षकी गाय, तीन वर्षका बैल तथा तीन वर्षकी गाय, साढ़े तीन वर्षका बैल और साढ़े तीन वर्षकी गाय—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ २६॥

पुष्ठुवाट्चमेपष्ठौहीचमऽउक्षाचमेव्वशाचमऽऋषभश्च्चमेव्वेहच्चमेऽन-ड्वाँश्च्चमेधेनुश्च्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्॥ २७॥ (न०)॥ व्वाजायस्वाहाप्प्रस-वायस्वाहाऽपिजायस्वाहाक्क्रतवेस्वाहाव्वसवेस्वाहाऽहर्प्पतयेस्वाहाह्नेमुग्धाय-स्वाहामुग्धायव्वैनꣳशिनायस्वाहाव्विनꣳशिनऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्याय-भौवनायस्वाहाभुवनस्यपतयेस्वाहाधिपतयेस्वाहाप्प्रजापतयेस्वाहा॥ इयन्तेराण्मित्राययन्तासियमनऽऊर्ज्जेत्त्वाव्वृष्ट्यैत्त्वाप्प्रजानांत्त्वाधि-पत्त्याय॥ २८॥

चार वर्षका बैल, चार वर्षकी गाय, सेचनमें समर्थ वृषभ, वन्ध्या गाय, तरुण वृषभ, गर्भघातिनी गाय, भार वहन करनेमें समर्थ बैल तथा नवप्रसूता गाय—ये सब मेरे द्वारा किये गये इस यज्ञके फलके रूपमें मुझे प्राप्त हों॥ २७॥
प्रचुर अन्नकी उत्पत्ति करनेवाले अन्नरूप चैत्रमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, वैशाखमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, जल-क्रीड़ामें सुखदायक ज्येष्ठमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, यागरूप आषाढ़मासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, चातुर्मास्यमें यात्राका निषेध करनेवाले श्रावणमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, दिनके स्वामी सूर्यरूप भाद्रपदमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, तुषार आदिसे मोहकारक दिवसवाले आश्विन (क्वार)-मासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, स्नान आदिसे प्राणियोंका पाप नाश करनेके कारण मोहनिवर्तक तथा दिनमानके थोड़ा घटनेसे विनाशशील कार्तिकमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, सम्पूर्ण सृष्टिके विनाशके बाद भी विद्यमान रहनेवाले अविनाशी विष्णुरूप मार्गशीर्ष (अगहन)-मासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, अन्तमें स्थित रहनेवाले तथा प्राणियोंके पोषक पौषमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है, सम्पूर्ण लोकोंके पालकरूप माघमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है और सभी प्राणियोंके लिये सर्वाधिक पालक फाल्गुनमासके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है। बारहों मासोंके अधिष्ठातृदेव प्रजापतिके लिये यह श्रेष्ठ आहुति दी जाती है। हे प्रजापतिस्वरूप अग्निदेव! यह यज्ञस्थान आपका राज्य है, अग्निष्टोम आदि कर्मोंमें सबके नियन्ता आप मित्ररूप इस यजमानके प्रेरक हैं। अधिक अन्न आदिकी प्राप्तिके लिये मैं आपका अभिषेक करता हूँ, वर्षाके लिये मैं आपका अभिषेक करता हूँ और प्रजाओंपर प्रभुता-प्राप्तिके लिये मैं आपका अभिषेक करता हूँ॥ २८॥

आयुर्य्यज्ञेनकल्प्पतांप्प्राणोयज्ञेनकल्प्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेनकल्प्पताᳬ श्रोत्रं-यज्ञेनकल्प्पतांव्वाग्ग्यज्ञेनकल्प्पताम्मनोयज्ञेनकल्प्पतामात्मायज्ञेनकल्प्पतां-ब्रह्मायज्ञेनकल्प्पताञ्ज्योतिर्य्यज्ञेनकल्प्पताᳬ स्वर्य्यज्ञेनकल्प्पतांपृष्ठंय्यज्ञेन-कल्प्पतांयज्ञोयज्ञेनकल्प्पताम्॥ स्तोमश्च्चयजुश्च्चऽऋक्च्चसामचबृहच्च-रथन्तरञ्च॥ स्वर्द्देवाऽअगन्मामृताऽअभूमप्प्रजापतेःप्प्रजाऽअभूमव्वेट्-स्वाहा॥२९॥

॥ इति रुद्रपाठे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

176
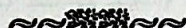
यज्ञके फलसे मेरी आयुमें वृद्धि हो, यज्ञके फलस्वरूप मेरे प्राण बलिष्ठ हों, यज्ञके फलस्वरूप नेत्रोंकी ज्योति बढ़े, यज्ञके फलसे श्रवणशक्ति उत्कृष्टताको प्राप्त हो, यज्ञके फलसे वाणीमें श्रेष्ठता रहे, यज्ञके फलस्वरूप मन सदा स्वच्छ रहे, यज्ञके फलस्वरूप आत्मा बलवान् हो, यज्ञके फलस्वरूप सभी वेद मेरे ऊपर प्रसन्न रहें, इस यज्ञके फलस्वरूप मुझे परमात्माकी दिव्य ज्योति प्राप्त हो, यज्ञके फलस्वरूप स्वर्गकी प्राप्ति हो, यज्ञके फलस्वरूप संसारका सर्वश्रेष्ठ सुख प्राप्त हो, यज्ञके फलस्वरूप महायज्ञ करनेकी सामर्थ्य प्राप्त हो, त्रिवृत्पञ्चदश आदि स्तोम, यजुर्मन्त्र, ऋचाएँ, सामकी गीतियाँ, बृहत्साम और रथन्तर साम—ये सब यज्ञके फलसे मेरे ऊपर अनुग्रह करें, मैं यज्ञके फलसे देवत्वको प्राप्तकर स्वर्ग जाऊँ तथा अमर हो जाऊँ, यज्ञके प्रसादसे हम हिरण्यगर्भ प्रजापतिकी प्रियतम प्रजा हों। समस्त देवताओंके निमित्त यह वसोर्धारा हवन सम्पन्न हुआ; ये सभी आहुतियाँ उन्हें भलीभाँति समर्पित हैं॥ २९॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का आठवाँ अध्याय पूर्ण हुआ॥ ८॥
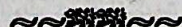
शान्त्यध्यायः

हरिः ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुः प्प्रपद्येसामप्प्राणम्प्रपद्ये-चक्षुःश्श्रोत्रम्प्रपद्ये॥ व्वागोजः सहौजोमयिप्प्राणापानौ॥१॥ यन्मेछिद्र-ञ्चक्षुषोहृदयस्यमनसोव्वातितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मेतद्दधातु॥ शन्नोभवतु-भुवनस्ययस्पतिः॥२॥ भूर्भुवःस्वः। तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य-धीमहि॥ धियोयोनःप्प्रचोदयात्॥३॥ कयानश्चित्रऽआभुवदूती-सदावृधःसखा॥ कयाशचिष्ठयाव्वृता॥४॥

शान्त्यध्याय

मैं ऋचारूप वाणीकी शरण लेता हूँ, मैं यजुःस्वरूप मनकी शरण लेता हूँ, मैं प्राणरूप सामकी शरण लेता हूँ और मैं चक्षु-इन्द्रिय तथा श्रोत्र-इन्द्रियकी शरण लेता हूँ। वाक्-शक्ति, शारीरिक बल और प्राण-अपानवायु—ये सब मुझमें स्थिर हों॥ १॥ मेरे नेत्र तथा हृदयकी जो न्यूनता है और मनकी जो व्याकुलता है, उसे देवगुरु बृहस्पति दूर करें अर्थात् यज्ञ करते समय मेरे नेत्र, हृदय तथा मनसे जो त्रुटि हो गयी है, उसे वे क्षमा करें। सम्पूर्ण भुवनके जो अधिपतिरूप भगवान् यज्ञपुरुष हैं, वे हमारे लिये कल्याणकारी हों॥ २॥ उन प्रकाशात्मक जगत्स्रष्टा सवितादेवके भूर्लोक, भुवर्लोक तथा स्वर्लोकमें व्याप्त रहनेवाले परब्रह्मात्मक सर्वोत्तम तेजका हम ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियोंको सत्कर्मोंके अनुष्ठानहेतु प्रेरित करें॥ ३॥ सदा सबको समृद्ध करनेवाला आश्चर्यरूप परमेश्वर किस तर्पण या प्रीतिसे तथा किस वर्तमान याग-क्रियासे हमारा सहायक होता है अर्थात् हम कौन-सी उत्तम क्रिया करें और कौन-सा शोभन कर्म करें, जिससे परमात्मा हमारे सहायक हों और अपनी पालनशक्तिद्वारा हमारे वृद्धिकारी सखा हों॥ ४॥

कस्त्वासुत्योमदानाम्मꣳहिष्ठोमत्सदन्धसः॥ दृढाचिदारुजेव्वसु॥५॥ अभीषुणꣳसखीनामविताजरितॄणाम्॥ शतम्भवास्यूतिभिः॥६॥ कयात्वन्न-ऽऊत्याभिप्रमन्दसेव्वृषन्॥ कयास्तोतृब्भ्यऽआभर॥७॥ इन्द्रोव्विश्श्वस्य-राजति॥ शन्नोऽअस्तुद्द्विपदेशञ्चतुष्प्पदे॥८॥ शन्नोमित्रः शंव्वरुणꣳ शन्नोभवत्वर्य्यमा॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पतिꣳशन्नोव्विष्णुरुरुक्क्रमः॥९॥ शन्नोव्वातःपवताᳬशन्नस्तपतुसूर्य्यः॥ शन्नꣳकनिक्क्रदद्देवःपर्ज्जन्न्योऽ-अभिवर्षतु॥१०॥

हे परमेश्वर! मदजनक हवियोंमें श्रेष्ठ सोमरूप अन्नका कौन–सा अंश आपको सर्वाधिक तृप्त करता है? आपकी इस प्रसन्नतामें दृढ़तासे रहनेवाले हम भक्तजन अपने धन आदिके साथ उसे आपको समर्पित करते हैं॥ ५॥ हे परमेश्वर! आप मित्रोंके तथा स्तुति करनेवाले हम ऋत्विजोंके पालक हैं और हम भक्तोंकी रक्षाके लिये भलीभाँति अभिमुख होकर आप अनन्त रूप धारण करते हैं॥ ६॥ हे इन्द्र! आप किस तृप्ति अथवा हविदानसे हमें प्रसन्न करते हैं? और किस दिव्यरूपको धारण कर स्तुति करनेवाले हम उपासकोंकी सारी अभिलाषाओंको पूरा करते हैं?॥ ७॥ सबके स्वामी परमेश्वर चारों तरफ प्रकाशमान हैं। वे हमारे पुत्र आदिके लिये कल्याणरूप हों, वे हमारे गौ आदि पशुओंके लिये सुखदायक हों॥ ८॥ मित्रदेवता हमारे लिये कल्याणमय हों, वरुणदेवता हमारे लिये कल्याणकारी हों, अर्यमा हमारे लिये कल्याणप्रद हों, इन्द्रदेवता हमारे लिये कल्याणमय हों, बृहस्पति हमारे लिये कल्याणकारी हों तथा विस्तीर्ण पादन्यासवाले विष्णु हमारे लिये कल्याणमय हों॥ ९॥ वायुदेव हमारे लिये सुखकारी होकर बहें, सूर्यदेव हमारे निमित्त सुखरूप होकर तपें और पर्जन्यदेवता शब्द करते हुए हमारे निमित्त सुखदायक वर्षा करें॥ १०॥

अहानिशम्भवन्तुनः शꣳ रात्रीः प्रतिधीयताम्॥ शन्नऽइन्द्राग्नीभवता-
मवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्व्या॥ शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौ-
शमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः॥११॥ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु-
पीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥१२॥ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥
यच्छानःशर्म्मसप्रथाः॥१३॥ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥
महेरणायचक्षसे॥१४॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिव-
मातरः॥१५॥

दिन हमारे लिये सुखकारी हों, रात्रियाँ हमारे लिये सुखरूप हों, इन्द्र और अग्निदेवता हमारी रक्षा करते हुए सुखरूप हों, हविसे तृप्त इन्द्र और वरुणदेवता हमारे लिये कल्याणकारी हों, अन्नकी उत्पत्ति करनेवाले इन्द्र और पूषादेवता हमारे लिये सुखकारी हों एवं इन्द्र और सोमदेवता श्रेष्ठ गमन अथवा श्रेष्ठ उत्पत्तिके निमित्त और रोगोंका नाश करनेके लिये तथा भय दूर करनेके लिये हमारे लिये कल्याणकारी हों॥ ११॥ दीप्तिमान् जल हमारे अभीष्ट स्नानके लिये सुखकर हो, पीनेके लिये स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्यकर हो, यह जल हमारे रोग तथा भयको दूर करनेके लिये निरन्तर प्रवाहित होता रहे॥ १२॥ हे पृथिवि! निष्कण्टक सुखमें स्थित रहनेवाली तथा अति विस्तारयुक्त आप हमारे लिये सुखकारी बनें और हमें शरण प्रदान करें॥ १३॥ हे जलदेवता! आप जल देनेवाले हैं और सुखकी भावना करनेवाले व्यक्तिके लिये स्नान-पान आदिके द्वारा सुखके उत्पादक हैं। हमारे रमणीय दर्शन और रसानुभवके निमित्त यहाँ स्थापित हो जाइये॥ १४॥ हे जलदेवता! आपका जो शान्तरूप सुखका एकमात्र कारण रस इस लोकमें स्थित है। हमको उस रसका भागी उसी तरहसे बनायें जैसे प्रीतियुक्त माता अपने बच्चेको दूध पिलाती है॥ १५॥

तस्म्मा॒ऽअरं॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑य॒जिन्व॑थ॥ आपो॑ज॒नय॑थाचनः ॥१६॥

द्यौः॒शान्ति॑र॒न्तरि॑क्ष॒ꣳ शान्तिः॑पृथि॒वीशान्ति॒रापः॒शान्ति॒रोष॑धयः॒शान्तिः॑॥ व्वन॒स्प्पत॑यः॒शान्ति॒र्व्विश्श्वे॑दे॒वाःशान्ति॒र्ब्ब्रह्म॒शान्तिः॒सर्व्व॒ꣳ शान्तिः॒शान्ति॑रे॒वशान्तिः॒सामा॒शान्ति॑रेधि॥१७॥ दृते॒दृꣳह॑मामि॒त्रस्य॑मा॒चक्षु॑षा॒सर्व्वा॑णि॒भूता॑नि॒सम॑क्षन्ताम्॥ मि॒त्रस्या॒हञ्चक्षु॑षा॒सर्व्वा॑णिभूता॒नि॒सम॑क्षे॥ मि॒त्रस्य॒चक्षु॑षा॒सम॑क्षामहे॥१८॥ दृते॒दृꣳह॑मा। ज्ज्योक्त्तेसं॒दृशि॑जीव्व्यासं॒ज्ज्योक्त्तेसं॒दृशि॑जीव्व्यासम्॥१९॥नम॑स्ते॒हर॑सेशो॒चिषे॒नम॑स्तेऽअस्त्व॒र्च्चिषे॑॥ अ॒न्न्याँस्तेऽअ॒स्म्मत्त॑पन्तुहे॒तयः॑ पाव॒कोऽअ॒स्म्मब्भ्य॒ꣳ शि॒वोभ॑व॥२०॥

हे जलदेवता! आपके उस रसकी प्राप्तिके लिये हम शीघ्र चलना चाहते हैं, जिसके द्वारा आप सारे जगत्‌को तृप्त करते हैं, और हमें भी उत्पन्न करते हैं॥ १६॥ द्युलोकरूप शान्ति, अन्तरिक्षरूप शान्ति, भूलोकरूप शान्ति, जलरूप शान्ति, ओषधिरूप शान्ति, वनस्पतिरूप शान्ति, सर्वदेवरूप शान्ति, ब्रह्मरूप शान्ति, सर्वजगत्-रूप शान्ति और संसारमें स्वभावतः जो शान्ति रहती है, वह शान्ति मुझे परमात्माकी कृपासे प्राप्त हो॥ १७॥ हे महावीर परमेश्वर! आप मुझको दृढ़ कीजिये, सभी प्राणी मुझे मित्रकी दृष्टिसे देखें, मैं भी सभी प्राणियोंको मित्रकी दृष्टिसे देखूँ और हमलोग परस्पर द्रोहभावसे सर्वथा रहित होकर सभीको मित्रकी दृष्टिसे देखें॥ १८॥ हे भगवन्! आप मुझे सब प्रकारसे दृढ़ बनायें। आपके संदर्शनमें अर्थात् आपकी कृपादृष्टिसे मैं दीर्घकालतक जीवित रहूँ ॥ १९॥ हे अग्निदेव ! सब रसोंको आकर्षित करनेवाली आपकी तेजस्विनी ज्वालाको नमस्कार है, आपके पदार्थ-प्रकाशक तेजको नमस्कार है। आपकी ज्वालाएँ हमें छोड़कर दूसरोंके लिये तापदायक हों और आप हमारा चित्त-शोधन करते हुए हमारे लिये कल्याणकारक हों॥ २०॥

नमस्तेऽअस्तुविद्युतेनमस्तेस्तनयित्लवे॥ नमस्तेभगवन्नस्तुयतः स्वः समीहसे॥२१॥ यतोयतः समीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरुप्प्रजाब्भ्योऽभयन्नः पशुब्भ्यः ॥२२॥ सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्म्मैसन्तुयोऽस्म्मान्द्द्वेष्टियञ्चव्वयन्द्विष्म्मः॥२३॥ तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत्॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतꣳ शृणुयामशरदः शतंप्रब्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात्॥२४॥

॥ इति रुद्रपाठे शान्त्यध्यायः ॥

200
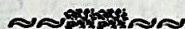
विद्युत्‌रूप आपके लिये नमस्कार है, गर्जनारूप आपके लिये नमस्कार है, आप सभी प्राणियोंको स्वर्गका सुख देनेकी चेष्टा करते हैं, इसलिये आपके लिये नमस्कार है ॥ २१ ॥ हे परमेश्वर! आप जिस रूपसे हमारे कल्याणकी चेष्टा करते हैं उसी रूपसे हमें भयरहित कीजिये, हमारी संतानोंका कल्याण कीजिये और हमारे पशुओंको भी भयमुक्त कीजिये ॥ २२ ॥ जल और ओषधियाँ हमारे लिये कल्याणकारी हों और हमारे उस शत्रुके लिये वे अमङ्गलकारी हों, जो हमारे प्रति द्वेषभाव रखता है अथवा हम जिसके प्रति द्वेषभाव रखते हैं ॥ २३ ॥ देवताओंद्वारा प्रतिष्ठित, जगत्‌के नेत्रस्वरूप तथा दिव्य तेजोमय जो भगवान् आदित्य पूर्व दिशामें उदित होते हैं उनकी कृपासे हम सौ वर्षोंतक देखें अर्थात् सौ वर्षोंतक हमारी नेत्रज्योति बनी रहे, सौ वर्षोंतक सुखपूर्वक जीवन–यापन करें, सौ वर्षोंतक सुनें अर्थात् सौ वर्षोंतक श्रवणशक्तिसे सम्पन्न रहें, सौ वर्षोंतक अस्खलित वाणीसे युक्त रहें, सौ वर्षोंतक दैन्यभावसे रहित रहें अर्थात् किसीके समक्ष दीनता प्रकट न करें। सौ वर्षोंसे ऊपर भी बहुत कालतक हम देखें, जीयें, सुनें, बोलें और अदीन रहें ॥ २४ ॥

॥ इस प्रकार रुद्रपाठ (रुद्राष्टाध्यायी)-का शान्त्यध्याय पूर्ण हुआ ॥

स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः

हरिः ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनःपूषाविश्श्ववेदाः ।। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु ।। १ ।। ॐ पयः पृथिव्व्याम्पयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः ।। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ।। २ ।। ॐ विष्ष्णोरराटमसिविष्ष्णोः श्नप्त्रेस्त्थोविष्ष्णोः स्यूरसिविष्ष्णोर्ध्ध्रुवोऽसि ।। वैष्ष्णवमसिविष्ष्णवेत्त्वा ।। ३ ।।

स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय

महती कीर्तिवाले ऐश्वर्यशाली इन्द्र हमारा कल्याण करें, सर्वज्ञ तथा सबके पोषणकर्ता पूषादेव (सूर्य) हमारे लिये मङ्गलका विधान करें। चक्रधाराके समान जिनकी गतिको कोई रोक नहीं सकता, वे तार्क्ष्यदेव हमारा कल्याण करें और वेदवाणीके स्वामी बृहस्पति हमारे लिये कल्याणका विधान करें॥ १॥ हे अग्निदेव! आप हमारे लिये पृथ्वीपर रस धारण कीजिये, ओषधियोंमें रस डालिये, स्वर्गलोक तथा अन्तरिक्षमें रस स्थापित कीजिये, आहुति देनेसे सारी दिशाएँ और विदिशाएँ मेरे लिये रससे परिपूर्ण हो जायँ॥ २॥ हे दर्भमालाधार वंश! तुम यज्ञरूप विष्णुके ललाटस्थानीय हो। हे ललाटके प्रान्तद्वय! तुम दोनों यज्ञरूप विष्णुके ओष्ठसन्धिरूप हो। हे बृहत्-सूची! तुम यज्ञीय मण्डपकी सूची हो। हे ग्रन्थि! तुम यज्ञीय विष्णुरूप मण्डपकी मजबूत गाँठ हो। हे हविर्धान! तुम विष्णुसम्बन्धी हो, इस कारण विष्णुकी प्रीतिके लिये तुम्हारा स्पर्श करता हूँ। दोनों हविर्धानों (शकटों)-को दक्षिणोत्तर स्थापित करके उनके ढक्कनोंका मण्डप बनाये। हविर्धान-मण्डपके पूर्वद्वारवर्ती स्तम्भके मध्यमें कुशोंकी माला गूँथे॥ ३॥

ॐ अग्निर्द्देवताव्वातोदेवतासूर्य्योदेवताचन्द्रमादेवताव्वसवोदेवतारुद्रा-
देवताऽऽदित्त्यादेवतामरुतोदेवताव्विश्श्वेदेवादेवताबृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रो-
देवताव्वरुणोदेवता ॥४॥ ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो
नमः॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥५॥ वामदेवाय
नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय
नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय
नमो मनोन्मनाय नमः॥६॥ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥७॥

अग्निदेवता, वायुदेवता, सूर्यदेवता, चन्द्रदेवता, वसुदेवता, रुद्रदेवता, आदित्यदेवता, मरुत्-देवता, विश्वेदेवदेवता, बृहस्पतिदेवता, इन्द्रदेवता और वरुणदेवताका स्मरण करके मैं इस इष्टकाको स्थापित करता हूँ ॥ ४ ॥ मैं **सद्योजात** नामक परमेश्वरकी शरण लेता हूँ। पश्चिमाभिमुख भगवान् सद्योजातके लिये प्रणाम है। हे रुद्रदेव! अनेक बार जन्म लेनेहेतु मुझे प्रेरित मत कीजिये, किंतु जन्मसे दूर करनेके निमित्त मुझे तत्त्वज्ञानके लिये प्रेरणा प्रदान कीजिये। संसारके उद्धारकर्ता सद्योजातके लिये नमस्कार है ॥ ५ ॥ उत्तराभिमुख **वामदेव**के लिये नमस्कार है। उन्हींके विग्रहस्वरूप ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, रुद्र, काल, कलविकरण, बलविकरण, बल, बलप्रमथन, सर्वभूतदमन तथा मनोन्मन—इन महादेवकी पीठाधिष्ठित शक्तियोंके स्वामियोंको नमस्कार है ॥ ६ ॥ दक्षिणाभिमुख सत्त्वगुणयुक्त **अघोर** नामक रुद्रदेवके लिये प्रणाम है। इसी प्रकार राजसगुणयुक्त 'घोर' तथा तामसगुणयुक्त 'घोरतर' नामक रुद्रके लिये प्रणाम है। हे शर्व! आपके

पुरुषाय विद्महे म[illegible]य धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥८॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपति-
र्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम्॥९॥ ॐ शिवोनामासिस्वधिति-
स्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननाय-
रायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय॥१०॥ ॐ विश्श्वानिदेवसवित-
र्दुरितानिपरासुव॥ यद्भद्रन्तन्नऽआसुव॥११॥

हमलोग उस पूर्वाभिमुख **तत्पुरुष** महादेवको गुरु तथा शास्त्रमुखसे जानते हैं; ऐसा जानकर हम उन महादेवका ध्यान करते हैं, इसलिये वे रुद्र हमको ज्ञान-ध्यानके लिये प्रेरित करें॥ ८॥ उन ऊर्ध्वमुखी भगवान् **ईशान**के लिये प्रणाम है जो वेदशास्त्रादि विद्या और चौंसठ कलाओंके नियामक, समस्त प्राणियोंके स्वामी, वेदके अधिपति एवं हिरण्यगर्भके स्वामी हैं। वे साक्षात् ब्रह्मस्वरूप परमात्मा शिव हमारे लिये कल्याणकारी हों (अथवा उनकी कृपासे मैं भी सदाशिवस्वरूप हो जाऊँ)॥ ९॥ हे क्षुर! आपका नाम 'शान्त' है। आपके पिता वज्र हैं। मैं आपके लिये नमस्कार करता हूँ। आप मुझे किसी प्रकारकी क्षति मत पहुँचाइये। हे यजमान! आपके बहुत दिनोंतक जीवित रहनेके लिये, अन्न-भक्षण करनेके लिये, संततिके लिये, द्रव्यवृद्धिके लिये तथा उत्तम अपत्य उत्पन्न होनेके लिये और उत्तम सामर्थ्यकी प्राप्तिके लिये मैं आपका वपन (मुण्डन) करता हूँ॥ १०॥ हे सूर्यदेव! आप मेरे सभी पापोंको दूर कीजिये और जो कुछ भी मेरे लिये कल्याणकारी हो, उसे मुझे प्राप्त कराइये॥ ११॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥१२॥ ॐ सर्वेषां वा एष वेदानाꣳ रसो यत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदानाꣳ रसेनाभिषिञ्चति॥१३॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥

॥ इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः॥

॥ इति रुद्राष्टाध्यायी समाप्ता ॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥

अनेन कृतेन श्रीरुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः प्रीयताम्, न मम।

ॐ श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु।

द्युलोकरूप शान्ति, अन्तरिक्षरूप शान्ति, भूलोकरूप शान्ति, जलरूप शान्ति, ओषधिरूप शान्ति, वनस्पतिरूप शान्ति, सर्वदेवरूप शान्ति, ब्रह्मरूप शान्ति, सर्वजगत्-रूप शान्ति और संसारमें स्वभावतः जो शान्ति रहती है, वह शान्ति मुझे परमात्माकी कृपासे प्राप्त हो ॥ १२ ॥ सभी वेदोंका तत्त्वस्वरूप रस, जो सामवेद अथवा भगवान् साम (भगवान् विष्णु या कृष्ण—'वेदानां सामवेदोऽस्मि') हैं, वे अपने उसी सामरससे समस्त वेदोंका अभिसिञ्चन करते हैं ॥ १३ ॥

॥ इस प्रकार स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय पूर्ण हुआ ॥

॥ इस प्रकार रुद्राष्टाध्यायी सम्पूर्ण हुई ॥
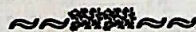
उत्तर-षडङ्गन्यास

रुद्राभिषेकके अनन्तर पृ०-सं० ६७के अनुसार निम्न रीतिसे पुनः षडङ्गन्यास करे—

१-'**ॐ मनोजूति०**' यह मन्त्र पढ़कर '**ॐ हृदयाय नमः**' कहते हुए हृदयका स्पर्श करे।

२-'**ॐ अबोध्यग्नि०**' यह मन्त्र पढ़कर '**ॐ शिरसे स्वाहा**' कहते हुए मस्तकका स्पर्श करे।

३-'**ॐ मूर्द्धानं०**' यह मन्त्र पढ़कर '**ॐ शिखायै वषट्**' कहते हुए शिखाका स्पर्श करे।

४-'**ॐ मर्माणि०**' यह मन्त्र पढ़कर '**ॐ कवचाय हुम्**' कहते हुए दोनों कन्धोंका स्पर्श करे।

५-'**ॐ विश्वत०**' यह मन्त्र पढ़कर '**ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्**' कहते हुए दोनों नेत्र तथा ललाटके मध्यभागका स्पर्श करे।

६-'**ॐ मानस्तोके०**' यह मन्त्र पढ़कर '**ॐ अस्त्राय फट्**' कहते हुए बायें हाथकी हथेलीपर ताली बजाये।

इस प्रकार षडङ्गन्यास तथा '**ध्यायेन्नित्यं महेशं०**' से ध्यान करके उत्तरपूजन करना चाहिये।

उत्तरपूजन*

यदि मन्दिर इत्यादिमें प्रतिष्ठित मूर्ति हो तो उत्तरपूजनके अन्तर्गत स्नान कराकर पुष्पादिसे शृंगार करे और उत्तरपूजन करके आरती करे। संक्षेपमें निम्न रीतिसे उत्तरपूजन करे—

* जो लोग अति संक्षेपमें पूजन करना चाहें, वे '**ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पबिल्वपत्राणि समर्पयामि**' बोलकर गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा बिल्वपत्र भगवान् शिवको अर्पित करें। यथासम्भव नैवेद्य भी अर्पित करें।

पाद्य—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

अर्घ्य—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (अर्घ्यजल चढ़ाये।)

आचमन—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनीय जल चढ़ाये।)

स्नान— नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। (स्नानीय जल चढ़ाये।)

वस्त्र-यज्ञोपवीत-उपवस्त्र—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं यज्ञोपवीतञ्च समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं तथा च उपवस्त्रं समर्पयामि, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (वस्त्र, आचमनीय जल, यज्ञोपवीत, आचमनीय जल, उपवस्त्र तथा आचमनीय जल चढ़ाये।)

गन्धानुलेपन— गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धानुलेपनं समर्पयामि। (गन्ध चढ़ाये।)

अक्षत—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, अलङ्करणार्थें अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ाये।)

पुष्प-पुष्पमाला— माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पपुष्पमालां समर्पयामि। (पुष्प तथा पुष्पमाला चढ़ाये।)

बिल्वपत्र— त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बिल्वपत्र समर्पित करे।)

दूर्वाङ्कुर—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर अर्पित करे।)

भगवान्‌के आगे नैवेद्य स्थापित कर धूप-दीप अर्पित करे।

धूप—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप आघ्रापित करे।)

दीप—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखाये, हाथ धो ले।)

नैवेद्य— नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि, नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदित करे तथा आचमनके लिये जल दे।)

ताम्बूल—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मुखशुद्ध्यर्थं एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (पूगीफल, ताम्बूल अर्पित करे।)

द्रव्यदक्षिणा—भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा चढ़ाये, तदनन्तर आरती करे।)

आरती— ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायिं धामभिः।
दिवः सदाꣳ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥
ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥
ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो
देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा
देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, कर्पूरनीराजनदीपं दर्शयामि। (कर्पूरसे आरती करे और आरतीके बाद जल गिराये। फूल चढ़ाये, फिर दोनों हाथोंसे आरती लेकर हाथ धो ले। तदनन्तर आरती-स्तुति करे।)

भगवान् महादेवजीकी आरती*

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा॥ १॥ ॐ हर हर महादेव॥
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै। हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै॥ २॥ ॐ हर हर०॥
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै। तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै॥ ३॥ ॐ हर हर०॥
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी। त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी॥ ४॥ ॐ हर हर०॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे। सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे॥ ५॥ ॐ हर हर०॥
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी। सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी॥ ६॥ ॐ हर हर०॥

* यहाँ दो आरती-स्तुति दी गयी हैं, अपनी भावनाके अनुसार कोई भी कर सकते हैं।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। प्रणवाक्षरमें शोभित ये तीनों एका ॥ ७ ॥ ॐ हर हर० ॥
त्रिगुणस्वामिकी आरति जो कोइ नर गावै। भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित पावै ॥ ८ ॥ ॐ हर हर० ॥

भगवान् गङ्गाधरकी आरती

ॐ जय गङ्गाधर जयहर जय गिरिजाधीशा। त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा ॥ १ ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने। गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने ॥
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता। रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता ॥ २ ॥ ॐ हर हर हर० ॥
तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता। तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता ॥
क्रीडा रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्। इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम् ॥ ३ ॥ ॐ हर हर हर० ॥
बिबुधबधू बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता। किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता ॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते। क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते ॥ ४ ॥ ॐ हर हर हर० ॥
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता। चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां ॥
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते। अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते ॥ ५ ॥ ॐ हर हर हर० ॥
कर्पूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्। त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम् ॥
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्। डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम् ॥ ६ ॥ ॐ हर हर हर० ॥

मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्। वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्॥
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम्। इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्॥ ७॥ ॐ हर हर हर०॥
शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते। नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते॥
अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा। अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा॥ ८॥ ॐ हर हर हर०॥
ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा। रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा॥
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते। शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते॥ ९॥ ॐ हर हर हर०॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलि*—हाथमें फूल लेकर प्रार्थना करे—

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥

---

* बृहत्पुष्पाञ्जलि—हाथमें फूल लेकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (फूल चढ़ाये।)

श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (मन्त्र-पुष्पाञ्जलि समर्पण करे।)

प्रदक्षिणा—(गर्भगृहके भीतर शिवजीकी आधी प्रदक्षिणा करनी चाहिये।)

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाᳶ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करे।)

प्रणाम—　नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि। (प्रणाम निवेदित करे।)

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोति यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत्॥

अनया पूजया श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम। श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु। (कहकर समस्त पूजनकर्म भगवान्‌को अर्पित कर दे।)

क्षमा-प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना एवं क्षमा-याचना करे—

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥*

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सदाशिव।
यत् पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

* मन्त्रका भाव यह है कि जिस उपायसे मेरे पुत्रादि तथा गो आदि पशुओंको कल्याणकी प्राप्ति हो और इस ग्राममें सम्पूर्ण प्राणी पुष्ट तथा उपद्रवरहित हों, इसके निमित्त हम अपनी बुद्धिको महाबली, जटाजूटधारी एवं शूरवीरोंके निवासभूत रुद्रके लिये समर्पित करते हैं।

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर॥

[यदि ब्राह्मणद्वारा अभिषेक कराया जाय तो निम्नलिखित कार्य सम्पन्न किये जायँ। अभिषेक यदि ब्राह्मणद्वारा न कराया हो तो भी आगे लिखे विसर्जन-मन्त्रसे आवाहित देवोंका विसर्जन कर देना चाहिये।]

दक्षिणादान

(क) ब्राह्मणदक्षिणाका सङ्कल्प—यदि ब्राह्मणोंद्वारा रुद्राभिषेक कराया गया हो तो अग्रलिखित सङ्कल्प कर दक्षिणा ब्राह्मणोंको दे दे। हाथमें जल, अक्षत, कुश तथा दक्षिणा-द्रव्य लेकर निम्न सङ्कल्प करे—

ॐ यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य श्रीरुद्राभिषेककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च रुद्राभिषेककर्तृकेभ्यो नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये। कहकर ब्राह्मणोंको दक्षिणा प्रदान करे। (यदि एक ही ब्राह्मणद्वारा अभिषेक हुआ हो तो **रुद्राभिषेककर्तृकाय ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय** बोलना चाहिये।)

(ख) भूयसी दक्षिणाका सङ्कल्प—हाथमें जल, अक्षत, कुश तथा दक्षिणा-द्रव्य लेकर भूयसी दक्षिणाका सङ्कल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य रुद्राभिषेककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीदक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये। कहकर उपस्थित सभी ब्राह्मणोंको यथाशक्ति भूयसी दक्षिणा प्रदान करे।

अभिषेक—आचार्य जलसे कुशों अथवा आम्रपल्लव आदिके द्वारा निम्न मन्त्रोंसे यजमान आदिका अभिषेक करे। अभिषेकके समय पत्नीको पतिके बायीं ओर बैठना चाहिये।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥

प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये॥
अमृताभिषेकोऽस्तु। शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु॥

विसर्जन—यदि विसर्जित करनेवाले पार्थिवादि लिङ्गका अभिषेक किया हो तो उत्तरपूजनके अनन्तर अक्षत छोड़ते हुए निम्न मन्त्रोंके पाठके साथ उनका विसर्जन कर दे। अन्य आवाहित गणपत्यादि देवोंका भी विसर्जन कर दे—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः॥
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥

रक्षाबन्धन—आचार्य निम्न मन्त्रोंसे यजमानको रक्षासूत्र बाँधे—

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥
येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

तिलक—आचार्य निम्न मन्त्रोंसे यजमानको तिलक करे—

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्टकामार्थसिद्धये॥

आशीर्वाद—निम्नलिखित मन्त्रोंसे ब्राह्मण आशीर्वाद प्रदान करें—

पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥
दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

॥ ॐ तत्सत् श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु॥

॥ श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः॥

॥ रुद्राभिषेककर्म सम्पूर्ण॥

शिवमहिम्नःस्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥ १ ॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥ २ ॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता॥ ३ ॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद, रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥ ४॥

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः॥ ५॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे॥ ६॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥ ७ ॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥ ८ ॥

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥ ९ ॥

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।

ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११ ॥
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥ १४॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः॥ १५॥
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥ १६॥
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।

जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥ १७॥
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥ १८॥
हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥ १९॥
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥ २०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥ २१॥
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥ २२॥
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥ २३॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः।

अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ २४ ॥
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् ॥ २५ ॥
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वं शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥ २७ ॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते॥ २८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥ २९॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥ ३०॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।

इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥ ३१॥
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥ ३२॥
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥ ३३॥
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च॥ ३४॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥ ३५॥
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ ३६॥
कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः॥ ३७॥
सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥ ३८॥
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्॥ ३९॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥ ४०॥
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥ ४१॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते॥ ४२॥
श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥ ४३॥

॥ इति शिवमहिम्नःस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

ESIGNER SAREES & DRESS

T.M. NO : 884986

ANGA CREATION